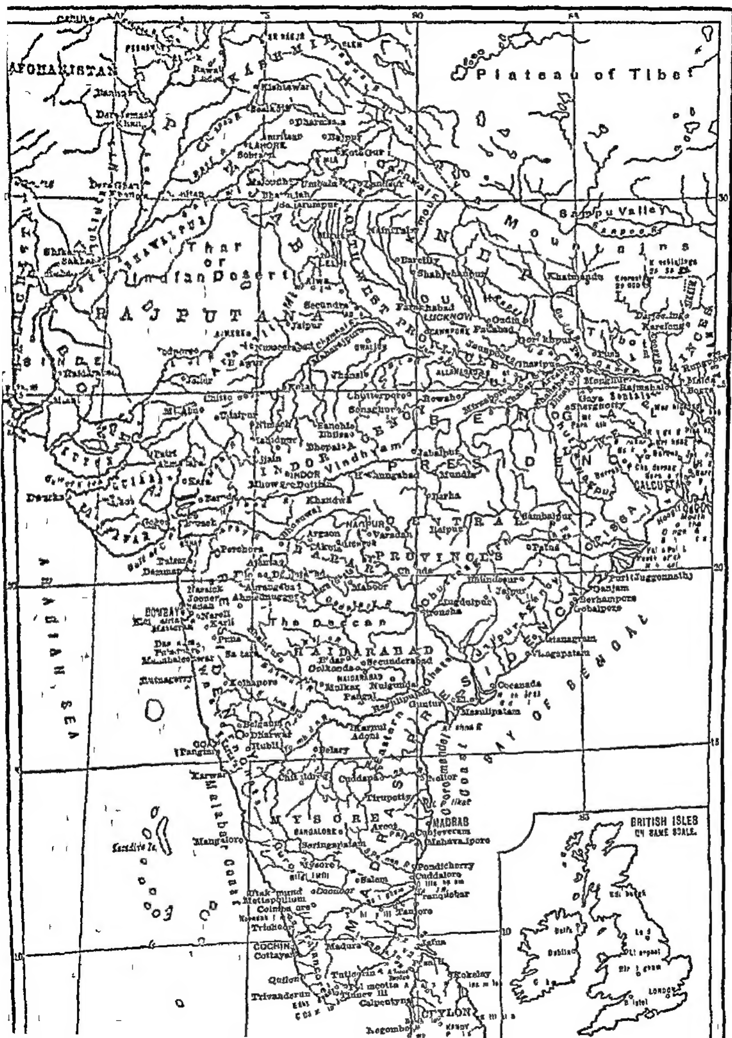

हिन्दुस्तान देश की यात्रा।

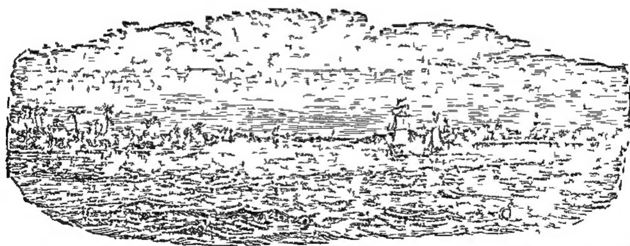

Plateau of Tibet
Sampu Valley
Mountains
Thar or Indian Desert
RAJPUTANA
LAHORE
Kishtawar
Jaipur
Secundra
LUCKNOW
Farrukhabad
Fyzabad
Khatmandu
Jhansie
Bhopal
INDORE
Jabalpur
Khandwa
Raipur
Sambalpur
CENTRAL
PROVINCES
CALCUTTA
Puri (Juggernath)
Ganjam
Berhampore
BOMBAY
Poona
The Deccan
HAIDARABAD
Secunderabad
Kolhapore
Cocanada
Masulipatam
Guntur
Adoni
GOA
Karwar
Cuddapah
Tirupatty
MYSORE
MADRAS
Conjeveram
Mangalore
Seringapatam
Pondicherry
Cuddalore
Salem
Tanjore
Madura
COCHIN
Cottayam
Quilon
Trivanderum
Jafna
CEYLON
KANDY
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
BRITISH ISLES
ON SAME SCALE.
LONDON

हिन्दुस्तान देश की यात्रा

भूमिका।

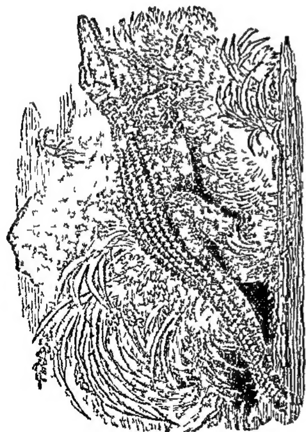
इस पुस्तक के बनाने का प्रयोजन यह है कि पढ़नेहारे अधिक अपने सुन्दर देश और उस की अच्छी २ बस्तियो को जाने। यह उचित नही है कि यात्री लोग दूर २ देशो से आकर हिन्द के बडे २ नगरो को देखे और तौभी हिन्द के वासी न जाने कि हमारे देश में कौन २ स्थान है जो देखने योग्य है। सत्य है कि सैकडो बरस से हिन्दवासियो का यह दस्तूर है कि कितने स्थानो की जिन्हे पवित्र समझते तीर्थयात्रा करते चले आये है और आज-कल रेल गाड़ियो के द्वारा से बटोही बहुत अधिक फिरा करते है तौभी अब लो बहुत है जिन्हो ने हिन्दुस्तान की सैर किई अथवा उस के बडे २ नगरो को देखा हो। करोडो ऐसे हिन्दू है जो कभी अपनी जन्मभूमि से दूर नही गये सो उन के लिये यह अच्छा होगा कि और स्थानों का वृत्तान्त पढे और सभो को यह अच्छा लगता कि बहुत और नगरो और भवनो और मंदिरो के चित्र देखे। इस पुस्तक मे मानो लिखनेहारा पढनेहारे के संग समस्त देश की यात्रा करता है और वे दोनो मानो एक संग हिन्द के नगरो को देखके मन बह-लायेगे। हा यह बात सत्य है कि यदि सब स्थानो का वर्णन किया जाता जो हिन्दुस्तान में देखने योग्य है तो यह पुस्तक बहुत बडी और बडे मोल की हो जाती सो दक्खिन और बीच के हिन्दुस्तान आदि के बहुत स्थान जहा बडे २ और प्रसिद्ध नगर कम है इस में वर्णित नहीं है।

हुगली नदी।



जब विलायती यात्री कलकत्ते के मार्ग से हिन्दुस्तान में आता है तो बडे समुद्र को छोडकर हुगली नदी के मुंहाने में आता है। जब पानी की ओर दृष्टि करता तो देखता क्या

कि पानी का रग जो समुद्र में नीला था अब
ा देख पडता है। पहिले जहाज उस प्रकाश
जहाज की ओर चलेगा जो धरती से कुछ
र अगुवाई करने के लिये है। यह कलकत्ते
एक सौ बीस मील दूर समुद्र के किनारे मे
क छोटी नौका में बंधा रहता है और उस
समीप वैही नौका फिरा करती है जिस में
से माझी रहते है जो बाट दिखानेवाले हैं
क्योंकि हुगली नदी में मार्ग पाना बहुत कठिन
; और बिना पैलट अर्थात पत्यदर्शक कलकत्ते
पहुंचना कठिन है। ज्यों २ बटोही धरती
समीप आता त्यों २ देखता कि पानी बहुत
न्दला अर्थात मिट्टी से मिला हुआ है क्योंकि
दी सदा भूमि को काटती और उस की मिट्टी
ो समुद्र में ले जाया करती है। ज्ञानवानों



बाघ।

ने सोचा है कि यदि गङ्गा में १५०० ऐसे जहाज
से लो मिट्टी को लाद लादके उसे प्रतिदिन

मे जायेगी जैसा अब नदी के काटने से जाती है। यो प्रगट है कि धरती बराबर और भी दक्खिन दिशा को बढती जाती है और सत्य है कि पूर्वकाल मे जहाज कलकत्ते से बीस कोस और भी उत्तर को ओर जहां अब जा नही सकते जाया करते थे। पहिली जमीन जिसे बटोही देखेगा सो सागरटापू है और यह उस देश का भाग है जिस को लोग सुन्दरबन कहते है। परन्तु वह भाग जो पहिले दिखाता है कुछ भी सुन्दर नहीं है। वहां काली २ नदियां बहा करतीं जिन के बीच मे जंगल और दलदल भरे हुए है। इन वनों मे बाघ बहुत फिरा करते और बेचारे मनुष्यों को घेरा करते हैं। इस स्थान के समीप गाव नहीं मिलते परन्तु कङ्गाल लकडी काटनेहारे वहा लकडी को बटोरा करते हैं। साल में एक बार वहां गङ्गासागर नाम एक बडा मेला होता है क्योंकि लोगो मे कहानी यह है कि जब सगर नाम महाराजा के ६0000 पुत्र कपिल ऋषि के स्राप से नाश किये गये तब उन्हे तारने के लिये गङ्गा स्वर्ग से उतरकर इस स्थान में आई। पूर्वकाल में यह डरावनी रीति प्रचलित थी कि हिन्दू स्त्रिया अपने बालको को गङ्गातट पर छोड देती थीं जिस्ते मगरमच्छ उन को खाया करे परन्तु आजकल सरकार ने इस बुरी रीति को बर्जित किया है।

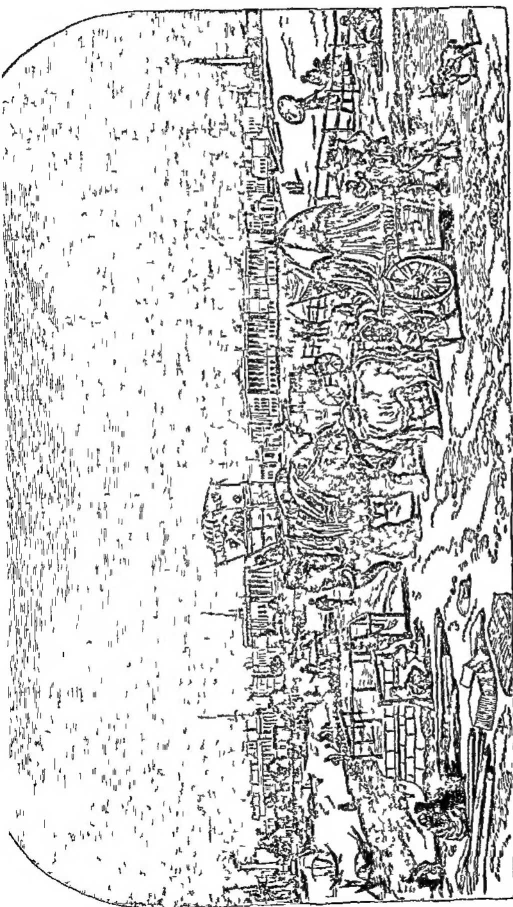
इस स्थान में हुगली नदी ऐसी चौडी है कि उस के दोनो तट बटोही को एक सग दिखाई नहीं देते परन्तु आगे बढके उस की चौडाई कम होती गई है। पहिला गृह जो देखने मे आता सो वह दीपस्तम है जो सागर टापू पर जहाजो को प्रकाश देता है। डैमण्ड हारबर अर्थात हीराबन्दर जहाजों के लिये

के मार्ग से एकतिस मील और नदी के मार्ग से ४० मील दूर है । आगे बढके थोडी दूर पर एक डरावना स्थान मिलता है जो जेम्स-एन्ड मेरी नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि दो नदियों से अर्थात दामोदर और नारायण के हुगली मे वहां मिल जाने से पानी ऐसा उथला हो गया है और ऐसा डरावना बालू का ढेव बन गया है जो जहाजवालो के लिये बडे जोखिम का स्थान है क्योंकि धारा वहा इतने जोर से बहती है कि यदि जहाज कुछ भी बालू को छूके रुक जाये तो धारा उसे झट उलटा कर देती और बालू में धसा देती है । ऐसा हुआ है कि आध घटे के बीच मे बडे २ जहाज बालू मे धंसके गुप्त हो गये है । जब बटोही वहा से आगे बढ़ता तो हुगली नदी में अगणित नाव और नाना प्रकार के जहाज देखता है । कोई पाल के सहारे से चलते और कोई अग्निबोट होकर भाफ के सहारे से जाते है । फिर भूसे लकड़ी आदि से लदी हुई बहुत सी देशी नौका रहती है और ज्यो हम कलकत्ते के समीप पहुचते त्यो बहुत सी नौका मिलती जिन मे ईंटे भरी हुई है । ज्यों २ हम आगे बढते त्यो २ जमीन और भी मन-भावन होती जाती है। बहुत से गांव दिखाई देते जिन के समीप धान के खेत और फल के बगीचे दिखाई देते है । बास और ताड के पेड हर कहीं दिखाई देते है परन्तु विशेषकर जब बटोही कलकत्ते में पहुचता तो मन बहुत मगन होता है। इधर तो अनेक जहाज पांति की पांति नदी में बधे हुए पडे है और उन के साम्हने धरती में अच्छी २ हवेलिया बनी है और रग बिरग से चमकती है और मैदान के बीच में गढ की पक्की २ भीतें दिखाई देतीं और उन के पीछे बडे २ भवन और मकान और गिरजाघर और मंदिर दिखाई देते है यहा लो कि बटोही बेबस हो अवश्य कहता कि अहा हा यह सचमुच भवनो की बस्ती है ।

कलकत्ता का वर्णन ।

कलकत्ता जो समस्त हिन्दुस्तान का मुख्य नगर है हुगली नदी के पूरबी तट पर और समुद्र से ४० कोस दूर पर है । उस का प्राचीन नाम कालीघाट है जो उस मंदिर के नाम से है जो काली के नाम पर उस नगर के दक्खिन भाग मे बना है । सन १६८६ ईसवी मे चार्नक साहिब और कितने और अगरेजी व्योपारी हुगली नदी को जो कलकत्ते से २३ मील उत्तर ओर है छोडके सुतनती नाम एक स्थान में आ बसे जो अब कलकत्ते में एक भाग है । बढते २ उन्हो ने कालीकट गोविन्दपुर आदि स्थानो को बसाया । सन १६९६ में उन्हो ने एक गढ बनाया वह विलियम नाम से जो उन दिनो में अंगरेजों का बादशाह था कह-लाया । चार बरस पीछे उन्हो ने रुपये देके आजिम राजकुमार से जो औरगजेब बादशाह का बेटा था इन तीन गावो को मोल लिया । सन १७०७ लो कलकत्ता मन्द्राज के अधिकार में रहा परन्तु उस समय से अलग हुआ । सन १७४२ में वहा के निवासी मरहठा लोगों की चढाई से जो हर कहीं लूटमार करते रहे बहुत भय खाते थे सो अपने बचाव के लिये उन्हो ने बडी नहर खोदी जो आज लो मरहठो के गडहे नाम से प्रसिद्ध है । सन १७५६ में सिराजुद्दौला ने जो बगाल का नवाब था कलकत्ते पर चढाई करके उसे अपने वश में कर लिया ।

यह समय है जो इस बात मे स्मरण किया कि १४६ कैदी एक कोठरी मे रात भर बन्द किये गये जिन मे से सवेरे को २३ आदमी जीते निकले। एक साल पीछे क्लाइव साहिब ने नगर को फिर अपने वश मे कर लिया और प्लासी के मैदान मे एक बड़ी लड़ाई हुई जिस के कारण से बंगाल देश का अधिकार आज लों अंगरेजों के हाथ मे है। क्लाइव साहिब विलियम नाम गढ को फिर बनवाने लगा और वह सन १७७३ में समाप्त हुआ। उसी साल मे वारन हेस्टिङ्ग हिन्दुस्तान का वायसराय हुआ और कलकत्ता उस का मुख्य नगर था और उस समय से आज लों उस नगर की बड़ी उन्नति और बढती हुई है यहां लों कि जहां पहिले झोपड़ियों के भरे हुए तीन गाव थे आजकल एक बहुत बड़ा और धनवान नगर हो गया है। सन ईसवी १८८१ मे कलकत्ते मे ८,४०,१३० निवासी थे और हुगली नगर जो नदी के उस पार है १,३०,००० निवासी है और बीच मे नाव का पुल बन्धा हुआ है और



कलकत्ता।

उन लोगो को छोड जो नगर में बस्ते है बहुतेरे और भी है जो दिन को वहा आकर काम करते और फिर साझ को अपने २ गाव को चले जाते है।

कलकत्ते के समीप कितने स्थान हैं जो देखने योग्य है। दक्खिन मे गार्डन रीच नाम एक स्थान है जिस मे वह भवन बना है जिस में अवध का महाराजा बलवे के पीछे रहा करता था। उस से उत्तर ओर चलकर एक बडा मैदान हुगली नदी के तट पर है जिस में बहुत सी सडकें बनी है और बीच मे कम्पनीबाग से विभूषित है। इस मैदान मे पच्छिम ओर विलियम गढ दिखाता है। उस की पूरब ओर चौडिङ्गी सडक है जिस की हवेलिया ऊची और पक्की बनी हुई है। उस के दक्खिन ओर वह बडा गिरजा घर है जो लाट पाद्री विलसन साहिब से बनवाया गया है और एक कौतुकशाला भी है जिस मे नाना प्रकार के पशु पक्षी और नाना देशो की देखने योग्य वस्तु पाई जाती है। मैदान की उत्तर ओर वेलसली साहिब ने वह



कलकत्ते का हाईकोर्ट।

बडा गृह बनवाया जिस में लार्ड साहिब रहा करते है उस के समीप बहुत से अच्छे २ सर-कारी गृह बने हुए है जिन मे एक वह है कि जो हाईकोर्ट के लिये बना है। इस का चित्र यहां छापा जाता है। फिर मैदान की उत्तर ओर स्वाड नाम एक सडक बनी है कि जिस मे महाजनो के और व्योपारियों के लिये एक ओर बडी २ दूकाने और दूसरी ओर नौका से भार उतारने के लिये घाट बने है इस के समीप एक चौडी सडक है जिस पर डाकघर

और सरकार के बहुत बड़े २ मकान है। उत्तर और चित्पोर सड़क बहुत प्रसिद्ध है जो नगर के उस भाग में बनी है जहा देशी लोग बस्ते है और उस में रात दिन अगणित मनुष्य चला करते हैं उस के घरों मे बहुधा नीचे दूकान है और ऊपर लोग रहा करते है। उस के समीप और भी पूरब की ओर कालिज सड़क और कार्नवालिस सड़क चौडी और प्रसिद्ध है जिन मे बड़ी २ पाठशालाये और कालिज पाये जाते है और वहां एक नामी औषधालय भी पाया जाता है। कलकत्ते का दक्खिन भाग चौडिङ्गी नाम से प्रसिद्ध है। यह वह स्थान है जहां विशेषकर अगरेज लोग रहा करते हैं। वहां की सड़के चौडी और अच्छी और सीधी बनी हुई है परन्तु नगर के और स्थानो में सडकें तंग और टेढ़ी तिरछी बनी हुई है यहां लो कि लोग बताते है कि हर कहीं हवेलिया साम्हने और झोपडिया पीछे दिखाई देती है क्योंकि देशी लोग अधिक करके बस्तियो मे रहते है और सत्य पूछो तो यह झोंपडियो की बस्तियां है। सत्य है कि थोड़े ही दिनो मे नगर की बड़ी उन्नति हुई है। जहा अब वलिङ्गटन चौक है तहां एक बहुत गंदी नदी बहती थी। सन ईसवी १७८६ में बन और दलदल आदि पाये जाते थे जिन में बनपशु और डकैत फिरा करते थे कालीघाट के मंदिर के समीप जहां अब साहिबो के अच्छे २ घर बने है। उस मैदान मे जहा महामंदिर अब खड़ा है उन दिनों मे जगल था जिस में वारन हेष्टिङ्ग ने बन्दूक से बाघो को मारा। बड़े मैदान की हर साल यही दशा रहती थी कि तीन महीने लों हुगली का पानी उस पर चढ़ा रहता था। बस्तियो मे लोग मैला पानी पीके हैजा आदि रोगों से बहुत मरते थे। आजकल नगर में अच्छा पीने का जल पाया जाता है और हर साल अच्छे २ मकान बनाये जाते है।

कलकत्ते में पक्की सड़कों का बनाना कठिन है क्योंकि कही पचास कोस मे पत्थर की खान पाई नही जाती सो लोग पक्की ईंटे तोड़कर बहुधा सडके बनाते है। कई सड़को में लोहे के मार्ग बने है जिन को ट्रामवे कहते है। लोग ठीका गाड़ियो को बहुत काम में लाते है और सांझ को जब महाशय और साहिब लोग मैदान की सड़कों में हवा खाने के लिये फिरा करते हैं तो अगणित अच्छी २ गाडियां और घोड़े देखने मे आते है।

ब्योपार मे कलकत्ता बहुत प्रसिद्ध है समस्त हिन्दुस्तान के लेनदेन की एक तिहाई कलकत्ता के द्वारा से किई जाती है। वह ब्योपार जो वहां परदेशो से किया जाता है सो ५६,००,००,००० रुपिया साल का हुआ करता है।

कलकत्ता वह नगर है जिस मे पहिले अंगरेजी विद्या हिन्दुस्तान मे पढ़ाई गई बरन आजकल उस के कालिज स्कूल आदि अगणित और विख्यात है। यह बात पादरी डफ साहिब के परिश्रम से बहुत बढ़ाई गई। सरकार के भी और पादरियों के भी और देशी लोगो के भी बहुत सी पाठशालाये और कालिज है और हजारो लडके विद्या प्राप्त करने मे परिश्रम कर रहे है। यदि पूछा जाये कि इस सब पढाने का कैसा फल प्राप्त हुआ तो इस बात को कहना पडता है कि १०० बरस के यत्नो से वह लाभ न हुआ जिस को पाना चाहिये था और जो इस विद्या के प्राप्त करने से और देशो में पाया गया है। यह बड़े शोक की बात है। इस के विषय डाकटर महेन्द्रो लाल सरकार जो कलकत्ते के ज्ञानी लोगो में

प्रसिद्ध है यों कहते है कि अब सौ बरस से अंगरेजी विद्या हमारे बीच में पढाई गई है परन्तु उस का वह फल जिस का आसरा हम विशेष रीति से रखते थे सो प्राप्त न हुआ अर्थात हमारे लडकों की उन्नति और सुधराव प्राप्त न हुआ बरन मेरी समझ मे वह सिधाई और नीति जो पूर्वकाल मे हमारे लडकों को शोभा देती थी सो कुछ न कुछ बिगड गई है। आप लोगो ने देखा होगा कि आजकल हमारे भाई लोग कितनी बातो के विषय में पीछे की ओर हटते चले जाते है और इस हटाव के कारण से हमारे देश की बडी हानि हो जायेगी। यह बात विशेषकर इस मे दिखाई देती है कि जहां और लोग भूल और अधर्म्म की दशा से लज्जित होके अब प्रकाश में आने चाहते है सो हमारे भाई लोगो की यह इच्छा है कि फिर अंधियारे के समयों की ओर फिर जाये और उन में फूल जाये। पूर्वकाल के ऋषि मुनि की अज्ञानता हमारी समझ मे पूरी सत्य ठहराई जाती है और यदि कोई ज्ञान पाकर उन पुरानी बातों के अनुसार न चले तो लोग उस की निन्दा करते है। चाहे वह विद्या प्राप्त करके जान जाये कि वह प्राचीन बातें झूठी है तौभी उन्हे छोडने नहीं पाते है। परन्तु बहुत लोग यह कहेंगे कि चाहे विद्या की बातें ऋषि मुनि की बातो से विरुद्ध हो तौभी विद्या नाश होय और ऋषि मुनि की बातें स्थिर रहे।

एक बुराई कलकत्ते में यह पाई जाती है जो और स्थानो में देखने में नहीं आती अर्थात बगाली नाटकशालाओ में दस्तूर यह है कि ऐसी स्त्रिया जो प्रत्यक्ष वेश्या है सवांग दिखाती है और यो बहुत से जवान उन से मोहित होकर भ्रष्ट होते है। इस कुरीति को मिटाना उचित है। पूर्वकाल में ऐसी वेश्या लोग कालिजो के समीप आके बसती थीं परन्तु आजकल ऐसे स्थानो से दूर किई गई। बगाली लोगो में यह बात बहुत पाई जाती है कि प्राचीन रीति व्योहारों पर चाहे अच्छे चाहे बुरे हो बहुत मन लगाते और सोचते है कि यह स्वदेश की प्रीति करना है। हां ज्ञान के प्रकाश से दो एक रीति छुटाई गई जैसा कि पूर्वकाल मे कलकत्ते के हिन्दू लोग जब उन की माताये विधवा हो जाती थीं तब उन्हे चिता पर रखके जीवते ही फूक देते थे। और भी रीतें है जिन्हे योंही मिटाना लाभदायक होगा। चाहिये कि वहां के निवासी नई और पुरानी रीतो को तौले और जितनी बुरी और बिगाडनेहारी ठहरे उन को त्याग दे। एक बुरी बात यह है कि विद्या के पढाने मे धर्म्म का उपदेश और ईश्वर की प्रीति और परलोक की तैयारी बहुत कम पाई जाती है। दूसरी बात यह है कि बगाली समाचार पत्रो में बहुत निन्दा और दुरुक्ति पाई जाती है जिस से किसी का लाभ नहीं हो सकता है।

आजकल बगाल देश में कितने धर्म्मोपदेशक है जिन्हो ने अपनी अपनी समझ के अनुसार स्वदेश भाइयो के सुधारने का बहुत यत्न किया। राम मोहनराय ने सोचा कि हमारे देश की विशेष हानि मूर्त्तिपूजा से है सो उस ने अपने लोगो को इस दस्तूर से छुटाने मे बहुत परिश्रम किया बरन वह काम जिस को उस ने आरंभ किया आजकल औरो के द्वारा से किया जाता है। बाबू केशवचन्द्रसेन पहिले यह उपदेश दिया करता था कि लोग आन देवताओ को त्यागकर केवल ईश्वर ही को भजे परन्तु पीछे जब रोग के कारण से निर्बल

होने लगा तब उस को मति मे कुछ बिगाड हुई और प्रभु के और हिन्द की माता के नाम मे वह नये प्रकार का धर्म्म चलाने लगा जिस मे बहुत धर्म्मों की मिलावट पाई जाती थी। सन १८८४ मे बाबू साहिब मरे और तब से ब्रम्हेसमाज में बड़े २ झगडे उत्पन्न हुए कि जिस से वह निर्बल हो गया। उस समाज से सन १८८९ ई० मे साधारण ब्रम्हो-समाज उठा जिस के माननेहारे कहते है कि हमारा धर्म्म परमेश्वर हो का भजना है। उन का इण्डियन मेसिजर नाम एक समाचार पत्र है जो बहुत कुरीतो की निन्दा करता है। यह कहना चाहिये कि जहां लो यह दो समाजवाले परमेश्वर हो को भजते है तहा लो प्राचीन हिन्दू मत की अपेक्षा बहुत हो अच्छे ठहरते है परन्तु प्रगट है कि वह समाज अभी हिन्ददेश का धर्म्म न बन सकेगा।



काली का चित्र।

कालो घाट उस स्थान पर है जहां गङ्गा नदी प्राचीन काल में बहती थी। हिन्दुओ में कहानी यह है कि शिव काली की लोथ को हर कहो लेके फिरता था जब लों कि अन्त को विष्णु ने चक्र डालके उस लोथ को बावन टुकडो मे काट न डाला और यह टुकडे जहा कहो गिरे तहा पवित्र तीर्थस्थान बन गये। कहते है कि कालो की उगलियो मे से एक यहा गंगा किनारे गिरो और इस के कारण से यहो ३०० बरस हुए कालीघाट का प्रसिद्ध मंदिर बनाया गया। जो ब्राह्मण पहिले उस तीर्थ का महत ठहराया गया उस के वंश हलदर नाम से प्रसिद्ध है और तीर्थ का धन उन के हाथ मे जाता है। विशेष पूजा का समय दुर्गापूजा के दूसरे दिन को हुआ करता है कि जिस में अगणित यात्री वहा एकट्ठे होते है जहां कालो की डरावनो मूर्त्ति काले रंग को और भयकर सांपों से लिपटी हुई मुण्ड-माला लटकाये और लहू टपकाते हुए अपने पति पर नाच रही है। वह देवो नही बरन भूत की नाई दिखाई देती है। कहावत है कि जैसी देवो तैसा पुजेरी और हा प्रगट है कि ऐसी पूजा से कभी किसी का भला न होगा।



काली की पूजा।

कलकत्ता बंगाल देश का मुख्य नगर है

सो यहां चाहिये कि उस देश का थोड़ा सा वर्णन किया जाये।

बंगाल के चार भाग।

बंगाल के लफटिनेन्ट गवर्नर के अधिकार में उस के चार भाग अर्थात बंगाल उड़ीसा बिहार और छोटा नागपुर हैं। इन चारों में हिन्दुस्तान का वह भाग पाया जाता है जो सब से बहुत फलदायक और धनवान और बड़ा है जिस में अधिक निवासी भी पाये जाते हैं। कई एक देशी राज्यों को मिलाकर जो उस के संग है उस में दो लाख वर्गमील जमीन है जिस में ७१,००,००,००० निवासी हैं। यदि हम समस्त हिन्दुस्तान को नौ भागों में बांटें तो एक भाग इस लफटिनेन्ट गवर्नर के अधिकार में पाया जाता है।

बंगाल का वर्णन।

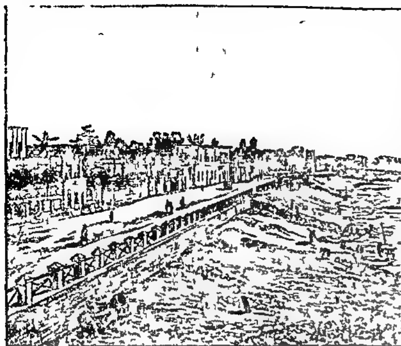
बंगाल नाम विशेष कर उस जमीन का है जो बंगाल समुद्र और हिमालय के बीच में है। यह जमीन एक बड़ा मैदान है जिस में दो भारी नदियां अर्थात गंगा और ब्रम्हपुत्र बहती हैं और यह दोनों नदियां समुद्र पास पहुंचने से पहिले बहुत सी नदियों में बांटी जाती हैं। इस मैदान में समस्त हिन्दुस्तान का आधा भाग अर्थात ७५,००० वर्ग मील भूमि है। वहां के रहनेहारे बंगाली नाम से प्रसिद्ध हैं। उन की गिन्ती ४,००,००,००० होगी। उन का भोजन विशेष कर चावल है और वहां की बड़ी धूप गिलाई के संग होती है इस कारण शरीर के वे निर्बल हैं परन्तु बहुत परिश्रमी और चौर सन्तानों से जानी है और विद्या को सहज से प्राप्त करते हैं। उन के पहिरावे में एक बात यह है कि आजकल वे नङ्गे सिर फिरा करते हैं।

बंगाली भाषा एक आर्य्य अर्थात उत्तरीय भाषा है उस में बहुत से संस्कृत शब्द मिले हुए हैं। अक्षर नागरी से निकाले गये हैं परन्तु नागरी की अपेक्षा सहज से लिखे जाते हैं।

बंगाली बचनों में ओ शब्द बहुत पाया जाता है जैसा कि मनु को मोनु कहते हैं। उन महम्मदियों में जो बंगाल में रहते हैं एक मिली हुई बोली है अर्थात उर्दू अरबी बंगाली की मिलावट जिस को मुसलमानी बंगाली कहते हैं।

बंगाल देश में विशेष पूजा काली वा दुर्गा की होती है जो समस्त हिन्दू के देवताओं में डरावनी है। वे गंगा को भी बहुत पूजते हैं और बहुत लोग चैतन्य पंडित को कृष्ण का अवतार करके मानते हैं। बंगाल में आदि निवासी हिन्दू थे।

बंगाल का इतिहास यों है कि पूर्वकाल में वह देशी राजाओं के बश में था। उन दिनों में दो भारी नगर गौड़ और नदिया थे। सन ई० १२०३ में महम्मदी लोगों ने लक्ष्मणसेन महाराजा पर विजय किया और नदिया की सन्ती में गौड़ को मुख्य नगर बनाया और उस समय से आज लों बंगाल के देशी राजा स्वाधीन न हुए। पीछे ढाका और मुरशिदाबाद मुसलमानों के मुख्य नगर हो गये। सन ई० १७६५ में शाह आलम ने बंगाल देश की दीवानी अर्थात कर उगाहने का अधिकार अंगरेजों को दिया और बंगाल का पहिला लफटिनेन्ट गवर्नर सन ई० १८५३ में स्थापन हुआ।

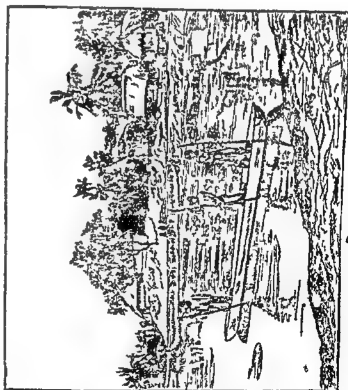


चाण्डरनगोर ।

कलकत्ता से २२ मील उत्तर की ओर हुगली नदी के तट पर चाण्डरनगोर नाम एक नगर है जिस मे फ्रान्सीसी लोग सन ई० १६७३ मे बसने लगे । अंगरेजों ने इस नगर को कई बार लड़ाई के दिन में ले लिया परन्तु पीछे उन को फिर सौंप दिया ।

पूरबी बङ्गाल ।

बंगाल का वह भाग जो कलकत्ते की पूरब ओर है सो गंगा और ब्रम्हपुत्र नदियों से जो शाखा निकली कटा हुआ है और बरसात मे जब उन का पानी चढ जाता है तब जमीन एक बडी झील के समान देख पडती है जिस मे बहुत से गाव दिखाते है । जहा जमीन मिट्टी खोदने और भर देने से ऊंची किई जाती है । इन गावो मे घर पास २ बनाये जाते है और उन के बीच मे बहुत से केले सुपारी ताड नारियल आदि पेड उगते है । बचपन से लोगो का जीवन मानो आधा स्थल में और आधा जल में बीतता जाता है और वे पेड़ के धड से ऐसी डोंगी काटके और खोलके बनाते जिस में और लोगों का खड़ा होना कठिन है पर वे सहज से उस में फिरा करते है । जब कि खेतों में पानी भरा रहता है तब लोग धान को बो देते है और बहुधा उन की अच्छी कटनी भी होती है । नदियो और नालियों में अगणित मछलियां पकडी जाती है और लोगो को बहुधा भोजन अच्छो रीति से प्राप्त होता है । जब पानी धरती के ऊपर चढ जाता है तब नावो के बिना इधर उधर जाना कठिन होता है । नाव में चढके मजूर मजूरी करने को और लडके स्कूल को जाते है । जब पानी सूखने लगता तब ऐसा समय आता जिस मे इधर उधर फिरना और भी कठिन हो जाता है क्योकि नाव के लिये पानी कम रहता है और कीचड के मारे पैदल चलना कठिन होता है ।



बङ्गाली गांव और डोंगी ।

बगाल देश मे बहुधा दस्तूर यह है कि लोग नगरो में नही बरन गांव मे बस्ते है । बडी बस्तियों बहुत कम मिलती है। पूरबी बंगाल में ढाका मुख्य नगर है । वह उस स्थान के पास

है जहां गंगा और ब्रम्हपुत्र नदियां एक दूसरे के समीप आती हैं। बारहवीं सदी में मुसलमान राजा वहां रहता था और उस के निवासी उन दिनों में बहुत हो गये थे। वह इस बात में विख्यात था कि वहां महीन २ रूई के कपडे बनते थे जो देखने में सुन्दर परन्तु पहिन्ने के योग्य न थे क्योंकि उन के पहिन्ने से देह न छिपती थी। पीछे ढाका के निवासी कम हो गये परन्तु आजकल फिर बढने लगे हैं। अब हवडा नगर को छोड वह उस देश की बडी बस्ती है।

सत्रहवीं सदी में यहां के निवासी डकैतों की चढाई से बहुत सताये जाते थे। डकैत लोग नावों और डोंगियों में सवार होके इन अगणित नदियों और नालों से उन के गांव की पास पहुंचते थे और घरों को फूंक कर लोगों को लूट मार करते अथवा दूर ले जाके दास दासी होने के लिये बेचा करते थे।

असाम देश का वर्णन।

सन १८०४ ई० में असाम बंगाल से अलग किया गया और एक कमिश्नर साहिब के अधिकार में सौंपा गया। पीछे सिलहट भी मिलाया गया। वह पूरबी बंगाल से लगा हुआ है और इस लिये उस का वर्णन यहां किया जाता है। सिलहट एक लंबा निचान है जिस में ब्रम्हपुत्र नदी बहती है। वह पुराने हिन्दू कामरूप राज्य का एक भाग है। पन्द्रहवीं सदी में महम्मदियों की क्रूर सेना ने पच्छिम से आकर उस देश को उजाड कर दिया जिस के पीछे कोच नाम एक जंगली सन्तान ने उत्तर से आकर उन पर चढाई किई जिस के पीछे अहम नाम एक सन्तान पूरब से आकर उन पर विजय पा गया। इस के पीछे ब्रम्हा देश के निवासी उन से लडने और उन का विनाश करने लगे सो उन्हों ने अंगरेजों से सहायता मांगी। इन चढाइयों और लडाइयों से यह बुरी दशा हो गई थी कि असाम की बहुत जमीन उजाड हो गई थी और बैरियों के मारे कोई उस में रहने न पाता था। पूरबी बंगाल में भी यह दुर्दशा हुई थी और कम से कम इन दो देशों में तीस हजार वर्ग मील जमीन छोडी गई थी क्योंकि कोई उसे जोत न सका। सन ई० १८२४ में असाम देश सरकार की अमलदारी में आया परन्तु कितने दिन लों सरकार को उस से कुछ भी लाभ न पहुंचा क्योंकि जितने रुपये महसूल में आते थे उस से अधिक बनपशुओं के दूर करने में व्यय किये जाते थे। असाम इतना बडा है जितना आधा बंगाल अर्थात उस में ४६,००० वर्ग मील जमीन है परन्तु उस में केवल ५५,००,००० निवासी हैं। अब लों धान वहां की विशेष वस्तु है जो वहां उत्पन्न होती है। पहिले चाह की बारी जो हिन्दुस्तान में रोपी गई सो असाम देश में लगाई गई। शिलांग उस का मुख्य नगर समझा जाता है जो काशी पहाडी में बना है। पहिले चेरापूंजी मुख्य नगर था परन्तु लोगों का वहां रहना कठिन है क्योंकि समस्त संसार में सब से भारी बरसात वहां हुआ करती है। वहां बहुधा साल भर में ४३ फुट पानी गिरता है। असामी लोगों की बोली बंगाली भाषा से बहुत मिलती है। असाम की उत्तर ओर चार पहाडी स्थान हैं जो नागा जैंतिया काशी और गारो नाम से विख्यात हैं। यह बन से ढपे हुए हैं। और इन बनों में ऐसे जंगली

सन्तान रहा करते है जो रूप रङ्ग में कुछ चीनी लोगो के समान देख पडते है। सिलहट काशी पहाडी के दक्खिन ओर है और उस मे बगाली लोग अधिक बस्ते है। वहा की नारंगिया प्रसिद्ध है। सिलहट की पूर्व ओर कछार है जिस मे बहुत चाह की बारियां पाई जाती है।

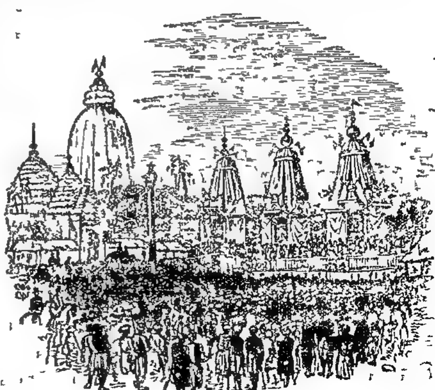
उडीसा देश।



जगन्नाथ की मूर्ति।

उडीसा देश बगाल की दक्खिन पच्छिम ओर को और समुद्र तीर लगा है। वह सुवर्णरेखा नदी से लेकर चिलका झील लो फैला हुआ है और उस में २४,००० वर्ग मील जमीन है और उस में ५०,००,००० निवासी पाये जाते है। बीच में बडे २ वन है जिन मे बनपशु फिरा करते है और पहाड़िया है जहां काश्तकारी नहीं किई जाती। कहते है कि पूर्वकाल मे यहां ओडरसतान रहा करता था जिन के नाम से यह जमीन ओड्र देश अर्थात उडीसा कहलाया। प्राचीन काल मे उस का नाम उत्कल देश प्रसिद्ध था। सन ई० १०५१ मे वह मरहठा लोगों के हाथ मे दिया गया परन्तु सन १८०३ मे अगरेजों के वश मे आया।

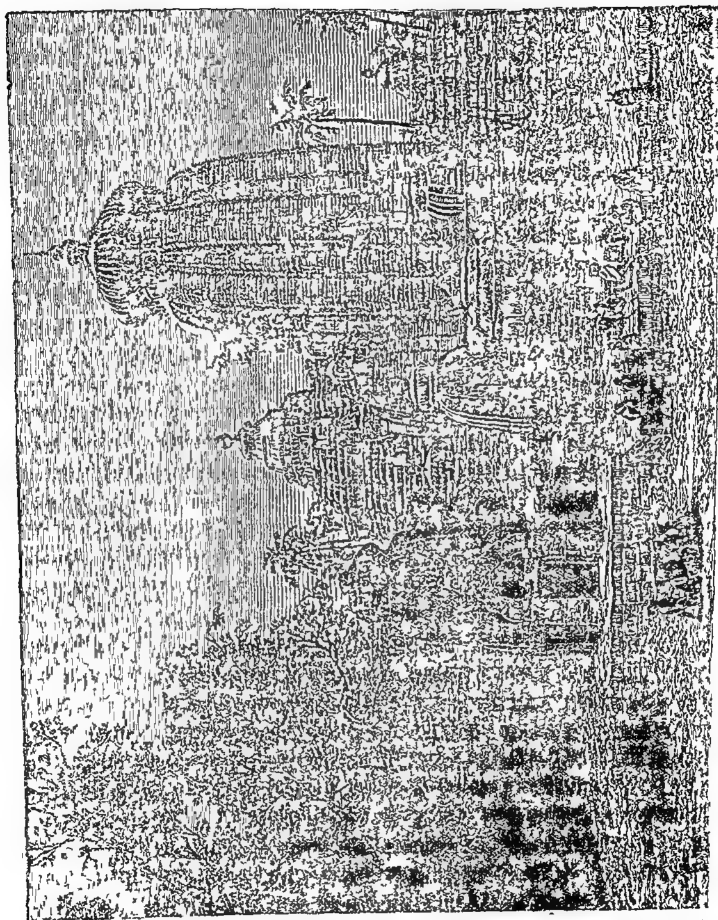
ओड़िया लोग जो समुद्र के समीप रहते हैं ऐसी बोली बोलते जो बगाली भाषा से बहुत मिलती है परन्तु उसे गोल अक्षरो से लिखते है जैसा दक्खिन के लोग काम में लाते है। इस का कारण यह होगा कि ताड की पत्तियों पर लोहे के कलम से लिखते है और इस लिये ऐसे गोल अक्षरो का बनाना सहज है। उस देश मे शिष्टाचार जैसा कि चाहिये तैसा फैला नही है। बहुत गावो मे यदि कोई गाड़ी आती तो लोग उसे अद्भुत वस्तु समझते। गांववाले बहुत अज्ञान और ढीले और अविश्वासी है परन्तु आजकल उन की कुछ उन्नति किई जाती है। इस सन्तान के बहुतेरे निवासी कलकत्ते मे आकर नौकरी करते है। पहाडियों मे बहुत पूर्व निवासी रहते है जो बहुत जंगली लोग है। उन मे खोड आदि सन्तानो का दस्तूर यह था कि जमीन के नाम पर नरमेध किया करते थे क्योंकि सोचते थे कि जब लों पृथिवी को मनुष्य के रक्त से न सींचे तब लों अन्न उत्पन्न न होगा। उडीसा की दो तिहाई पहाड़ी भूमि है और यह देशी राजाओ के हाथ मे है परन्तु समुद्र तीर तीन जिले है अर्थात उत्तर मे बालासोर बीच में कटक और दक्खिन मे पुरी।



पुरी का मेला।

उड़ीसा मे अर्थात पुरी नगर मे जगन्नाथ का मंदिर है जो समस्त हिन्दुस्तान मे विख्यात है और हण्टर साहिब ने उस तीर्थ का वर्णन यों किया है कि जगन्नाथ का नाम हर साल हिन्द देश के सैकड़ों स्थानो से यात्रियो को पुरी के रेतिलस्थान में खींचा करता है। तीर्थों की यात्रा करनी एक बात है जिस से हिन्दू लोग बहुत मोहित होते है। दिन रात साल के बारहो मास बटोहियो की भीड़ें पुरी में चली आती है और उड़ीसा की बड़ी सड़क मे तीन सौ मील दूर लों हर एक गाव मे टिकनेवाले पाये जाते है। इन भीड़ों मे २० से लेके ३०० मनुष्य लों पाये जाते है। जब बड़े मेले के दिन समीप आ जाते है तब यह भीड़े अधिक हो और मानो कई मील लों एक ही हो जाती है। वे क्रम २ से और आज्ञाधीन होके चली जाती है और हर एक झुण्ड का कोई अगुवा रहता। हर एक छ यात्रियो में से पाच स्त्रिया होती। इधर तो बहुत सी छोटी २ और पतली २ स्त्रिया श्वेत वस्त्र पहिने हुए चली आतीं और हम उन्हे पहिचानते कि यह तो बगाल देश से आई है। उधर उन से बड़ी और बलवान स्त्रिया रग रग के कपड़े पहिने और नाक कान मे गहने पहिने मुहो पर गोदने से चिन्ह बनाये हुए हाथ मुह मैले कपड़ो की गठरी उठाये हुए गाती बजाती चली आती है और हम उन्हे पहचान लेते कि उत्तर हिन्दुस्तान से यह आई है। इन बटोहियो में से बहुतेरे पाव २ चलते है और इधर उधर उन के बीच मे जोगी सन्यासी भी देह पर राख लगाये हुए नगे फिरते है। उन के बाल बहुत लबे बढ़ाये हुए और पीले रंग से रंगे रहते हैं। गले में माला लटकाये माथों पर इष्ट देवी का रग लगाये हुए और हाथ में लाठी लिये हुए चले जाते है।

कहीं २ भीड़ो के बीच में बैलगाड़िया दिखाई देती है। किसी मे बगाल के छोटे बैल और किसी मे उत्तर हिन्दुस्तान के बड़े बैल जुते रहते है और यह गाड़िया स्त्रियो से भरी रहती है। उन गाड़ियो में जो उत्तर हिन्दुस्तान से आई है मुसलमानो के राज्य के दिनो का यह चिन्ह दिखाई देता है कि हर एक गाड़ी ऊपर से ढपी रहती है परन्तु बगाली लोग अपनी स्त्रियो को प्रसन्न करने के लिये ऊपर के ओढ़ने में कहीं २ छेद बनाते है जिस मे से पती वा लड़की की काली २ आंखे झाकने में दिखाई देती है। उन के बीच में कोई स्त्री रगीन पायजामा पहिने हुए छोटे टट्टू पर सवार चली आती है और उस का पति दास की नाई उस के पीछे पैदल चलता है और एक लोटा गगाजल और मैले कपड़े की गठरी लादे हुए उस के पीछे चली आती है। फिर कलकत्ते का कोई महाजन वा साहूकार अपने घर की स्त्रियो सहित पालकियो मे सवार हुए दिखाई देता है। मै ने किसी महाजन की भीड़ देखी जिस में ४० पालकिया ३२० कहार और पचास बोझ उठानेहारे थे। और गाना रात को अधियारे में दूर तक सुनाई देता था। इस से बढ़कर किसी राजा की धूमधाम थी जो हाथी ऊंट गाड़िया घोड़े और घुड़चढ़ों सहित किसी दूर स्थान से चला आता था। वह बेचारा अपनी पालकी में बैठा हुआ इस सब हुल्लड़ और धूल और हड़बड़ी के बीच में बहुत अप्रसन्न देख पड़ता था परन्तु सोचता था कि पुण्य के लिये यह कार्य्य करना ही पड़ता है।



भुवनेश्वर का मन्दिर ।

इन यात्रियों में से अगणित लोग रोगी हो जाते और बहुत मर भी जाते हैं। जब लों पुरी में रहते तब लों उन को कोई टिकने का अच्छा स्थान नहीं मिलता और उन को भोजन


तीर्थ को जाना ।

भी खाने के योग्य नहीं मिलता । उस का कारण यह है कि पंडे लोग उन्हें यह सिखाया करते हैं कि इस पवित्र तीर्थस्थान में अपने लिये भोजन पकाना उचित नहीं है । वे चाहते हैं कि हर कोई देवता का प्रसाद खाया करे जिस से पंडे लोगों को लाभ प्राप्त होता है । यों होता है कि यह सारी भीड़ें मंदिर के रसोई घर का पकाया हुआ भोजन खाया करती है । यह भोजन विशेषकर भात है जिस में दाल चना घी चीनी और नाना प्रकार की और वस्तु मिलाई और पकाई जाती है । यह भोजन बड़े मेले के दिनों को छोड़ और दिन सस्ता बिकता है अर्थात दो आदमी का भोजन एक आने में बिकता है। मेले के दिनों में दाम बढ़ाया जाता है । जब खाना पक चुकता तब उसे मंदिर के बाहर की कोठरी में ला रखते हैं और यों मूर्त्ति के आगे लाये जाने से वह पवित्र प्रसाद समझा जाता है । जिस दिन यह प्रसाद पकाया जाता कदाचित अच्छा भोजन होगा पर बहुत से यात्री उस पर यह दोष लगाते हैं कि अच्छी रीति पकाया नहीं जाता है । परन्तु शोक की बात यह है कि वह भोजन बहुधा बासी खाया जाता है क्योंकि पंडे लोग कहते हैं कि यह महापवित्र वस्तु है और उस में से कुछ भी फेंकना अनुचित है । सो वे इस बासी भोजन को यात्रियों को खिलाते हैं । यदि भले चंगे और बलवन्त मनुष्य ऐसी वस्तु को खावें तो रोगी हो जाने का बहुत डर है परन्तु बटोही बहुधा मार्ग के दुःखों से कुछ न कुछ रोगी होकर वहां पहुंचते हैं सो यह प्रसाद उन के लिये विष ठहरता है । बटोहियों को छोड़ सैकड़ों भिखमङ्गे वहां रहते और वे भी सड़े हुए भोजन को खाया करते हैं। जो मिठाइयां वहां बिकतीं सो इतनी शीघ्र नहीं बिगड़तीं तौभी यह अच्छी रीति से अर्थात सुथराई से नहीं बनतीं और जब यात्री लोग लौटते समय उन्हें मोल लेते और घर को ले जाते हैं तो यह भी रोग का कारण हो जाता है ।


कुण्डार्क नाम काला मंदिर ।

बुरे भोजन को छोड़ और भी कारण हैं कि जिन से यात्री को रोग उत्पन्न होता है । पुरी

का मैदान नीचा है और नगर और समुद्र के बीच में बलुही भूमि है सो नगर का मैला पानी अच्छी रीति से समुद्र की ओर नही बहता है सो पुरी एक बहुत ही मैला नगर है । यह रीति है कि घर चार फुट ऊंचे चबूतरों पर बनाते है और चबूतरे के बीच में एक पनाला रहता है जिस के द्वारा से घर की काली २ कीच बाहर गली मे वह निकलती है । चबूतरा आप धीरे २ इस मैल को सोख लेता है और आधे साल मे जब गर्मी अधिक होती है तो घर में ऐसी दुर्गन्धी हवा रात दिन निकलती है कि आश्चर्य्य की बात देख पड़ती कि आदमी ऐसे स्थान में कैसे जीते रहते है ।

फिर यात्री लोग अशुद्ध पानी पीके वहां बहुत क्लेशित होते है । पुरी नगर में जो ताल खुदे है बहुत पवित्र समझे जाते है परन्तु उन का जल बहुत ही मलीन और पीने में अयोग्य है और पंडे लोग उन्हे सिखाते है कि इन का जल पीना धर्म्म है बरन बहुतो की बुरी रीति यह है कि पहिले ताल मे स्नान करते और उस का पानी गन्दला कर देते है और तब उस में से पीने लगते है ।



यात्री ।

प्रगट नहीं कि किस कारण जगन्नाथ का मन्दिर बनाया गया अथवा लोग किस कारण उसे तीर्थस्थान मान्ने लगे । इस के विषय लोगों मे नाना प्रकार की कहानियां प्रचलित है । एक कहानी यह है कि जब कृष्ण मारा गया तब उस की हड्डियां एक वृक्ष के तले पड़ी रहीं जब लों पीछे किसी ने उन्हें बटोरकर पिटारे मे न रक्खा । इन्द्रद्युम्न नाम एक राजा को यह आज्ञा मिली कि इन हड्डियों को लेके एक मूर्त्ति बना और हड्डियों को उस के भीतर रख । राजा ने इस काम के करने में विश्वकर्मा की सहायता मांगी । विश्वकर्मा ने कहा कि भला यदि कोई मेरे पास न आवे तो मैं ऐसी मूर्त्ति को बनाऊंगा । राजा ने मान लिया परन्तु १५ दिन के पीछे उस ने कहा कि मैं जाके देखूंगा कि विश्वकर्मा क्या कर रहा है । परन्तु देखता क्या है कि केवल एक कुडौल कुन्दा है जिस में न हाथ न पैर है । बहुधा जहां जगन्नाथ की मूर्त्ति धरी है तहां दो और अर्थात उस के भाई बलराम की और उस की बहिन सुभद्रा की मूर्त्ति भी रक्खी रहती है । इस मंदिर के बाहर भीतों पर ऐसे चित्र काढे हुए है जो अति अशुद्ध और मन के बिगाड़नेवाले है ।

जगन्नाथ के मंदिर से बहुत से पंडे सबन्ध रखते है जो समस्त हिन्दुस्तान में फिरा करते और हर कहीं भोले लोगों से बिनती करते है कि आओ पुरी का जो स्वर्ग का द्वार है दर्शन करो । इस तीर्थ से नाना प्रकार की बड़ी २ आशीष तुम को मिलेगी । वे कहते है कि पुरी में जमीन की धूल सोने की है और जब उन से बताया जाता कि देखो भाई जैसी और सब धूल है वैसी यह भी है

तो वे उत्तर देते है कि हां कलियुग के पाप के कारण से ऐसी ही दिखाई देती है। इन पडो के बहकाने से बहुत सी भोली स्त्रिया अपने २ पुरुषो की आज्ञा बिना इन पडो के पीछे २ पुरी को जाती है। अगणित मार्ग की थकाहट से मर भी जाती है। बड़ी २ सडको में उन की हड्डिया बहुत दूर दूर लो बिथराई हुई है। पूर्वकाल में बौद्धवालो का एक तीर्थ-स्थान भी पुरी में था। वे कहते थे कि बौद्ध का एक दात वहा रक्खा हुआ है और उस के पूजने के लिये बड़ी भीड वहा जाया करती थी। पीछे वह दात लका में पहुचाया गया और उस को पूजा भी वहा की उठ गई।

कुणडार्क मे जो पुरी से १९ मील दूर है एक टूटा फूटा मदिर है जो सूर्य्य की पूजा के लिये बनाया गया था। पुरानी पोथियो से जाना जाता है कि छ सौ बरस बीते बनाया गया और उस की दीवारो पर भी बहुत घिनौनी लंपटता के चित्र काढे हुए है। यह मदिर समुद्र से अच्छी रीति दिखाई देता है और नाविक लोग उस को देखकर अपने जहाज चलाते है।

दार्जिलिङ्ग पहाड।

गगा नदी के वर्णन करने से पहिले उचित है कि हम उस स्थान का वर्णन करें जहा कि कलकत्ते के बहुतेरे रोगी लोग शान्ति पाने के लिये जाते है और जहा बहुत साहिब लोग गरमी के दिनो मे टिकते है। वह दार्जिलिङ्ग पहाड है। बगाल का गवर्नर साहिब वहा आधे साल रहता है। वह कलकत्ते से ३६४ मील दूर है और बीच मे रेल की गाड़िया चलती है। बटोही रेल में सवार होके गङ्गा तीर जाते है जहा अग्निबोट उस पार पहुंचाता है और वहा रेलगाडी में फिर सवार होके सिलीगुरी मे जो पहाडो के बगल में है पहुचता है। फिर वहा से दार्जिलिङ्ग लो बडी चढाई है परन्तु हलकी रेलगाड़ी बहुत घूम-घाम से उसे ऊपर लो पहुचाती है। हिमालय पहाड के साम्हने तराई नाम एक बडा वन है जिस मे दलदल बहुत है और जिस मे तप भी बहुत हुआ करती है। लार्ड केनिङ्ग साहिब की मेम साहिबा उस तराई में एक रात सो गई थी उन को ऐसी तप चढी कि मर गई परन्तु जो रेलवे के द्वारा से चलते है बहुत शीघ्र और कुशल से तराई के पार जाते है।

लार्ड बेनटिक साहिब ने सन ई० १८३५ मे दार्जिलिङ्ग की जमीन को सिक्किम के राजा से मोल लिया। पीछे उस मे कुछ और भी जमीन जोडी गई। बहुत से हिन्दू बगाल से आकर वहां बसे है परन्तु निवासी बहुधा पूर्वकाल के पहाडी सन्तानो में से है। इन पहाडी लोगो के चपटे मुहों से प्रगट है कि वे चीन के निवासियो से सबन्ध रखते है। दार्जिलिङ्ग पहाड पर गेहू आलू भुट्टा बाजरा आदि वस्तु होती है और पहाड के नीचे बहुत धान उत्पन्न होता है। दार्जिलिङ्ग मे एक विशेष वस्तु जो साहिब लोगो के इन्तिजाम से उत्पन्न होती है सो चाह है। पहिले चाह की बारी सन ई० १८५६ में लगाई गई और १८७५ मे १२० ऐसे बगीचे हुए जिन मे २४,००० मजूर काम करते थे। वह बहुधा नैपाली लोग थे। सन १८६२ ई० में सरकार ने सिंकोना का बगीचा लगाना आरभ किया। यह वह पेड है जिस के छिलके से तप को



अवरेष्ट पर्व्वत जैसा दार्जिलिङ्ग से दिखाता है।

सब से अच्छी औषधि अर्थात कुनाइन बनती है। आजकल वह बहुत पैदा होती है। दार्जिलिङ्ग के पीछे के हिमालय पहाड़ कभी २ देखने में अति सुन्दर मालूम होते है परन्तु बहुधा वे बादलों और कुहासे से छिप जाते है। इस चित्र में उन मे जो सब से ऊंची पहाड की चोटी अर्थात अवरष्ट की दिखाई देती है जिस पर साल भर पाला पड़ा रहता है जो ऐसा श्वेत है कि उस पर दृष्टि करके आखे तिलमिलाती हैं। इन श्वेत चोटियो के साम्हने बहुत सी और पहाड़ियों की श्रेणिया है जो बहुधा उन बादलों से जो उन पर रहते छिप जाती हैं।

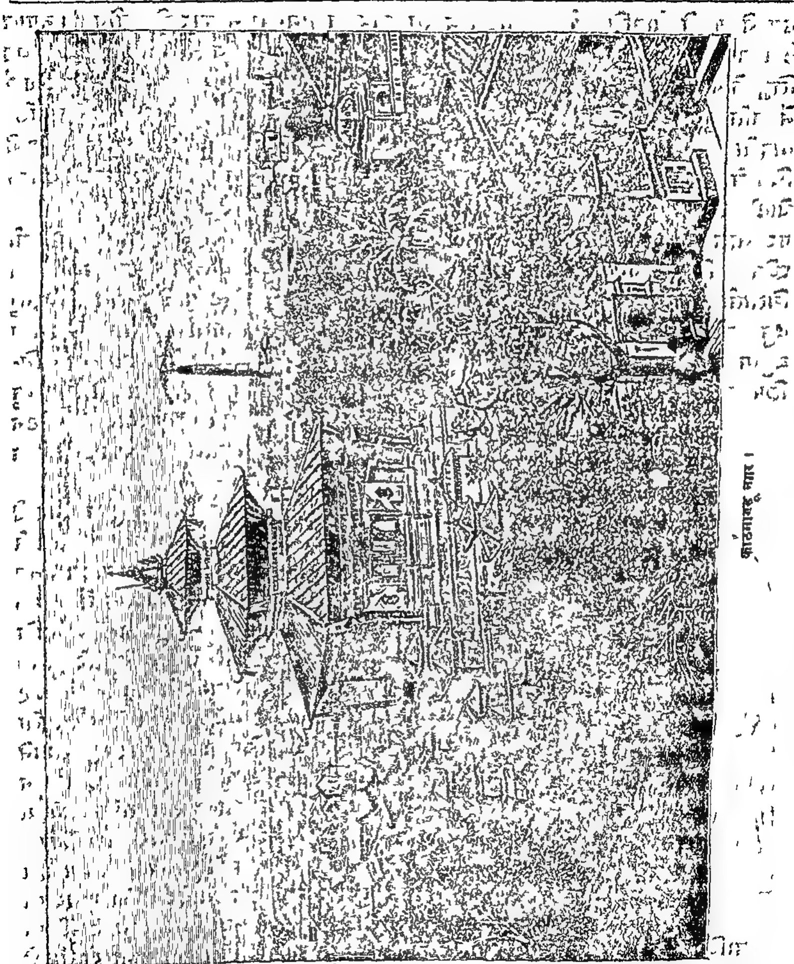
नेपाल का वर्णन।



गोरखा सेना।

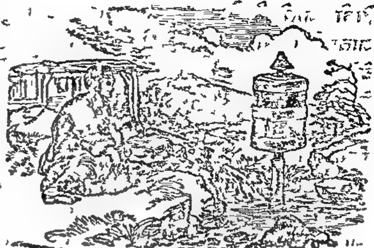
दार्जिलिङ्ग की पच्छिम ओर नेपाल नाम एक बड़ा स्वाधीन देशी राज्य पाया जाता है। उस की उत्तर सीमा पर तिब्बत और उस की दक्खिन सीमा पर सरकार की जमीन है। नेपाल देश मे ५४००० वर्ग मील जमीन है क्योंकि वह ४६० मील लंबा और १५० मील चौड़ा है। उस में २०,००,००० निवासी है। नेपाल बड़ा पहाड़िस्तान देश है। जो पहाड पृथिवी भर मे सब से ऊंचे है सो उस में पाये जाते है। उस की समस्त उत्तरवाली सीमा ऐसी ऊंची है कि उस पर पाला साल भर पडा रहता है वहा के निवासी न रूप न रङ्ग मे न बोलचाल में न धर्म्म में न रीति व्योहार मे हिन्दुओ से मिलते है परन्तु वे नाना प्रकार के तातारी सन्तानों से सबन्ध रखते है। उन में गोरखा लोग आजकल अधिकार रखनेहारे है। वे छोटे आदमी है परन्तु लडाई करने में बहुत ही शूरवीर है। उन की कितनी पलटने आजकल सरकार की सेना मे पाई जाती हैं।

काठमाडू जो नेपाल देश का मुख्य नगर है सो समुद्र से ४००० फुट ऊंचा है और उस में ५०,००० निवासी रहते है। महाराजा का भवन नगर के बीच ही मे बना है। उस में से एक भाग बहुत प्राचीन है और पूर्वकाल के मंदिरो के समान बना है और उस पर बहुतेरे कुडौल चित्र काढे हुए है। नगर में बहुतेरे मंदिर है जो देखने में अच्छे बने हुए है। वे कई महलो में बने है और चित्र काढने और रङ्ग लगाने और सोन्हले काम से विभूषित है। उन की छतो में सोन्हला पीतल तांबा लगाया गया है और छत के किनारो पर छोटी २ घंटिया है जो हवा के चलने से बजती है। एक और प्रकार का मंदिर है जो पत्थर का कुछ ऐसा बना है जैसा हिन्दुस्तान के मंदिर। काठमांडू नगर के गली कूचे बहुत ही तंग हैं और बहुत ही मैले रहते हैं। भवन से थोड़े हाथ दूर एक बड़ा गृह है जो कोट



काठमाण्डू नगर।

प्रसिद्ध है। यह वह स्थान है कि जिस में के बड़े लामा कहलाते हैं। वे समझते हैं कि सन १८४६ में देश के इतने बड़े २ रईस घात किये गये। बात ऐसी हुई कि किसी की दुष्टता से देश का महामंत्री वध किया गया था और महारानी चाहती थी कि इस अपराध का बदला लिया जाये सो जंगबहादुर ने जो उन दिनों में सेनापति था कहा कि मैं ही इस का बदला लूंगा। सो उस ने ऐसा किया कि भवन में बड़े २ प्रधानो और रईसों की सभा बटोरी और जब वे सब एकट्ठे हुए तब सेनापति ने एकाएक एक पलटन लेके उन पर चढ़ाई किई और एक २ को मार गिराया। इस काम के करने से जंगबहादुर देश का महामंत्री हो गया और इस के मरने के दिन लों समस्त अधिकार इस के हाथ में रहा तिस के पीछे उस देश में और भी झगड़े लड़ाइयां और अदलबदल हुए हैं।



प्रार्थना करना

इस मंत्र के पढ़ने से बड़ा प्रताप है कि ओम् मनी पद्मे ओम् अर्थात ओम् पद्म फूल में गहना है। वहां के निवासी इस बात को बड़ी चिन्ता करते हैं कि हम बिन धर्म्मकार्य्य किये अर्थात बिन दौड़ धूप उठाये और परिश्रम किये धर्म्म का फल कैसे प्राप्त करें। उन्हों ने सोचा कि जब इस ओम् मंत्र के पढ़ने में इतना प्रताप है तो उस को एक पहिया पर लिखके उस पहिया को घुमाना बड़ी प्रताप होगा और काम बहुत सहज में होगा और शीघ्र किया जायेगा। फिर औरो ने सोचा कि इन प्रार्थना की पहियों को अपने हाथो से घुमाना क्या अवश्य है। वे उन्हें ऐसे स्थान में रख देते हैं जहां कोई नदी पहाड़ से बहके उन को घुमा देवे। सो जो रात दिन जब वह



काठमाण्डू की एक सड़क

नैपाल का धर्म्म बौद्धमत है और वह देश उस मत के मंदिरों से भरा हुआ है। यहां

आदमी सोता जागता है उस को प्रार्थना होती जाती है और उस का प्रताप बढ़ता जाता है। कभी ऐसी पहियों को वहां लगा देते हैं जहां पवन के चलने से वे घूमती है जो यह भी न हो तो इस मंत्र को किसी झंडे पर लिख देते हैं और झंडा ऊंचे पर खड़ा किया जाता और पवन से उड़ता रहता है तो मानो मंत्र पढ़ा जाता है। यों वे प्रार्थना को ठट्ठों मे उड़ाते है क्योंकि पाप का अंधकार उन के मनों पर छाया हुआ है। सत्य प्रार्थना मन की सत्य अभिलाषा है। ईश्वर से प्रेम से ऐसी बातें करनी चाहिये जैसा पुत्र पिता के संग बात करता है सो मंत्रो पर भरोसा रखना और आन देवो का नाम लेना व्यर्थ और निष्फल है।

गंगा नदी की सैर।

आजकल जब कोई दूर स्थानो की यात्रा करने चाहता है तो रेलगाड़ी पर सवार होके बड़े वेग से जाता है परन्तु हम तो कलकत्ते से चलकर देश की सैर करेंगे सो गंगा नदी के मार्ग से चलेंगे क्योंकि नदी के समीप कितने स्थान है जो देखने योग्य है कारण इस का यह है कि पूर्वकाल मे यात्री बहुत करके नौकाओं मे सवार होकर जाते थे। उन दिनो में नाना प्रकार की नौका चलती थीं और धनवान बटोहियो के लिये ऐसी बनती थीं कि जिन के ऊपर छप्पर डालके मानो कोठरियां बनाते थे और इन बड़ी नौकाओं को लोग गुन के द्वारा तट पर से चलकर खींचा करते थे और जब अच्छी हवा चलती थी तब पाल लगाकर नौका को चलाते थे।

इस रीति नौका पर सवार हो यदि कोई गंगा की सैर करे तो दहिने हाथ पर बारिकपुर नगर को देखेगा जहां सरकार की छावनी है और जहां लार्ड साहिब के लिये एक दिहाती घर बना है। नदी के उस पार उस के साम्हने श्रीरामपुर नाम एक नगर है जो पहिले डेन लोगों के अधिकार में था। यह वह स्थान है जिस में प्राचीनकाल में केरी मार्शमेन और वार्ड नाम तीन प्रसिद्ध पादरी रहते थे जिन से हिन्दुस्तान देश को बहुत लाभ प्राप्त हुआ है। और भी ऊपर चढ़के बांये हाथ पर चन्द्रनगर दिखाई देता है जिस को फ्रांसीसी लोगो ने बसाया। उस के अगाड़ी हुगली नगर है जहां अंगरेजो ने बंगाल देश में पहिला स्थान पाया। उस की नेव सन ई० १६४० में डाली गई। जब दिल्ली के महाराजा की प्यारी राजकुमारी रोगी हुई तब डाक्टर बौटन साहिब के परिश्रम से वह चंगी हुई सो महाराजा ने आनन्दित हो इस जमीन को उसे दे दिया।

गंगा का अधिक पानी पद्म नाम एक शाख के द्वारा से समुद्र में पहुंचता है। पद्म से दो शाखे निकलती जिन को भागीरथी और जलंगी कहते है। नदिया नगर के समीप यह दो शाखे मिल जाती और वहां से जो नदी समुद्र की ओर बहती है सो हुगली नाम से प्रसिद्ध है। पूर्वकाल में नदिया के बहुत से संस्कृतटोल अर्थात पाठशाले विख्यात थे परन्तु आजकल लोग देखते है कि संस्कृत के पढ़ने में कम लाभ प्राप्त होता है सो उसे छोड़कर अंगरेजी विद्या पढ़ते है। नदिया के समीप पलासी नाम एक बड़ी लड़ाई हुई परन्तु जहां लड़ाई का मैदान था तहां आजकल भागीरथी नदी बहती है पर इस नदी के इधर उधर बहने से और अपने स्थान

छोड़ने से मल्लाह लोगों को बहुत कष्ट पहुंचता है।

नदिया की उत्तर ओर भागीरथी नदी के पश्चिम तट पर मुरशिदाबाद नगर बना है। सन ई० १७०४ में दीवान मुरशिद कुली खां ने उसे अपना मुख्य नगर बनाया था और अपने नाम से उस का नाम रखा। आजकल नवाब नाजिम वहां रहता है और उसे में उस का सुन्दर भवन है।

बिहार देश का वर्णन।



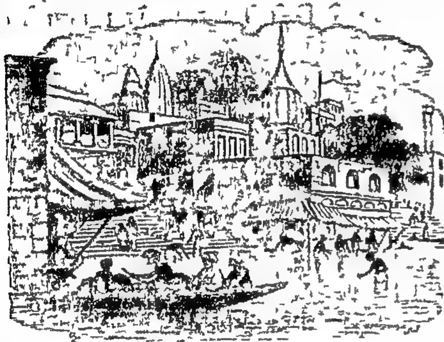
गंगा में नाव चलाना।

मुरशिदाबाद को छोड़कर हम बंगाल के एक भाग को जो बिहार नाम से प्रसिद्ध है आते हैं। बिहार बड़ा देश और बहुत फलदायक है और गंगा नदी ने उसे दो बराबर भागों में बांट दिया है। बंगाल की अपेक्षा उस की जमीन आधी से कम है और उस के निवासी आधे से अधिक हैं। हर एक वर्ग मील में ५५० आदमी मिलते हैं। हिन्दुस्तान भर में ऐसी जमीन न होगी जो मनुष्यों से इतनी भरी हुई है। जमीन दक्खिन पूरब को छोड़ चपटी और मैदान है और उस में पानी कम बरसता। उस की मिट्टी से बहुत सा शोरा बनता है। वहां धान गेहूं जौ बहुत उत्पन्न होते हैं। अफीम भी बहुत उत्पन्न होती है। बिहार के निवासी हिन्दी उर्दू और कोई २ सन्ताली भाषा बोलते हैं। सन्ताली वही काम में लाते जो उन पहाड़ों में रहते जो दक्खिन पूर्व में है। वहां के पानी और हवा के कारण से निवासी बंगालियों से बड़े और बलवन्त हैं। बिहारा उस गृह का नाम है जिस में पूर्वकाल के दिनों मे बौद्धमत के संसारत्यागी बसते थे और इस से इस देश का नाम बिहार कहलाया क्योंकि वहां ऐसे बहुत से गृह पाये जाते थे। पूर्वकाल में बिहार के संग मगध राज्य संबन्ध रखता था और इन दोनों मे बौद्धमत विशेषकर प्रचलित था। तेरहवीं सदी मे बिहार मुसलमानों के हाथ आया। बंगाल के नवाब के हाथ में उस समय से ३ सूबा रहे जिन मे से एक सूबा बिहार था। सन ईसवी १७६५ में बिहार सरकार अंगरेज के हाथ में आया और बंगाल में मिला दिया गया।

फिर भागीरथी मे चढ़कर हम वहां आते हैं जहां नदी गंगा नाम से प्रसिद्ध है। दहिने हाथ पर मालदा जिला दिखाई देता है जहां पहिले गौड़ नाम बंगाल देश का मुख्य नगर गंगा की एक शाखा पर बना था जिस में अब पानी नहीं बहता है। उस में अगणित मसजिदें

और मुसलमानों के गृह बनाये गये। सन ई० १२०४ में गौड़ मुसलमानों के हाथ में आया और वहां ३०० वरस लों वे बंगाले का राज्य करते रहे परन्तु पीछे अर्थात सोलहवीं सदी में उस स्थान में ऐसा रोग फैला कि उस स्थान को छोड़ना पड़ा और वह अब उजाड़ पड़ा है बरन वहां बड़े बन हो गये हैं।

इस से आगे बढ़के हम राजमहल पहाड़ों को दहिनी ओर देखते हैं जिन के कारण से गंगा नदी घूमी है। यह पहाड़ कुछ बहुत बड़े नहीं हैं। उन में जो सब से बड़ा है केवल २००० फुट ऊंचा है। राजमहल नगर जो अब बना है विशेषकर झोपड़ियों की बस्ती है और जहां मुसलमानों की बनी हुई प्राचीन बस्ती थी वहां महावन पाया जाता है। मानसिंह ने जो अकबर बादशाह का सेनापति था उसे बंगाल का मुख्य नगर बनाया। ३० बरस बीते की बात है कि गंगा नदी ने जो नगर के समीप बहती थी उस स्थान को छोड़ दिया। अब वह २ मील दूर पर बहती है। राजमहल से ४० मील आगे बढ़के कालगांग चटान गंगा के बीच में टापू की नाईं दिखाई देता है। केवल यह एक स्थान है जहां नदी का पानी चटानों से फिराया जाता है। एक चटान का नाम देवीनाथ है जिस के बगल में मूर्त्ति काढ़ी हुई है और चटान के ऊपर हिन्दुओं का मंदिर बना है। कालगांग से २० मील आगे बढ़के भागलपुर पाया जाता है जो उस जिला का मुख्य नगर है।



गंगा नहाना।

सन्ताल लोगों का वृत्तान्त।

भागलपुर के समीप पूर्व निवासियों का एक सन्तान पाया जाता है जो वर्णन करने योग्य है उन का नाम सन्ताल है और वे गंगा से लेके वैतरणी नदी लों अर्थात ३५० मील लंबी एक जमीन में पाये जाते हैं। उन बनों में जो इस जमीन की पच्छिम ओर पाये जाते हैं वे अकेले रहते हैं परन्तु और स्थानों में वे हिन्दुओं से मिलेजुले रहते हैं। उन की गिन्ती ग्यारह लाख है। हिन्दुओं की हड्डियों की अपेक्षा सन्तालों की हड्डियां कुछ बड़ी और बलवन्त हैं उन का माथा ऊंचाई मे कम और चौड़ाई मे अधिक है और उन के होंठ कुछ बड़े हैं। उन की बोली उत्तर देशों की बोलियों से और पच्छिम देशों की बोलियों से भी भिन्न है। उन का व्याकरण बहुत ठीक है। उन लोगों के पास विशेष अक्षर नहीं थे परन्तु आजकल उन की भाषा नागरी और रोमन में छपती है।

सन्ताल किसी देवता को जो भलाई करनेहारे को आशीष देता है नहीं जानते हैं परन्तु यह मानते कि बहुत से भूत प्रेत पिशाच रातदिन मनुष्य की घात में लगे

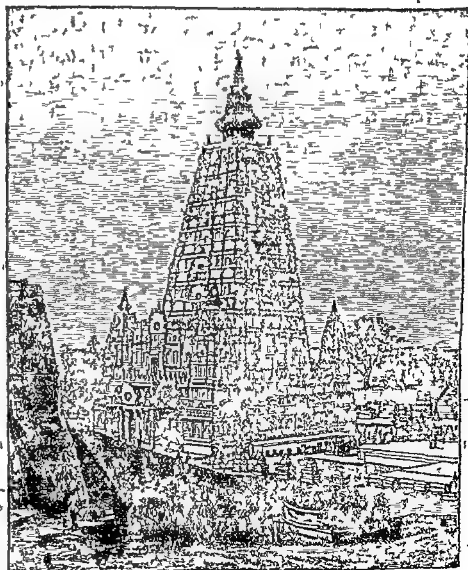
रहते जिस्से गाय बैल में मरी भेजे अथवा अनाज को खेत में सुखा दे और नाना प्रकार की हानि कर दे और अवश्य है कि मनुष्य लहू बहाने और चढ़ावा चढ़ाने से उन को मनावे। पहिले मनुष्य जिस ने सन्ताल लोगो में शिष्टाचार सीखना आरभ किया सो क्लीवलेण्ड साहिब था। यह एक जवान कलक्टर था जिस ने उन की भलाई की बड़ी चिन्ता किई। सौ बरस हुए यह दशा थी कि सन्ताल लोगों और हिन्दुओ में जो उन के समीप रहते थे बड़ा झगड़ा रहता था। सन्तालो के प्रधान कपट से मारे जाते थे और वे इस कपट का बदला क्रूरता से लेते थे। जो मैदान पहाड़ो के नीचे थे सूनसान हो जाते थे क्योंकि लोग वहा रहने से डरते थे। क्लीवलेण्ड साहिब ने यह उपाय किया कि जितने सन्ताल के प्रधान पहाड़ो से उतरके उस पास आते थे उस ने उन का बड़ा आदर-सन्मान किया और उन्हें अच्छे २ इनाम दिये। जो सन्ताली नौकरी चाहते थे उस ने उन्हे धनुर्धारी बनाया और राजाओ के बहुत से नातेदारों को उस ने अफसर बनाया। वह उन अध्यक्षो को जिन के द्वारा से दुष्ट लोग पकड़े और न्यायस्थान में पहुंचाये जाते थे मासिक दिया करता था। और जब प्रधान लोग न्याय की सभा में बैठने के लिये एकट्ठे होते थे तब साहिब सभा के लिये सभोजन करवाता था। क्लीवलेण्ड साहिब २९ बरस की उमर में मर गया तौभी उस के नाम का आदर आज लो बहुत किया जाता है और लोगो ने उस के नाम में एक मकबरा बनवाया और उन लोगो के लिये शिष्टाचार का आरंभ यही हुआ। तौभी शिष्टाचार के सब फल अच्छे नहीं है। अब कुशल के दिन आये और सन्तालो और हिन्दुओ में लेन देन होने लगा तब हिन्दू बनिये पहाड़ो में जाने लगे और उन भोले सन्तालियो को अपने बश में लाने लगे इस का यह फल हुआ कि ५० बरस के बीच में बहुत से सन्ताली ऋणी होकर बनियो के दास दासी हो गये। यह धमकी देकर कि हम तुम्हे दूर के बन्दीगृह में डलवा देंगे वे उन्हे ऐसे डरवाते थे कि जो चाहे उन से करवाते थे। सन ई० १८५५ में दक्खिन के सन्ताल इस दुर्दशा से यहां लों घबरा गये कि उन को यह इच्छा हुई कि हम सब के सब एकट्ठे हो लार्ड साहिब के पास जायेंगे और उस से अपनी दुर्दशा वर्णन करेंगे। सो ३0.000 मनुष्य एकट्ठे हो धनुष बाण हाथ में लिये कलकत्ते की ओर सिधारे। पहिले वे सीधे मार्ग ठीक से चलते थे परन्तु कलकत्ता दूर था आदमी बिन भोजन के नहीं रह सकता सो उन मे और हिन्दुओ में झगड़ा लड़ाई होने लगी। कहीं लूट मार होती थी और उन से और सरकार से बलवा हो गया सो उन को रोकना और अपने देश में लौटा देना पड़ा। शोक की बात है कि इन लड़ाइयों में बहुत से सन्ताली मारे भी गये परन्तु इस बलवे से एक बड़ा लाभ यह निकला कि सरकार ने उन की दुर्दशा बूझी और उन के लिये नया इन्तिजाम किया गया सो उस समय से लेके आज लो सन्ताली कुशल से रहते बरन उन की उन्नति और सन्तानो की अपेक्षा अधिक हुई।

गंगा की तीर का अधिक वर्णन।

भागलपुर से ३0 मील पच्छिम और मुंगेर नाम एक पुराना गढ़ है जो गंगा नदी के तट

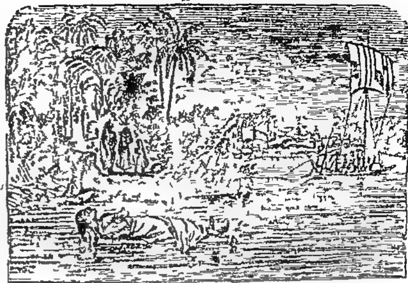
पर बना हुआ है। फिर पटना नगर गंगा तट पर बना हुआ है। जो बिहार देश का सब से बड़ा नगर है। उस में १६८००० निवासी है। पटना बहुत ही प्राचीन नगर है। प्राचीनकाल में उस का नाम पाटलपुत्र था और मसीह से ३०० बरस पहिले यूनानी लोगों का एक राजदूत मगध के महाराजा चंद्रगुप्त के पास वहां आया और राजदूत नगर को पालीब्रोथा नाम देते थे। उन दिनों में यह बौद्धवालों का मुख्य नगर था और अशोक महाराजा जो चंद्रगुप्त का पोता था बौद्धमत के फैलाने में बहुत तीव्र था। उस ने इतने बिहारे अर्थात संसार त्यागियों के लिये धर्म्मशाले बनवाये कि उस का देश आज लों बिहार देश प्रसिद्ध है। जब बौद्धवालों की तीसरी महासभा हुई तो वह पटना में एकट्ठी हुई। अशोक ने हिन्दुस्तान के दूर २ स्थानों में खभों को खड़ा किया और उन पर और चटानों पर अपनी आज्ञाये लिखवाईं कि कोई जीवहत्या न करे और उस ने बौद्धमत फैलाने के हेतु उपदेशकों को दूर २ देशो में भेजा।

दो बड़े शोक की बातें पटना नगर में हुई अर्थात सन ई० १७६३ मे मीर क़ासिम ने वहां के साहिब लोगों को कपट से घात किया और फिर १८५७ मे दानापुर की छावनी मे सिपाहियों ने बलवा किया। पटना नगर बहुत करके मिट्टी के घरों से बना है जिन की छतें खपरैल की है परन्तु बहुत सी पक्की हवेलियां भी हैं। एक सड़क चौड़ी और अच्छी है परन्तु और हर एक गली कूचा तंग और तिरछा है। जब पानी बरसे तो कीचड़ अधिक है और धूप पड़े तो बड़ी धूल उड़ती है। पटना कालिज एक अच्छा पक्का घर है और एक अद्भुत गृह पुराना सरकारी गोला है। पटना से तीन मील पूरब ओर वह स्थान है जहां सरकारी अफीम बेचने के लिये तैयार किई जाती है। पटना से ५ मील पच्छिम ओर बांकीपुर है जहां साहिब लोग बसते है और छ मील और आगे दानापुर है जहां सेना की छावनी है।



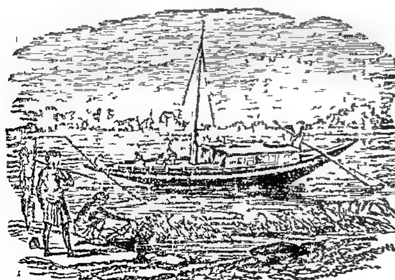
बौद्धगया का मंदिर।

बांकीपुर से यदि कोई रेल पर सवार होके


गंगा में मरना ।

५० मील दक्खिन की ओर चले तो गया में पहुंचेगा जो हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है । वहां के मंदिर आदि पहिले बौद्धवालों के हाथ में थे परन्तु जब वह मत हिन्दुस्तान से दूर किया गया तब ब्राह्मण लोग उन्हें अपने काम में लाये। गया विशेष स्थान है जहां हिन्दू लोग श्राद्ध का व्योहार करते हैं वरन वे कहते हैं कि जिन का श्राद्ध गया जी में दिया जाता है उन के आत्मा सीधे बैकुंठ में चले जायेंगे । परन्तु इन श्राद्धों के करने में अत्यन्त व्यय होता है क्योंकि गया ही में पैतालीस पवित्र स्थान हैं और कहते हैं कि एक २ में किसी देवता का पदचिन्ह है और एक २ में वहां के पंडे को दान देना पड़ता है । एक २ में ज्यों यात्री पिण्डा रखता त्यों ब्राह्मण कुछ संस्कृत में सुनाता है । इस नगर के पंडे जो गयावाल कहलाते सो यात्रियों के लूटने में प्रसिद्ध हैं । कोई महाजन वहां जाये तो बिना हजारों रुपये दिये उन के हाथ से न छूटेगा ।

इस श्राद्ध की बात के मानने से पाप बहुत बढ़ाया जाता है क्योंकि जब आदमी सोचता है कि मेरा परलोक मेरे कुकर्म्म सुकर्म्म के अनुसार नहीं परन्तु मेरे श्राद्ध के करने के अनुसार होगा तब बहुत लोग यह बिचार करेंगे कि हम जीवन भर कुकर्म्मी रहेंगे और तब अपने पुत्र के हाथ में रुपये छोड़के जायेंगे और वह मेरा श्राद्ध करके मुझे मेरे पापों के बुरे फलों से छुड़ावेगा और मुझे बैकुंठ में पहुंचावेगा । और वे यह सोचते हैं कि जो मनुष्य बिन पुत्र के मरे वह पुत नाम नरक में डाला जायेगा। यह सब शिक्षा झूठी है। श्राद्धों से न मरे हुओं का भला न बुरा होगा क्योंकि आदमी का न्याय उस के जीवन के कर्म्मों के अनुसार किया जायेगा । जैसा कहते हैं तैसी करनी तैसी भरनी। परन्तु कपटी लोगों ने धनवानों के लूटने के लिये श्राद्ध की शिक्षा चलाई ।



पटना की उत्तर ओर गंगा पार तिरहुत देश है जिस को पूर्वकाल में मिथिला राज्य कहते थे । उस के दो भाग अर्थात दरभङ्गा और मुजफ्फरपुर विख्यात हैं । दरभङ्गा में एक महाराजा रहता है जो बहुत धनवान है और जिस की बड़ी जमीन है । तिरहुत वह देश है जिस में नील विशेषकर उत्पन्न होती

है । वहां की मिट्टी से बहुत शोरा भी बनाया जाता है । वे मिट्टी से पानी टपकाते और तब उस पानी को उबालकर शोरा बनाते है और तब उसे महाजनों के हाथ बेचते जो उसे शुद्ध करवाते है। तिरहुत की रेलवे ने दरभङ्गा और मुजफ्फरपुर को गंगा के संग जोड़ दिया है ।

छुटिया नागपुर का वर्णन ।

बिहार और जब्बलपुर के बीच में एक पहाडीस्थान है जो बिहार देश के बराबर लंबा चौडा है परन्तु उस मे केवल पचास लाख निवासी पाये जाते और वह भी बहुत करके जंगली सन्तान के है । वहां की बहुत जमीन समुद्र से २000 वा ३000 फुट ऊंची है । मरहठा लोगो की चढ़ाइयो से वह बहुत उजाड़ किई गई है और बहुत स्थान बनो से ढपे है । पारसनाथ पहाड़ जो ४५0 फुट ऊंचा है जैन लोगो का विख्यात तीर्थस्थान है। जैन लोगो का मत बौद्ध मत से बहुत मिलता है । वे नास्तिक है परन्तु ऐसे मनुष्यों को पूजते जिन के विषय कहते है कि वे जब सर्वज्ञानी हुए तब नाश हुए । वे कहते है कि इन ज्ञानियों मे से एक पारसनाथ नाम ने इस पर्व्वत के ऊपर प्राण त्यागा सो वहां पूजने जाते है । पहाडी की चोटी पर कितने मन्दिर बने हुए है । जैन लोगों मे एक विशेष शिक्षा यह है कि जीवहत्या न करे । उचित है कि पढे लोग मुंह पर रुमाल बांधे रहे ऐसा न हो कि अकस्मात कोई मक्खी सांस मे आकर मारी जाये । उन्हे चाहिये कि छोटी झाड़ लिये फिरे और जहां पांव डाले तहां पहिले झाड़ दे न हो कि चिउंटी आदि पांव के नीचे दब जाये । वे इस को धर्म्म कार्य्य समझते हैं यह कि आदमी चिउंटी कबूतर आदि जीवों को खिलाये और बैल कुत्ते बिल्ली आदि के लिये रोगशाला बनाये । वे इस को पाप समझते है कि कोई पिस्सू खटमल आदि मारे और बहुत धनवानो की यह रीति है कि पहिले किसी कङ्गाल को अपनी खटिया में सोवाते है जिस्से खटमल पहिले उसी से पेट भरे और तब खाट का स्वामी शान्ति से सो सकता है । इस मत से यह लोग बहुत ही घमंडी बन जाते है कि हम भले है और २ लोग जो कीडों को नहीं बचाते बड़े पापी है ।

छुटिया नागपुर देश में और भी कई एक सन्तान है जो अलग २ बोलियां बोलते है । सन्ताली मुंडारी और कोल लोगो की भाषायें कुछ मिलती है । ऊड़ऊ लोग ऐसी भाषा बोलते जो तामिल भाषा से कुछ मिलती है । यह बडे परिश्रमी लोग है और उन मे से बहुत कलकत्ते मे आकर सफाई का काम करते और धांगर नाम से प्रसिद्ध है । जुआंग नाम एक सन्तान है जो बनों मे रहता और बहुत जंगली है ।

वे न सूत बनाना न कपडा बिन्ना न बर्त्तन बनाना जानते है । अब थोड़े दिन की बात है कि वे लोहे को काम मे लाने लगे है । उन की स्त्रियां कुछ भी कपडा नहीं पहिनती थीं केवल आगे पीछे कुछ पत्तियां जोड़कर टांगती थी क्योंकि उन में यह मिथ्या समझ थी कि यदि हम वस्त्र पहिने तो बाघ हमे खायेगे । आजकल सरकार उन को कपड़ा पहिनाती और यह बात उन्हें बहुत समझाती कि नंगा फिरना बहुतही अनुचित है ।

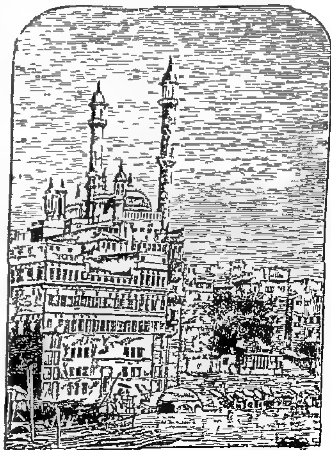
उत्तर पश्चिम देश का वर्णन ।

गंगा से आगे बढ़के उत्तर पश्चिम देश मे हम पहुंचते है । यह एक बहुत फैला हुआ मैदान है जिस मे गंगा यमुना और उन के

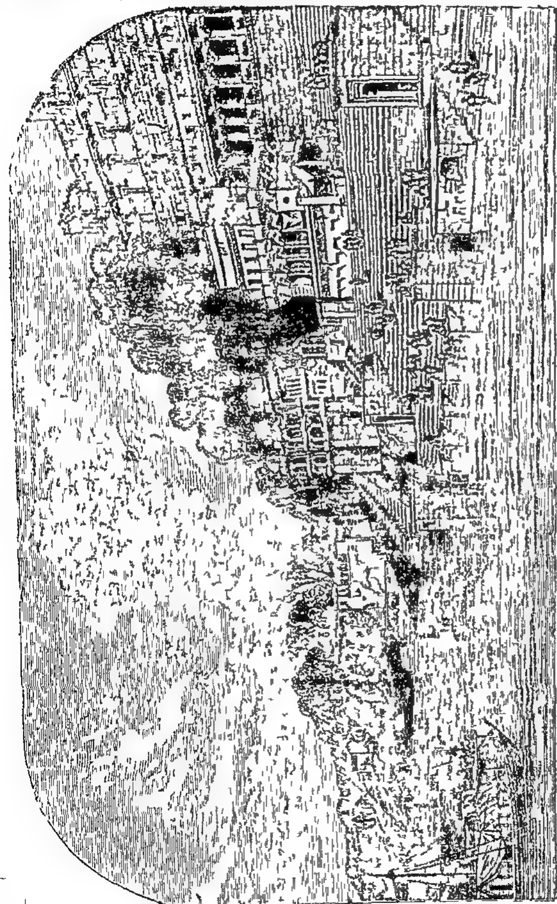
साथ की नदियां बहती है। अवध के साथ यह बहुत बड़ी अमलदारी है जिस में १,०६,००० वर्ग मील ज़मीन है और उस में ४,००,००,००० निवासी पाये जाते हैं। सन ई० १७७५ में बनारस सरकार अंगरेज़ के हाथ में आया और अब की सदी के आरम्भ में कितने और ज़िले उस में जोड़ दिये गये। सन १८३३ ई० में नार्थ वेस्ट प्राविन्सस बंगाल से अलग किया गया और सन १८७७ में अवध उस के संग जोड़ दिया गया। यह ज़मीन उत्तर पच्छिम नाम से इस लिये प्रसिद्ध नहीं है कि हिन्दुस्तान का उत्तर पच्छिम कोना है परन्तु इस लिये कि बंगाल से उत्तर पच्छिम ओर है। लंबाई चौड़ाई में बंगाल से कुछ बड़ा है अर्थात उस में ८२,००० वर्ग मील भूमि है और उस के निवासी ४,४०,००,००० से अधिक है। इस देश में लोग अधिक गेहूं खाते है और जाड़े के दिनों में ठंढ अधिक होती है सो बंगालियो की अपेक्षा यहां के निवासी देह में बलवान है। वे हिन्दुस्तानी कहलाते है।

निवासी हिन्दी उर्दू भाषाओ को बोलते है। हिन्द की समस्त भाषाओ की अपेक्षा लोग अधिक हिन्दी बोला करते है। ज्ञानवान कहते कि ७,००,००,००० हिन्दी के बोलनेहारे है परन्तु पूरबी और पच्छिम की हिन्दी में कुछ भिन्नता है। हिन्दी बहुधा नागरी अक्षरो में छपती है। महाजन लोग कैथी को काम में लाते क्योंकि वह लिखने में सहज है। उर्दू भाषा नगरो में अधिक बोली जाती है। उर्दू का अर्थ छावनी है और कहते है कि यह नाम इस लिये प्रसिद्ध हुआ कि यह बोली पहिले मुसलमानों के योद्धाओ के बीच मे उत्पन्न हुई कि वे हिन्दी को अपनी अरबी फारसी शब्दो के संग मिलाकर और उन का महावरा बदल कर एक नई भाषा चलाने लगे और ये महम्मदी लोग और नगरवासी हर कहीं उसे बोलने लगे। आजकल २,५०,००,००० उर्दू भाषा के बोलनेहारे होंगे। उस के लिखने में लोग अधिक अरबी फारसी अक्षरो को काम में लाते है परन्तु आजकल बहुत उर्दू रोमन अक्षरो में लिखी जाती है इस देश में आठ मनुष्यो में एक मुसलमान है और बाक़ी लोग बहुधा हिन्दू है। पटना से आगे बढ़के हम गंगा तीर के दहिने हाथ पर गाज़ीपुर को देखते है यह वह स्थान है जहां अफीम बेचने के लिये तैयार किई जाती है। यहांही सन ई० १८०५ में लार्ड कार्नवालिस साहिब मरे। गाज़ीपुर से ४० मील उत्तर पच्छिम ओर हिन्दू लोगो का पावन नगर मिलता है।

काशी का बर्णन।



हिन्दुस्तान के समस्त और नगरों की अपेक्षा हिन्दू लोग काशी को चाहते है । वे उस की जमीन को उस के कुओं और नदियों को उस के मंदिरों और घाटों को बहुत ही पवित्र समझते है । जैसा हर एक मुसलमान अपनी आंखों से मक्का नगर को देखने चाहता है वैसाही हर एक हिन्दू कभी काशी का दर्शन किया चाहता है ।



दशाश्वमेध घाट—काशी ।

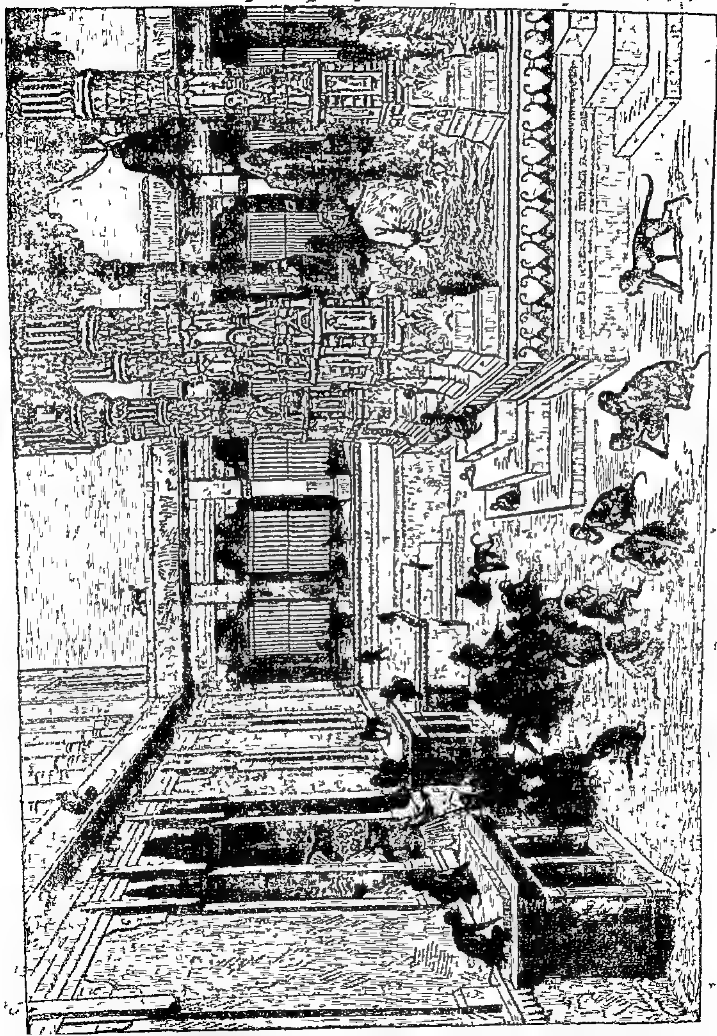
काशी गंगा तट पर बसी है और रेलवे जो वहां से कलकत्ते को बनी है सो ४०६ मील लंबी है । नगर की लंबाई नदी के उत्तर वाले तीर पर ४ मील है । वहां गंगा की चौडाई मील की एक तिहाई होगी । उत्तर-वाला तीर १00 फुट ऊंचा है और ऊपर से नीचे लो नाना प्रकार के पत्थर के घाटों से शोभित है जिन के ऊपर अगणित मंदिर और मसजिदें और भवन और हवेलियां दिखाई देती है । अगले दिनो में गंगा पार होने के लिये नाव का पुल था परन्तु आजकल रेलवे का बहुत अच्छा पुल बनाया गया है । जब साहिब लोगो ने इस को बनाने चाहा तब बहुत से हिन्दू यह गर्व करते थे कि गंगा माई कभी अंगरेजो के बश मे न आयेगी न

उन के लोहे के पुल को बह लेगी पर जब उन्हों ने देखा कि पुल सहज से बनता है तो उन्हों ने यह झूठ उड़ाया कि सरकार अगरेज ने नरमेघ करके पहिले गंगा जी को मनाया और तब पुल बनाया और बहुत से अज्ञानी लोग ऐसी बातों को अब लों मानते हैं।

यदि कोई नदी की ओर से दृष्टि करे तो औरंगजेब की मसजिद और उस के दो ऊंचे २ मीनार बहुत सुन्दर दिखाते हैं। जैसा कि ३१ पृष्ठ के चित्र में देख पड़ते हैं। इस स्थान पर विष्णु का बड़ा मंदिर खड़ा था और औरंगजेब ने उसे ढा दिया और उस के पत्थरों को लेकर इस मसजिद को बनाया। जो कोई इन मीनारों पर चढ़े सो भली भांति नगर को और आस-पास की जमीन को देख सकता है। २०० बरस हुए कि राजा जैसिंह ने एक तारागृह ज्यो-तिषियों के लिये बनवाया जो अब लों देखने योग्य है। उन दिनों में लोग दूरबीन अर्थात दूरदर्शक यन्त्र नहीं रखते थे सो ऐसे तारा गृहों को काम में लाना पड़ा।

काशी के बहुत गली कूचे ऐसे तंग हैं कि उन में गाड़ियां चल नहीं सकतीं और उन में से बहुधा बहुत टेढ़े तिरछे भी हैं। बहुत से घर पत्थर के बने हुए हैं और उन में ऐसे हैं जो पंचमहले छ महले तक ऊंचे हैं। कहीं २ ऐसे गृह हैं कि जो सड़क के ऊपर ही ऊपर जोड़ दिये गये हैं। नाना प्रकार की वस्तुन के लिये काशी में दूकाने हैं और वस के पीतल के बर्त्तन जो बहुत सुंदरता से काढ़े हुए रहते हैं और उस के कपड़े जो सोना चांदी से सुंदर रीति विभूषित हैं बहुत प्रसिद्ध हैं। गवर्नमेन्ट कालिज सन ई० १८५३ में बनाया गया। वह पत्थर का बना हुआ और देखने योग्य है। सन १७९१ में सरकार ने काशी में एक संस्कृत कालिज को स्थापन किया परन्तु आजकल संस्कृत की अपेक्षा अंगरेजी विद्या का पढ़ना अधिक काम आता है। छोटे २ मंदिरों को छोड़कर काशी में १५०० मंदिर और २०० मसजिदें होंगी। नगर की दक्खिन ओर दुर्गामंदिर है जिस में हर मङ्गल को जानवर चढ़ाये जाते हैं। वह मंदिर बन्दरों के मंदिर नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि वहां अगणित बन्दर मंदिर के आंगनों में झुण्ड के झुण्ड रहते हैं और लोग पुण्य की इच्छा से उन्हें खिलाया करते हैं। यदि कोई बटोही एक आना का दाना ले और आंगन में बिथ-रावे तो चारों दिशा से बन्दर दौड़े आते और अपने भाग के लिये लड़ते झगड़ते हैं। इन से मनुष्यों को इतनी हानि हुई कि कई बार वे वहां से दूर किये गये हैं। एक और मंदिर है जिस में बेचारी गाय पाली जाती है वहां बड़ी बेचैनी से पड़ी रहतीं और लोग उन की पूजा करते हैं और तौभी हिन्दू लोग अपने ज्ञान और समझ पर फूलते हैं।

वह मंदिर जिस का लोग अधिक आदर-सन्मान करते हैं वह है कि जो विश्वेश्वर और शिव का सुनहले मंदिर नाम से प्रसिद्ध है। लोग कहते हैं कि शिव काशी का नाथ है और कि नगर उस के त्रिशूल की नोक पर उठाया हुआ है। मंदिर कुछ देखने योग्य नहीं है परन्तु उस का कोट और गुंबज चमकीला है क्योंकि रञ्जीतसिंह जब रोगी हुआ तब उस ने उस की छत को तांबे की चट्टरों से मढ़वाया और इन चट्टरों पर पतले २ सोने के पत्तर चढ़ाये हुए हैं जिस से उस की चमक है। राजा की इच्छा यह थी कि इतना करने से मैं चंगा हो जाऊंगा परन्तु उसे



बन्दरों का मंदिर।

लाभ न हुआ । आंगन में बहुत सी पुरानी प्रतिमाये और मूर्त्ते है । यह उस मंदिर की थी जिस को औरंगजेब ने गिरा दिया । मंदिर के समीप ज्ञानबापी नाम एक कुआ है जिस में लोग कहते है कि शिव का निवास है सो उस देवता पर चढाने की इच्छा से फल फूल को यहा लो कुएं में डालते कि उस का जल बहुत ही दुर्गन्धी हो गया है । इस से भी आदर योग्य मणिकर्णिका कुआ माना जाता है क्योंकि कहते है कि विष्णु ने अपना चक्र डालकर उस को खोदा और जब पानी न मिला तब अपनी देह के पसीने से इस को भर दिया । इस को देखकर वह प्रसन्न हो नाचने लगा और उस के कान से एक गहना कुए में गिरा जिस से उस का नाम प्रसिद्ध हुआ । यह वह स्थान है जहा यात्री पहिले जाते क्योंकि उन का भरोसा है कि इस दुर्गन्धी जल में इतना प्रताप है कि उस से बरसो का पाप मिटाया जायगा और इस लिये अज्ञान लोग उस का मुक्ति क्षेत्र नाम देते है । एक और स्थान है जहां यात्री जाते जिस को दशाश्वमेध घाट नाम देते है क्योंकि कहते है कि ब्रम्हा ने वहा दस घोडो का चढावा चढाया । यह औरंगजेब की मसजिद के पास एक स्थान है और हिन्दू लोग मानते है कि वहां पाच नदियां मिलती है और इस लिये उस को पंचगंगाघाट नाम देते है परन्तु सत्य पूछो तो केवल एक गंगा वहा दिखाई देती है ।

साल भर यात्रियो की बडी भीड काशी में आया जाया करती है और त्योहार के समयो मे बहुत बडी भीड हो जाती है । लोग समस्त हिन्दुस्तान के दूर २ गांवो से आते है और उन में से बहुत कावरो पर गंगाजल के दो घडे वा शीशे बांधके उसे अपने घरो को ले जाते हैं । पंडे लोग गंगा और काशी का महात्म बहुत बढाके कहते है । वे कहते है कि गंगा तट और पंचकोशी सडक के बीच में जितनी जमीन है सो ऐसी पवित्र है कि उस में जो कोई मरे चाहे हिन्दू अथवा मुसलमान अथवा ईसाई हो सीधे वैकुंठ को चला जायेगा । चाहे वह धर्म्मी अथवा अधर्म्मी हो चाहे अशुद्ध और पापी और खूनी हो तौभी उस को मुक्ति मिलेगी । इस का फल यह है कि जो जीवन भर बड़े कपटी और छली और उपद्रवी थे सो मरते समय यदि काशी तक पहुंचे तो समझते है कि बस मेरा अर्थ सुफल हुआ अब मेरे लिये कुछ डर नहीं मैं स्वर्गधाम को जाऊंगा । अब सोचिये कि ऐसे झूठे भरोसे के रखने से कितनो के पाप बहुत बढ गये और कितनो का विनाश हो चुका है । जो हिन्दू ज्ञानवान है सो जानते हैं कि ऐसा भरोसा रखना व्यर्थ है । शुद्धितत्व में एक अर्द्ध श्लोक में यो लिखा है ।

कुर्य्यात् पुन पुन पाप न च गंगा पुनाति ता ।

जिस का अर्थ यह है कि जो कोई बेर २ पाप करे उसे गंगा भी पवित्र नहीं करेगी ।

श्लोक ।

गंगातोयेन कृत्स्नेन मृद्भारैश्च नगोपमै ।
आमृत्यो स्नातकश्चैव भावदुष्टो न शुध्यति ॥

जिस का अर्थ यह है कि जिस का मन पाप करने से मलीन है चाहे मिट्टी के पहाड़ से देह को मले और समस्त गंगा के जल से अपने को धोवे तौभी वह मलीनता न जायेगी । और यह बात देखने में भी आती है क्योंकि देखिये काशी में कितने बनिये, दूकानदार आदि है जो रोज गंगा में नहाते और जीवन

काशी के कितने मन्दिर।

भर पंचकोशी के भीतर रहते है और तौभी जीवते मरते छली और उपद्रवी रहते है और गंगापुत्र जो विशेष काशी महात्म के सिखानेहारे है और जिन का विशेष काम वहा की पूजा स्नान दान पुण्य करना कराना है सो बडे लालची लोभी प्रसिद्ध है। जो बेचारे यात्रियों पर बडी निर्दयता करते है सो काशी से मुक्ति कहा पा चुके है।

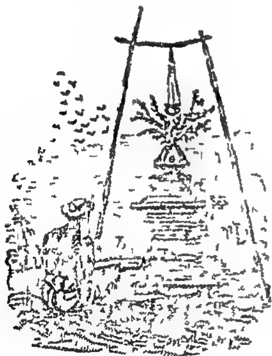
कई सौ बरस लो काशी बौद्धवालों का नगर था। सारनाथ मे जो उस के समीप है



ब्राह्मण।

सन ई० से ५00 बरस पहिले गौतम अपनी शिक्षा देने लगा। वह स्थान जहां वह रहता था हरिण का रमणा कहलाता था। बौद्ध-मत के गृहों के अगणित पत्थर अब लों वहां पडे हैं।

काशी कलकत्ते से ४०६ मील है और रेल पर तीसरे दर्जे का टिकट ६ रुपये को मिलता है। वह बम्बई से ९४५ मील दूर है और रेल का टिकट बारह रुपये पन्द्रह आने में मिलता है। मन्दराज से १५५0 मील दूर है और रेल का टिकट तेईस रुपये तेरह आने मे मिलता है। काशी में २,२२,५00 निवासी हैं।

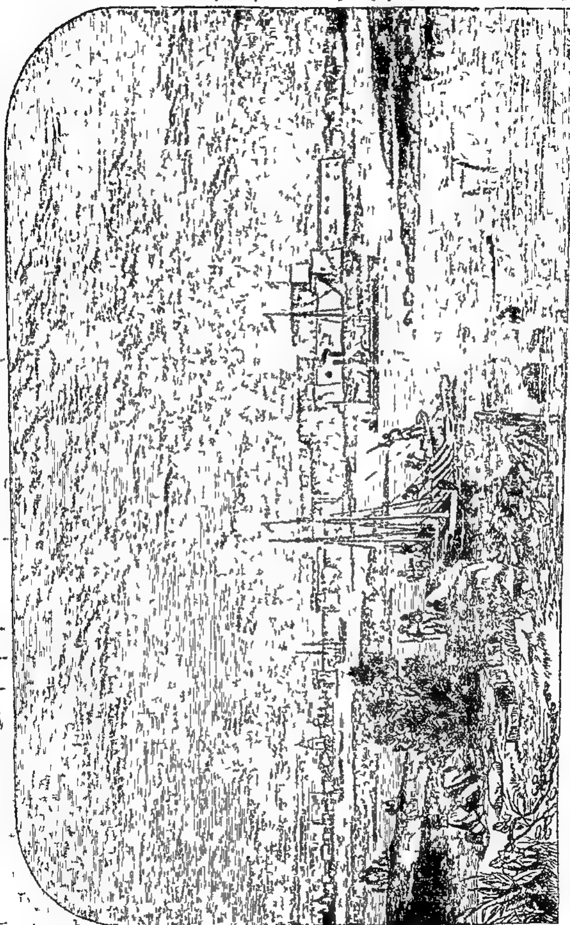


तुलसी की पूजा।

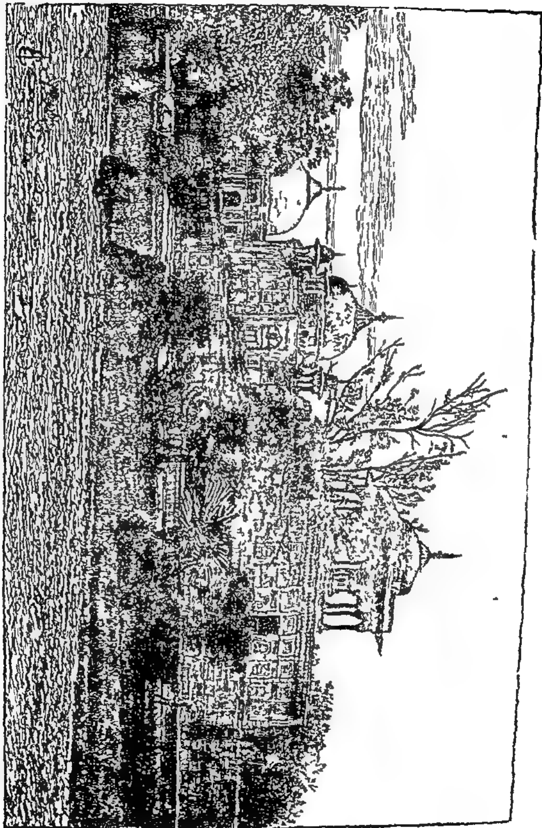
फिर गंगा नदी चढके हम दक्खिन तीर पर चुनार नाम एक प्राचीन गढ को देखते हैं। उस के समीप अच्छे पत्थरों की खान है और यहां से पत्थर खुदके दूर २ नगरों को भेजे जाते हैं। चुनार से बीस मील पच्छिम की ओर गंगा के उसी तीर पर मिरजापुर नगर है। रेलवे खुलने से पहिले यहां अन्न का बड़ा ब्योपार होता था परन्तु अब वह ब्योपार और नगरों को उठ गया है। मिरजापुर के जिले के दक्खिन में पहाडिस्थान है और ऐसे बन हैं कि जिन में बाघ फिरा करते हैं।

इलाहाबाद का वर्णन।

इलाहाबाद जो पूर्वकाल में प्रयाग नाम से प्रसिद्ध था वहां बना है जहां गंगा यमुना नदियां मिली हैं। प्रयाग बहुत प्राचीन नगर है। महाभारत मे वहां की भूमि वारणावती कहलाती है और कहते हैं कि जब पाडव लोग अपने देश से बिदेशी किये गये तो वहां आके रहे। सब से प्राचीन लक्षण जो अब मिलता है सो वह ४२ फुट ऊंचा खंभा है जो आजकल किले में दिखाई देता है जिस को महाराजा अशोका ने २४0 बरस मसीह से पहिले खडा किया। सन ई० ११९४ में इलाहाबाद पठानों के बश में आया। सन ई० १५२९ में बाबर बादशाह ने उसे पठानों के हाथ से छीन लिया और सन ई० १५७५ में अकबर बादशाह ने किले को जो अब है बनवाया और नगर का इलाहाबाद नाम रक्खा। सन १८0१ ई० मे अवध के नवाब ने इलाहाबाद को सरकार अंगरेज के हाथ में दे दिया और बलवे के पीछे अर्थात सन ई० १८५८ में वह पश्चिमोत्तर देश का मुख्य नगर हो गया। नगर की सडकें बहुधा तंग और टेढी तिरछी हैं। जहां साहिब लोग रहते हैं तहां की सडकें चौडी और अच्छी हैं और उन में बहुत से वृक्ष छाया के लिये लगे हुए हैं। नगर छावनी और स्टेशन सहित इलाहाबाद फैला हुआ है अर्थात कुछ आठ और ६ मील चौडा है।



प्रयाग का गढ़।



खुसरूबाग के मकबरे ।



अक्षयबट—प्रयाग।

को बनाती है और जब कोई यात्री करे कि कोई तीसरी नदी नहीं है, पंडे लोग बताते है कि देखो मन्दिर भोतें कैसी गीली रहती है। इस मन्दिर एक और पूजा की वस्तु वह अक्षयबट जिस को बताते कि १५०० बरस से अब हरा है और लोग उस की पूजा करते और उस के समीप दान दक्षिणा लेने लिये पंडा बैठा रहता और उस के दीप जलता रहता है। सत्य पूछो तो वृक्ष का एक टुकड़ा है जो छिलका यहां रक्खा जाता और जब सड़ने लगता तो पडे लोग चुपके से उसे बदल देते है

और कितने और अच्छे २ पत्थर के बने हुए गृह है। इलाहाबाद की यूनीवर्सिटी और कौंसिल अर्थात् राजसभा दोनो सन ई० १८८७ मे स्थापन किये गये। खुसरूबाग एक स्थान देखने योग्य है जो कैखुसरू जहांगीर बादशाह के दुष्ट बेटे के नाम से कहलाता है। उस में तीन मकबरे पत्थर के बने हुए दिखाई देते है। बीच का मकबरा जो ऊंचे चबूतरे पर बना है खुसरू का है। चित्र में उस की माता का मकबरा बाये हाथ पर और उस के छोटे भाई का मकबरा दहिने हाथ पर दिखाता है। जब कोई नौका पर सवार हो गंगा नदी पर चलता है तो इलाहाबाद का गढ अच्छी रीति से दिखाई देता है। जहा गंगा यमुना मिली है तहा कुछ ऊंची जमीन थी जिस के ऊपर किला खडा है। किले के भीतर चलो तो असोका के खम्भ के समीप एक स्थान है जिस मे हिन्दुओं का एक मन्दिर जमीन के नीचे पाया जाता है। यह शिव का मन्दिर है और कहते है कि वहां तीसरी नदी अर्थात सरस्वती गंगा और यमुना मे मिलकर त्रिवेणी

एक साहिब ने अपनी उंगली के नख से को परख लिया और उसे सूखा पाया। मन्दिर में एक मकुन्द नाम मनुष्य की है जिस के विषय कहते है कि यह परमहंस था परन्तु एक बार जब दूध छाने पी लिया तब अकस्मात गाय का बाल निगल गया सो इस को महापाप के उस ने अपने प्राण को त्यागा।

हिन्दू लोग त्रिवेणी को स्नान के लिये स्थान समझते है। वहा के मेले मे हर हजारो यात्री एकट्ठे होते है। पहिले यह कुरीति प्रचलित थी कि यात्री में डूबके प्राण त्यागते थे इस आसरा से ऐसा करके हम सीधे बैकुंठ को चले जायेंगे दस्तूर यह था कि यात्री कई ब्राह्मणो के जो नाव में सवार होते नदी पर बैठाया था। उस का एक हाथ घड़े मे बाधा था और दूसरे हाथ मे कटोरा रहता पहिले जब घड़ा खाली था तब उस को पानी मे सभालता था। जब वह धीरे कटोरा लेके घड़े को भरता जाता था

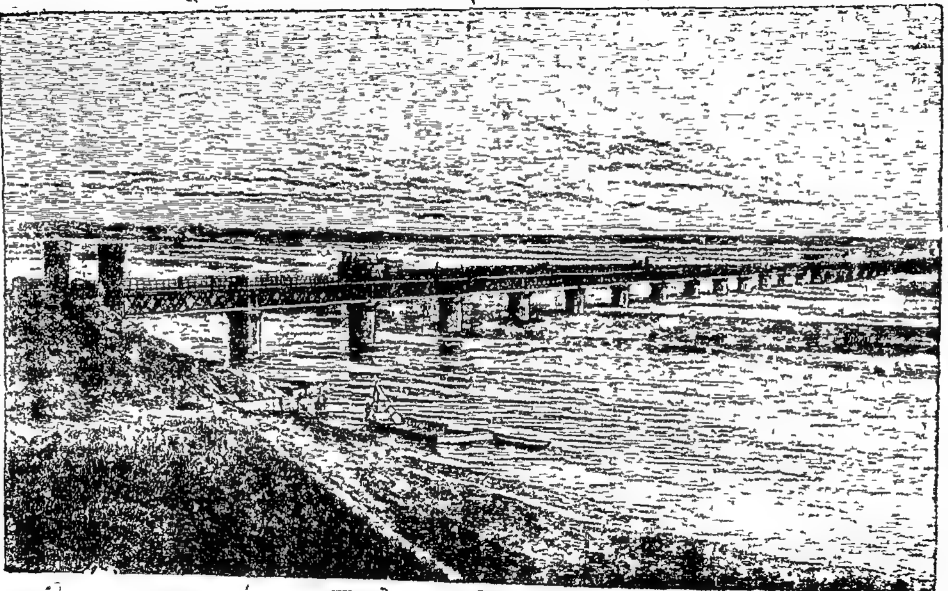


गंगा में प्राण त्यागना ।

घड़ा उसे पानी के नीचे खींच लेता था । यह बेचारे न जानते थे कि अपने प्राण का नाश करना पुण्य नहीं वरन महापाप है । इलाहाबाद नगर के निवासी १,८०,००० हैं ।

इलाहाबाद से पश्छिम १२० मील पर गंगा नदी के तट पर कानपुर नगर मिलता है । यह नगर नया है । अवध के समीप होने के कारण से सरकार ने वहां एक छावनी बनाई और तब से दो तीन रेलवे भी वहां मिली हैं । वहां के लोगों की गिन्ती आजकल बहुत बढ़ती जाती है। उस मे बहुत धूल उड़ा करती है क्योंकि बहुत कंकर की सड़के बनी हैं जिन की धूल हवा से बहुत उड़ाई जाती है । सन ई० १८८१ में निवासियों की गिन्ती १,८८,००० थी । यह वह स्थान है जिस में १८५७ ई० में नाना साहिब ने कपट से सैकड़ों साहिबों को घात किया । बात यह थी कि जो देशी पल्टने वहां थीं उन्हों ने बलवा किया और सरकारी खजाने को लूट लिया और बन्दीगृह को खोल दिया और साहिब लोगों के घरों में आग लगाई । ह्वीलर साहिब १५० बलायती योद्धाओं को और ३३० मेमसाहिबों और बालकों को संग लेके ऐसे स्थान मे गये जहां दो बारिके ५ फुट ऊंची भीत से घिरी थीं । नाना साहिब जो मरहठा ब्राह्मण था कानपुर से छ मील दूर बिठूर नाम एक स्थान में रहता था । वह साहिब लोगों से बड़ी मित्रता करता था और उन के संग आखेट किया करता था और अपने घर में उन को बार २ नेवता देता था । उस के उसकाने से सिपाहियों ने ह्वीलर साहिब पर चढ़ाई किई । ह्वीलर साहिब बीस दिन तक उस स्थान की रक्षा के लिये बड़ी वीरता से लड़ता रहा परन्तु पीछे जब बहुत गोरे लोग मारे गये और साहिब आप घायल हुआ और तब नाना साहिब ने कपट से वचन दिया कि मै तुम सभों को नौकाओं में सवार कराके इलाहाबाद को भेज दूंगा तब ह्वीलर साहिब ने उस के वचन को ग्रहण किया । पर ज्योंहीं अंगरेज नौकाओं में सवार हुए त्योंहीं उन पर तोप और बन्दूके छोड़ी गईं और वे बिन सहायता के मारे गये । एक नौका उस आफत से बच निकली परन्तु सिपाहियों ने उस का भी पीछा किया और वह नदी के बीच में डुबाई गई । जो पुरुष स्त्रियां पकड़े गये सो नगर के एक घर में उन बन्धुओं के संग जो फतहगढ़ से आये थे बंद किये गये ।

इतने में हावलाक साहिब गोरे लोगों की सेना सहित कानपुर की ओर आगे बढ़ते जाते थे । इस बात को सुनकर नाना साहिब ने अपने सिपाहियों को आज्ञा दिई कि जाओ उन बन्धुवे साहिब लोगों को घात करो । सिपाही लोगों ने कहा कि हम घातक नहीं हैं । हम यह न करेंगे । सो उस ने नगर के कसाई लोगों को बुलवाया और ऐसी आज्ञा उन्हें दिई । उन्हों ने ऐसा किया और मृतकों को समीप के एक कुए में डाल दिया और जब गोरे लोग कानपुर में पहुंच गये तो देखते



कानपुर के पास गंगा पर रेलवे का पुल।

गया है कि वह स्थान जहां बन्धुवे पड़े थे अब घिनौनी रीति से लोहूलुहान है। इस कपट और क्रूरता से नाना साहिब की जाति में कुछ कलंक न लगा परन्तु यदि किसी साहिब के लड़के के हाथ से निर्मल जल पी लेता तो उस की जाति बिगड़ जाती।



मरे हुए साहिबों का मकबरा।

उस कुए की मुंह पर उन लोगों के स्मरण के लिये जो वहां मारे गये एक गृह पत्थर का बनाया गया जैसा इस चित्र में दिखाई देता है। वह प्रतिमा स्वर्गदूत रूप बनी है जिस के हाथ में ताड़ की पत्तियां अर्थात विजय के चिन्ह हैं और नीचे, यह लिखा है कि यह उन लोगों के सदा के स्मरणार्थ है जो मसीही लोग और विशेषकर स्त्री बालक होकर नाना धोंधूपन्थ के सेवकों से जुलाई की तारीख १५ को सन ई० १८५७ में बड़ी क्रूरता से घात किये गये और जीवते मृतकों के संग इस कुए में डाले गये।

उन दिनों के बलवा के कारण से ख्रीष्टियान लिटरेत्यूर सोसैटी भी अर्थात वह सोसैटी जिस के यत्न से यह पुस्तक छापी जाती है स्थापित हुई। उस सोसैटी का मनोरथ यह है कि हिन्दुस्तान के लोग मसीही धर्म्म का ज्ञान पाकर जान लें कि यह धर्म्म हमारा बैरी नहीं है बरन इस से हमारे दोनों लोक का लाभ है।

अवध का वर्णन।

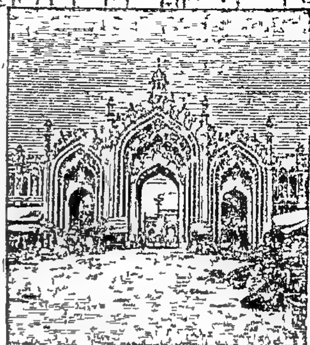
कानपुर के समीप एक लंबा लोहे का पुल रेलवे के लिये बना है। उस के द्वारा से गंगा पार जाकर हम अवध देश में प्रवेश पाते हैं। अवध एक स्थान है जहां प्राचीन काल में हिन्दुओं का अधिक शिष्टाचार पाया गया। वहां कोशला राज्य था जिस का मुख्य नगर अयोध्या था जिस की महिमा रामायण में अद्भुत रीति से गाई जाती है। रामायण के आरंभ में हम पढ़ते हैं कि उन दिनों में अयोध्या नगर का कैसा ऐश्वर्य्य और उस के राजा दशरथ का कैसा अधिकार था। ज्ञानवान यह बता नहीं सकते हैं कि रामायण का वृत्तान्त कहां लों सत्य है और कहां लों काव्यरचकों ने लोगों के मनों के बहलाने के लिये इन अद्भुत बातों को रचा है। हां अयोध्या नाम नगर और दशरथ नाम उस का राजा हुआ होगा परन्तु यह हम मान नहीं सकते हैं कि हनूमान नाम कोई बन्दर था जो चटानों को सिर पर उठा सकता था और सूर्य्य को बगल में दबा सकता था और यह जो लंका के विषय लिखा है कि सोने का टापू है जिस में राक्षस निवास करते हैं सो बिलकुल झूठ है। लंका बहुत दिन से सरकार अंगरेज के वश में है और उस के निवासी ऐसे लोग हैं जैसा हिन्दुस्तान

मे रहते है जिस से प्रगट है कि रामायण का वृत्तान्त मन बहलाने की कहानी है । कोशला देश वह स्थान था कि जिस मे पूर्वकाल मे बौद्धमत विशेष रीति से फैल गया । वह कितने हिन्दू राजाओ के बश में सन ई० ११९४ तक रहा । और तब मुसलमानो ने उस पर चढाई किई । सन ई० १७३२ में सादत अलीखा नाम एक फारसी महाजन अवध का सूबेदार बनाया गया और राज्य बहुत दिन लों उस के घराने के बश में रहा । सन १८५६ ई० मे अगरेजो ने राज्य को ले लिया और सूबेदार को कलकत्ते मे पिन्शन दिई सन १८८७ में वह मर गया । अवध १८७७ लो एक कमिश्नर के अधिकार मे रहा और तब नार्थ- वेस्ट प्राविन्सज मे मिलाया गया ।

अवध इतना बडा है जितना लंका अर्थात उस मे २४ हजार वर्ग मील जमीन है । उस मे एक बड़ा मैदान है जो गगा और समुद्र की ओर झुका हुआ है उस मैदान की दक्खिन वाली सीमा गगा नदी है और उस में तीन नदियां अर्थात गोमती घाघरा राप्ती बहती है । अवध की मिट्टी बहुत फलदायक है और उस मे ऊसर जमीन कम है । उस में १२,५०,००० निवासी है अर्थात ५८२ आदमी हर एक वर्ग मील में है और हर दस आदमियों मे से नौ हिन्दू है ।

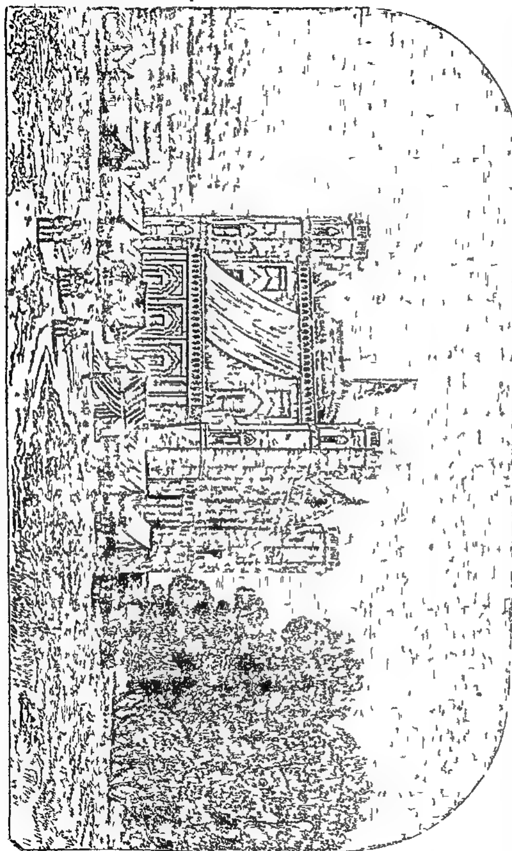
लखनऊ का वर्णन ।

लखनऊ अवध का मुख्य नगर है और उस के और कानपुर के बीच ४८ मील रेलवे है । वह गोमती नदी के तट पर बना है । लखनऊ प्राचीन बस्ती नही है तौभी उस में २,७३,००० निवासी है अर्थात उस की गिन्ती



लखनऊ का एक फाटक ।

मन्दराज की गिन्ती के समीप है । कहते हैं कि इस स्थान पर लछमण राम के भाई ने गाव बनवाया परन्तु अब का जो नगर है केवल दूसरी सदी से चला आया है । जब यात्री दूर से लखनऊ को देखे तो ऐसा देख पडता कि बडा सुन्दर नगर है कि उस के ऊंचे ऊचे श्वेत २ गृह दूर से चमकते है और ऊचे २ गुम्बज और मीनारे भी दिखाई देते है परन्तु जब हम पास आते तो जाना जाता है कि यह श्वेत पत्थर के नहीं बने पर चूने से फेरे हुए घर है और बहुत से बड़े २ घर बहुत कच्ची रीति से बने है । एक बहुत बडा इमामबाडा प्रसिद्ध है जो सन ई० १७८४ मे बडे काल में बना था इस मे एक बडा भारी कमरा है जो आजकल लडाई की सामग्री से भरा हुआ है । गोमती के तट पर छत्रमंजिल नाम एक बडा महल है जिस के ऊपर सुनहला छाता धूप मे चमकता है । बाये ओर पर दो मकबरे है और उन के समीप केसर बाग है जो पिछला भवन है जिसे अवध के सूबों ने बनवाया था ।


लखनऊ का एक भवन।

लखनऊ के समीप मार्टिनियर नाम एक बडा भवन है जिस को मार्टिन साहिब ने बनवाया। मार्टिन एक फ्रांसीसी योद्धा था जो हिन्द मे आके जनरैल हुआ और बहुत धनवान भी हो गया। उस के मरने पर वह भवन स्कूलघर बनाया गया जिस मे प्रतिवर्ष १२० लडके पाले और पढाये जाते है। लखनऊ के बडे २ बाग और रमणे और बारी प्रसिद्ध है। रेजीडेन्सी नाम एक स्थान है जो इस कारण से बहुत विख्यात है कि बलवे के दिनो मे वहां बहुत दिन लो लडाई होती रही और सन ई० १८५७ मे एक हजार अंग्रेज स्त्री बालक और देशी नौकरो सहित रक्षा के हेतु वहा आये। उन की सहायता के लिये सर हेनरी लारन्स और ५०० गोरे

शाहमंजिल वह स्थान है जहा अवध के सूबे अपने दस्तूर पर बनपशुओ को लडाते थे। और इतने देशी सिपाही भी जो सच्चे निकले छ महीने लो अगणित वैरियो से लडते

और उस स्थान को बचाते रहे। वैरियों ने जमीन में सुरंग खोद खोदकर चाहा कि भीतों को बारूत से गिरा दें और चारों ओर से रात दिन उन पर बन्दूक और तोप छोड़ते रहे तौभी उन्हें उस स्थान से निकाल न सके। स्त्री बालक और जो घायल किये गये सो तहखानों मे रक्खे गये। एक दिन एक छोटी लड़की भीतर के आंगन मे खेलती थी और एक गोली उस के सिर में लगी और वह मर गई। सब लोग भूख प्यास से बहुत सताये गये। सर हेनरी लारन्स जो लार्ड जान लारन्स का भाई था एक कोठरी मे खाट पर पड़ा था कि वहां गोली से घायल हुआ और वह मर गया। उस ने कहा कि मुझे दफनाके मेरी कबर के पत्थर पर यह लिख देना कि यहां हेनरी लारन्स की कबर है जिस ने अपना यथोचित कर्त्तव्य करने चाहा। उस के मरने के तीन महीने पीछे हेवलाक साहिब



हेवलाक साहिब।

इन लोगों की रक्षा करने के लिये आया परन्तु जिस दिन कि वे लोग उस स्थान से निकल गये हेवलाक साहिब भी मर गया। मरते समय उस ने एक मित्र से कहा कि ४० बरस से मै ने अपने जीवन को ऐसा सुधारा कि जिस्तें काल के समय में न घबरा जाऊं। वह स्थान जहां इन लोगों ने ऐसी वीरता दिखाई थी आजकल बहुत टूटा फूटा पड़ा है।

अयोध्या जो पूर्वकाल में मुख्य नगर था सो लखनऊ से साठ मील पूर्व ओर है। वह घाघरा नदी के तीर पर बना था परन्तु आजकल केवल जंगल में पुराने रोड़ों के ढेर पडे है। प्रगट है कि एक समय में वह एक बहुत ही बडा और देखने योग्य नगर था। आजकाल दो नगर उस स्थान पर पाये जाते है अर्थात अयोध्या और फैजाबाद। यदि बटोही लखनऊ को छोडके गंगा पास लौट आवे और नौका पर सवार होके आगे बढे तो कानपुर से ७० मील दूर वह नदी को छोड़के चार मील खेतो में चलेगा तब कन्नौज देखने में आयेगा जो काली नदी के पच्छिम तीर पर बना था। पूर्वकाल में गगा वहां नगर के पास बहती थी परन्तु आजकल चार मील दूर हट गई है। पूर्वकाल मे कन्नौज एक बड़े राज्य का मुख्य नगर था और वहां गुप्त नाम महाराजा लोग हिन्द के दूर २ स्थानों तक अधिकार रखते थे। वे महाराजाधिराज की पदवी रखते और बहुत से राजा उन के वश मे थे। प्रगट है कि मसीह से पहिले ६00 बरस उन का अधिकार अधिक था। सन ई० १०१८ मे महमूद गजनवी ने नगर को ले लिया परन्तु उसे न लूटा। सन ११९४ में वह महम्मद गोरी के वश में पड़ा। आजकल उस के पुराने खडहर पांच गांव के खेतो में दिखाई देते है। आजकल उस नगर की बहुत दुर्दशा है कि निवासी पुराने गृहों की ईंटो से अपने

लिये झोपड़ियां बनाकर रहते है। पूर्वकाल में ब्राह्मण लोगों का कन्नौज में बहुत आदर-सन्मान किया जाता था और कहते हैं कि वहां से पांच ब्राह्मण कलकत्ते में गये और कि आजकल जितने ब्राह्मण बंगाल में पाये जाते हैं सो इन पांचो के वंश से है। कानपूर से १०० मील दूर फरुखाबाद एक नगर है जो प्राचीन नहीं है और उस के समीप फतहगढ़ नाम एक छावनी है। पिछली सदी में एक नवाब वहां बहुत अधिकार रखता था परन्तु बलवे के दिनो में उस ने सरकार अंगरेज का साम्हना किया और लड़ाई में भगाया गया।

गंगा की नहरो का वर्णन।



अकाल के मारे कंगाल लोग।

हिन्द देश के काश्तकारो को इस बात से बहुत कष्ट है कि जल के बरसने में ठिकाना नहीं है। एक साल बरसे और दूसरे साल न बरसे और इस लिये कहीं २ भारी अकाल पड़ जाता है। सो बरस हुए कि लोग यह सोचते थे कि हा परमेश्वर ने जल न दिया तो हमें कुछ करना नही है। जमीन से कुछ उत्पन्न नही होता और लाखो पशु और मनुष्य मर जाते हैं और उन की कुछ सहायता करनी अथवा उन के लिये कुछ उपाय करना अनहोनी बात है। पिछली सदी में बंगाल देश में एक ऐसा अकाल पड़ा कि जिस का वर्णन किसी देखनेहारे ने यों किया है कि बरसात में पानी न पड़ा सो जाड़े में और गरमी में तंगी बढ़ती गई। कंगाल लोग बिन सहायक भूखों मरते थे। किसान लोग अपने गाय बैलो को बेचते थे क्योंकि उन्हें खिला न सकते थे। वे अपनी गाड़ियो और हलो और काम करने की समस्त सामग्री को बेच डालते थे। जो अन्न बोने के लिये रक्खा गया उसी को खाते थे। वे अपने बालको को बेचते थे पर कोई मोल न लेता था। वे जमीन की घास और वृक्षो की पत्तियो को खाने लगे उस से पहिले कि एक दूसरी बरसात के दिन आवें और कलकत्ते में यह सन्देश आता था कि ऐसे स्थान हैं जहां बेचारे कंगाल लोग मृतको की लोथो को खाते हैं। कौन कह सकता है कि उन आपत्ति के दिनो में मनुष्य को क्या २ कष्ट हुआ। इस अकाल के दो बरस पीछे वारन हेसटिङ्ग ने उस देश की सैर किई और उस ने यह हिसाब किया कि तीन निवासियो में से एक अकाल में नाश हुआ। यदि वह लेखा ठीक हो तो सौ लाख आदमी अकाल से मरे। तिस के उन्नीस बरस पीछे जब लार्ड कार्नवालिस ने बंगाल में सैर किई तब उस ने कहा कि मेरी समझ में बंगाल की एक तिहाई जमीन उस अकाल के मारे

उजाड़ पड़ी है और उस में बनपशु फिरा करते है।

सन १८३७ और १८३८ मे उत्तर हिन्दुस्तान में भारी अकाल पडा यहा लो कि बहुत वरसो तक जब किसी दिहाती से उस की अवस्था पूछी जाती थी तब कहता था कि मै बडे अकाल के इतने बरस पहिले वा पीछे उत्पन्न हुआ। इस अकाल के मारे सरकार ने वेचारे लोगो के प्राण बचाने के लिये नहर खुदवाना आरंभ किया। सन १८४२ ई० मे वह गङ्गा की नहर को खुदवाने लगी और सन १८५४ मे वह खोल दिई गई थी। सन १८६६ ई० मे उस की एक बड़ी शाख आरंभ हुई। ऊपरवाली नहर हरद्वार के समीप गङ्गा नदी का आधा जल लेके उसे उस जमीन मे जो गङ्गा यमुना नदियों के बीच मे है खेत सीचने के लिये फैला देती और कानपुर मे फिर गङ्गा से मिल जाती है। नीचेवाली नहर राजघाट से पानी लेती और दोआबा के बड़े भाग को सीचती है। इन दो नहरों मे १०० मील नहरों के और ४,४०० मील रजबहो के पाये जाते है और कहते है कि हर साल के सिंचवाने से ४,००,००,०० रुपये का अन्न उत्पन्न होता है। जब पानी के न बरसने से चारो ओर की भूमि सूखी पड़ी है तब यहा की भूमि अन्न से लहलहाती है। जगत भर में ऐसी अच्छी और लाभदायक नहरे न होंगी और इन से एक और लाभ यह होता है कि इन मे बहुत सी नौकाये चलती जो भाडो और यात्रियों के पहुचाने में काम आती।

गंगा तीर पर रूडकी नाम एक सरकारी कालिज है जहां बड़े २ कारखाने है जो नहर को खुदवाने आदि कामों मे लाभदायक है।

हरद्वार गंगा नदी पर हिन्दू लोगों का बड़ा तीर्थस्थान है। यह वह स्थान है जहां गगा पहाडो से निकलकर मैदान में बहने लगती है। विष्णु के और शिव के पुजेरियो में झगड़ा है क्योकि एक कहता कि यह हर का द्वारा और दूसरा कि यह हरि का द्वारा है परन्तु सत्य पूछो तो उन दिनो मे जब न शैव न वैष्णव जैसा अब है पाये जाते थे तब भी हिन्दू लोगो ने इस को तीर्थस्थान मान लिया। विशेष स्नान करने की जगह वह घाट है जो गंगाद्वार नाम मन्दिर के आगे बना है। उस घाट की ऊपरवाली भीत में एक पदचिन्ह पत्थर मे खुदा हुआ है और लोग इस को विष्णु चिन्ह नाम देके पूजते है। जब कि स्नान करने का ठीक समय आ पहुचता है तब हर एक यात्री यह चाहता है कि मै ही पहिले जल मे पहुंचू और इस इच्छा से बहुत लोग एक दूसरे से लडते और एक दूसरे को दबा देते है। सरकार ने वहा कान्सटिबिल रक्खे है जिस्ते कोई अपने भाई की हानि न करे परन्तु कभी २ सिपाही भी भीडो को रोक नही सकते हैं। सन १८१९ मे बडी भीड थी और चार सौ तीस आदमी दबके मर गये जिन मे कितने सिपाही भी थे जो भीड़ को रोकने चाहते थे। इस आपद के कारण से सरकार ने सौ फुट चौडा एक पक्का घाट बनवाया है। वहा का मेला वैसाख के पहिले दिन मे होता है क्योकि हिन्दू लोग कहते है कि उसी दिन गङ्गा जी आकाश से उतरी थी। वहा बारह बरस के पीछे कुम्भ का मेला होता है जिस मे बड़ी भीडे एकट्ठी होती है।

गगा का वर्णन।

अब हमारा बटोही समस्त गंगा नदी को देख चुका है उस स्थान से लेके जहा सागर


हरद्वार का घाट।

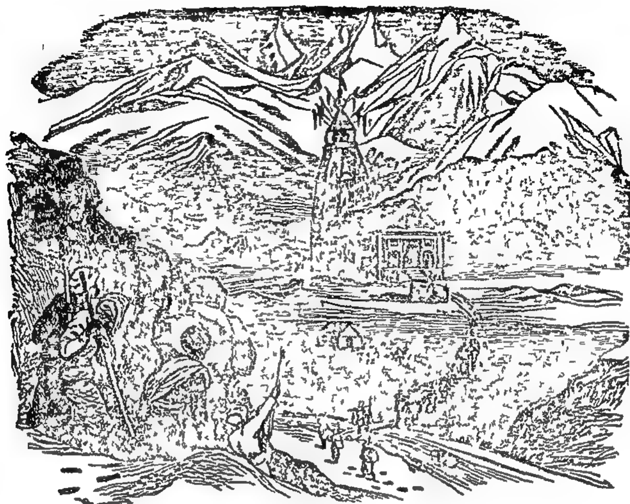
है वहा से हरद्वार लो बहुत ढालू है। हरद्वार मे वह १०२४ फुट ऊंचा है। काशी में वह ३५० फुट ऊंचा है। गंगा की लंबाई १५६० मील है परन्तु आमेजन मिसिसिप्पी आदि कितनी और नदिया इस से लंबी पाई जाती है। आमेजन की लंबाई गंगा की लंबाई से दूनी अर्थात ४,००० मील है।

सब देशों में यह रीति पाई जाती है कि अनपढे लोग जिन्हें ईश्वर का कुछ ज्ञान नहीं है ऐसी वस्तुन को जिन्हें लाभदायक समझते है पूजने लगते है। मिस्र देश मे नील नदी बहुतही

के निकट वह समुद्र मे जा बहती और हरद्वार लो जहा वह पहाडिस्तान से निकलती है। यदि कोई गंगा के सोते को देखने चाहता है तो पहाड पर चढना पडेगा। वहा गङ्गोत्तरी नाम एक मंदिर बना है और उस के समीप हिम का बहुत ढेर लगा हुआ है जिस के नीचे से गंगा का सोता बहता है। उस स्थान पर उस का सोता भागीरथी कहलाता है। वहा के ब्राह्मण लोग उस सोते के जल को शीशियों में भर देते और छाप लगाते और यात्रियों के हाथ से दूर २ स्थानों में पहुंचा देते है। उस गङ्गोत्तरी के समीप भागीरथी नदी में दे और नदिया अर्थात जान्हवी और अलकनन्दा मिली है तीनों से गंगा नदी बनती है। गंगा का सोता १३,८०० फुट ऊंचा

लाभदायक थी वरन इस के बिना समस्त देश उजाड हो जाता क्योंकि वहा बहुतही थोडा पानी बरसता है सो वहा के निवासी नदी को देवता करके मानते थे। हिन्दुओं में यह दस्तूर है कि हर एक वस्तु को चाहे स्वर्ग में चाहे पृथिवी में हो पूजने को चाहते है यहा लो कि बढई अपने बसूले को और स्त्री अपनी हाडी को पूजेगी सो कुछ आश्चर्य्य की बात नही है कि गंगा को बहुत लाभदायक जानकर पूजते है।

वेदों में गंगा का नाम केवल दे। बार आता है। उन दिनों मे उस का इतना आदरसन्मान नहीं किया जाता था क्योंकि आर्य्य लोग जो उत्तर से आये थे गंगा तट तक न पहुंचे थे। उन की समझ में इण्डस


गङ्गोत्तरी का मन्दिर ।

नदियों की रानी थी और सरस्वती जो उन को पूर्वी वैरियों से बचाये रखती थी उन की देवी कहलाती थी। वह अद्भुत कहानियां जो गंगा के विषय कही जाती है सो पहिले महाभारत और रामायण मे पाई जाती है और पीछे पुराणो मे बहुत बढाई गई यहां लो कि गंगा एक देवी और हिमालय की बेटी बताई गई है । पुराणो मे लिखा है कि गंगा विष्णु के पग की उंगली से बहती है । दूसरे मे लिखा है कि वह आकाश से गिरती और गिरने की चोट को कम करने के हेतु शिव अपने सिर की चोटी पर उसे ग्रहण करता है । तीसरे मे लिखा है कि गंगा गोमुख से बहती है । फिर कहते है कि जो गंगा में नहाता विशेषकर बडे त्योहारो के समय मे सो अपने आप को धोता है । जो उस के तीर पर मरे और वहां भस्म किया जाये सो सीधे वैकुण्ठ को जाता है । जो कोई १०० कोस दूर हो और गंगा २ नाम पुकारे तो उस के तीन जन्म के पाप कट जायेंगे । यह कहानियां केवल अज्ञानी लोग मान सकेंगे ।

कवित्त ।

चढ गजराज चतुरंगिणी समाज संग जीति छितिपाल सुरपाल सो सजत हैं । विद्या अपार पढि तीरथ अनेक करि यज्ञ और दान बहु भांति सो करत हैं । तीन काल मे नहाय इन्द्रियन को बश लाय करि बन वास विषय वासना तजत है योग और यज्ञ जप तप को अनेक करें, बिना भगवन्त भक्ति भव ना तरत हैं ॥

श्लोक ।

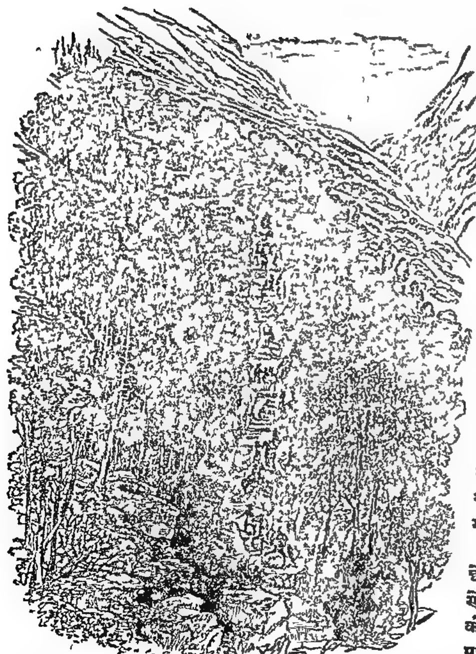
गंगातोयेन कृत्स्नेन मृद्भारैश्च नगोपमैः ।
आमृत्यो: स्नातकश्चैव भावदुष्टो न शुध्यति ॥

जिस का अर्थ यह है कि जिस का दुष्ट

भाव है सो लो पर्वत के समान मिट्टी से शरीर को मालके मृत्यु लो गंगाजल में स्नान करे तौभी शुद्ध न हो जायेगा ।

गंगा और सब नदियों के समान हिमालय पहाड़ के सोते से निकली है जिसे यात्री वहां जाके देख सकता है और उस के जल में कुछ भी पवित्रता नहीं है । यदि कोई ईश्वर को त्यागके आप पाप काटने की इच्छा से गंगा की पूजा करे तो केवल अपने पाप को बहुत ही बढ़ा देता है ।

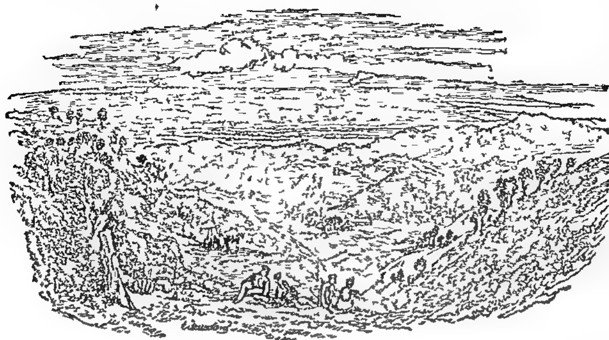
हिमालय पहाड़ का वर्णन ।



हिमालय की एक झलक ।

जगत भर में हिमालय के बराबर कोई पहाड़ों की पांती पाई नहीं जाती है । उस के नाम का अर्थ यह है हिम का निवास क्योंकि उस की बहुत सी चोटियों पर हिम साल भर पड़ा रहता है । उस का रूप धनुष का सा है और वह देश के बड़े भाग की उत्तर सीमा १५०० मील लों अर्थात इण्डस नदी से लेके ब्रम्हपुत्रा नदी लों घेरता है । उस की पांती की चौड़ाई कुछ २०० मील होगी । उस की दक्खिन ओर छोटी २ पहाड़ियां है जो इण्डस और गंगा के मैदानों से उठती है और उत्तर ओर तिब्बत देश की ऊंची जमीन है जो कि समुद्र से कहीं दो वा तीन मील ऊंची है ।

जब कोई मैदान पर खड़ा होके हिमालय की ओर देखे तो ऐसा दिखाता है कि साम्हने की चोटियों पर वनवाली पहाड़ियों के ऊपर श्वेत २ बादल दूर लों दिखाई देते है परन्तु जब हम समीप पहुंचते तो इन छोटी



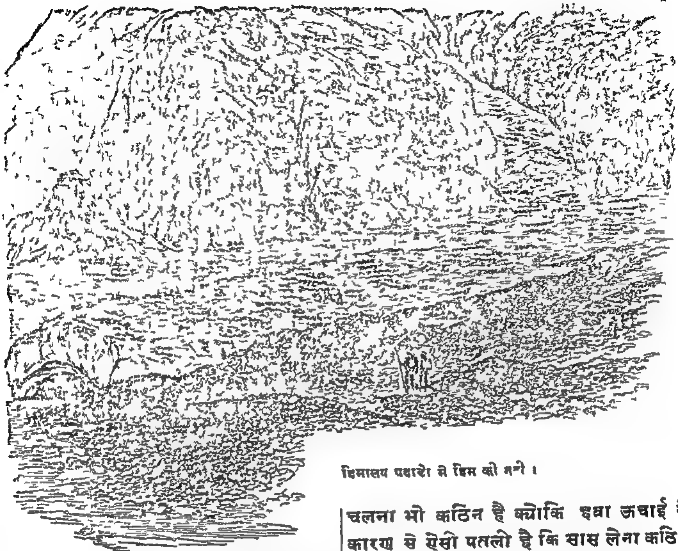
पहाडिया हिमालय के साम्हने।

पहाडियों के कारण से हिमालय दिखाई नही देता है जब लो इन छोटी पहाडियो के ऊपर न चढे। हिमालय के साम्हने बीस मील चैाडा एक मैदान है जिस को तराई अर्थात गीला मैदान कहते है। पहाडो का जल वहा बहुत एकट्ठा रहता है श्रीर उस पर बहुत धूप पडती है जिस के कारण से बहुत मोटी २ जगली घास उगती है जो वनपशुश्रो का विशेष निवास है। तराई मे रहकर मनुष्य को बहुत तप हुश्रा करती है सो उस मे गाव बहुत कम पाये जाते है। तराई के श्रागे ३,000 फुट ऊची पहाडियो की एक श्रेणी है जिस मे से श्रच्छी २ लकडी काटी जाती है। इन पहाडियो के पीछे दून नाम कितने नीचान है जिन मे श्रन्न बहुत उपजता है क्योंकि यह वह श्रच्छी मिट्टी है जो पहाडों पर से वह श्राती है। इन नीचानो मे धान बहुत उपजता श्रैार श्राजकल चाह की बहुत वारियां वहा लगाई गई है। इन नीचानो के पीछे साम्हनेवाले हिमालय पर्ब्बत दिखाई देते है। यह कुछ ८000 फुट ऊचे है श्रैार उन में वृक्ष घास तरकारी श्रादि श्रच्छी रीति से उगती

है। यह वह स्था
है जहा दारजि
लिङ्ग शिमल
मंसूरी नैनीता
श्रादि स्थान
जहां साहिब लो
गरमी के दि
काटते है। श्रै
भी ऊपर चढ़ो ते
फल फूल वृ
श्रादि हिन्दुस्ता
के नही बरन
विलायत के

देख पडते है। गूजबेरी स्ट्राबेरी श्रादि फल जो नीचे उत्पन्न नही होते वहा बहुत पाये जाते है।

इन पहाड़ो के बीच मे गर्म नीचान भी पाये जाते जिन में धान बहुत उत्पन्न होता है। पहाडिस्तान की ऐसी जगहो मे जहा ठढी हवा कम पहुचती श्रैार जो १२,000 फुट ऊचे है वृक्ष उगते है। ऊपर चढते २ वृक्ष बहुत छोटे होने लगते फिर झाडिया भी नही मिलतीं श्रैार जब १६,000 फुट ऊचे पर चढो तो न वृक्ष न घास है केवल काली चटानो पर श्वेत २ हिम साल भर पडा रहता है। बाघ श्रैार बन्दर ११,000 फुट ऊचे पहाडो पर कही २ पाये जाते है श्रैार इस से भी ऊचे चीता हिरन भालू पाये जाते है। पहाड़ी लोग भेड बकरी को बहुत पाला करते है न केवल मास श्रैार कपडे की लालसा से परन्तु इस इच्छा से भी कि उन के द्वारा माल श्रसबाब को पहाड के घाटो पर पहुँचा देवे क्योंकि इन पर भार बहुत लादते है। तिब्बत मे याक नाम एक प्रकार का भैंसा है जिस के



हिमालय पहाडो मे हिम की नदी ।

लंबे २ बाल होते है और वह वहा के निवासियो के बहुत काम आता है । बीस हजार फुट ऊंचे पर कितने स्थान है जहा याची हिमालय के उस पार जा सकते है परन्तु वहा का मार्ग बहुतही कठिन है जिस मे बहुधा किसी नदी के किनारे २ चलना पडता है जहा ठोकर की चटान अगणित है और दोनो ओर पहाड की बगले बहुत ढालू हैं और ऊपर से पत्थर बहुत गिरा करते और कभी २ पहाड का बडा भाग ऊपर से फिसलता है और समस्त मार्ग को एक दम मे मिटा देता है यहा लो कि याची किसी रीति से आगे नहीं जा सकते है ।

न केवल मार्ग बहुत कठिन है परन्तु चलना भी कठिन है क्योंकि हवा ऊचाई के कारण से ऐसी पतली है कि सास लेना कठिन है । थोडा सा परिश्रम करे तो याची पडे २ हाफने लगते है । पहाड की श्रेणी एक सम नही है परन्तु बडे २ गहिरावो और नीचानो से कटी हुई है और इन नीचानो मे छोटी २ नदिया बहती और ऊपर से हिम की नदिया धीरे २ चली आती है । हिमालय की ऊचाई १८,000 फुट बताई जाती है परन्तु उस में बहुत सी चोटिया है जो इस से कहीं अधिक ऊची है। २३,000 फुट ऊची ४८ चोटिया गिनी गई है। सब से ऊचा पहाड एवरेष्ट है जो नैपाल की उत्तर सीमा पर है उस की ऊंचाई २९,000 फुट है और जगत भर में कोई दूसरा इस के बराबर ऊचा नहीं है । फिर किनी वह पहाड है जो पहाड नैपाल की पूर्वी

पर है वह २८,१६० फुट ऊंचा है। फिर काशी से उत्तर ओर धौलागिरि नाम पहाड़ है जिस की ऊंचाई २६,८२६ फुट है। यमुनोत्तरी के पहाड़ जहां से यमुना नदी बहती है २१,१५५ फुट ऊंचे है। वह स्थान उत्तर की बगल में जहां तक हिम बराबर पड़ा रहता सो १६,००० फुट ऊंचा है परन्तु उत्तर की बगल मे १७,४०० फुट ऊंचे तक पड़ा रहता है। इस की भिन्नता इस कारण से है कि पूर्व की ओर बहुत अधिक घाम रहता है। हिमालय पहाड़ की श्रेणी सब से ऊंची है परन्तु वह सब से पुरानी नहीं है क्योंकि ज्ञानवान कहते है कि उन सीपों से जो उस की मिट्टी मे मिली हुई है प्रगट है कि यह पहाड़ किसी समय मे पानी के नीचे थे और पीछे ऊंचे पर हो गये। उन के उठने का द्वारा वह पिघलाये हुए पत्थर होंगे जिस को ज्ञानवान ग्रानित कहते है। जब ग्रानित नीचे से बढ़ाया गया तब उस ने जो पत्थर ऊपर थे ऊंचे पर उठा दिये। यह ग्रानित बहुत स्थानो में दिखाई देते है। यमुनोत्तरी के पहाड़ के पास कई स्थान है जहां नीचे की गरमी दिखाई देती है क्योंकि जो पानी के सोते भूमि से निकलते है सो बहुत गर्म है।

जब यात्री हिमालय पर चढ़ता है तो कभी २ यह बहुत सुन्दर बात दिखाई देती है कि बादल पांव के नीचे पड़े रहते है। कभी २ वे शान्ति के समुद्र की नाईं देख पड़ते जिन मे से पहाड़ की चोटियां टापू समान निकल आती हैं। कभी २ ऊपर जहां हम खड़े रहते तहां बड़ा चैन रहता है और नीचे बड़ी आन्धी उठती और बादल गरजता और बिजलियां चमकती है।

जब कि कोई मैदान पर खड़ा हो हिमालय पर्व्वत की ओर दृष्टि करता है तो उन का रूप रंग बहुतही सुन्दर दिखाई देता और सदा बदलता रहता है। सांझ को जब सूर्य्य डूबने लगता तो कभी ऐसा देख पड़ता कि समस्त श्रेणी मे आग लगी है और सब लाल होकर जल रही है फिर बैगनी रंग चढ़ने लगता और उस के पीछे गुलाबी। जब अंधियारा होने लगता तो खाकी रंग छा जाता है।

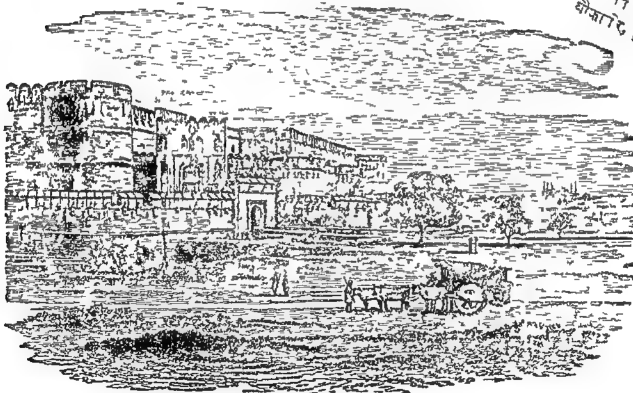
हिमालय पर्व्वत से हिन्द देश को नाना प्रकार का लाभ पहुंचता है। वे उन शीतल पवनों को जो उत्तर की दिशा से आतीं बहुत रोकते हैं। फिर जो हिम उन पर पड़ता है सो सूखे के दिनों मे गलता और नदी बनकर दूर २ मैदानों को जाके सींचता है सो नदियों मे जल उस समय जब अधिक प्रयोजन होता भरा रहता है। बहुत देशों मे अज्ञानी लोगों का यह बिचार है कि हमारे देवते पर्व्वतों की उन चोटियों में जहां मनुष्य कठिनता से चढ़ सकता है रहा करते है। यूनान देश में ओलिम्पस पहाड़ सब से ऊंचा था सो अज्ञानी लोग कहते थे कि जुपिटर देवताओं का पिता अपना दरबार वहां करता है। हिन्दू लोग ऐसेही विचार से हिमालय पर्व्वत की ओर दृष्टि करते है। पुराणों मे लिखा है कि हिमालय पर्व्वत मेरु पहाड़ की दक्खिन ओर है। परन्तु जाना जाता है कि कोई मेरु पहाड़ नहीं है तो हिमालय कहां रहा। फिर लिखा है कि पच्छिम मे कैलास नाम चांदी का बना हुआ वह पहाड़ है जहां शिव का निवास है। आजकल बहुत से हिन्दू लोग यमुनोत्तरी गङ्गोत्तरी आदि तीर्थों के दर्शन करने के लिये बड़ी दौड़ धूप उठाते है और यह नहीं जानते कि परमेश्वर ऐसे दूर स्थानो मे नहीं बरन

सत्य भक्त के मन में निवास करता है । यदि हम सत्य मन से उसे भजें तो अपने घर में कुशल से बैठे हुए उस को भजें । वह हम से दूर नहीं है क्योंकि उस में हम जीवते और चलते फिरते और आनन्द करते हैं । जहां कहीं हम हैं तहां वह हमारी प्रार्थना सुनने को तैयार है तो दौड़ धूप करके पहाड़ों पर चढ़ना क्या ज़रूर है ।

यमुना नदी का वर्णन ।

इलाहाबाद में हम देखते हैं कि यमुना नदी आकर गंगा में मिली है और मिलने का स्थान त्रिवेणी नाम से एक तीर्थस्थान प्रसिद्ध है । त्रिवेणी के समीप एक बहुत सुन्दर रेल का पुल लोहे का बना हुआ है । यदि बटोही नौका मे सवार हो यमुना नदी पर चले तो उसे कई एक देखने योग्य स्थान मिलेंगे ।

आगरा का वर्णन ।



आगरा का गढ़ ।

आगरा यमुना नदी के पच्छिम तीर पर बना है और उस में और इलाहाबाद में २८० मील की रेल है । उस के निवासियों की गिन्ती इलाहाबाद की गिन्ती से कम है परन्तु बड़ा नगर है । उस स्थान पर यमुना पूर्व दिशा को घूमती है और इस कोने में नदी के तट पर आगरे का प्रसिद्ध गढ़ बना है । आगरे का इतिहास यह है कि पूर्वकाल में इस स्थान पर लोदी नाम राजाओं का निवास था परन्तु उन का नगर यमुना पार बना था । जब बाबर ने सन ई० १५२६ में नगर को अपने वश में कर लिया तब उस ने पुराने हिन्दूभवन



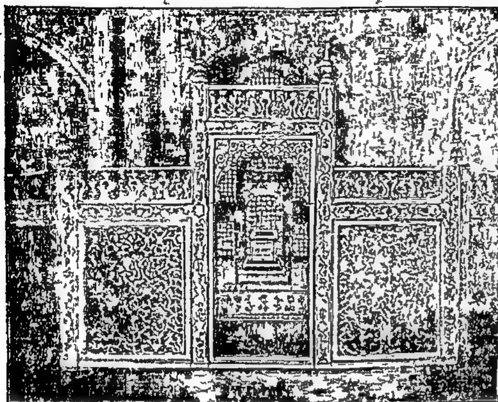
यमुना नदी से ताजबीबी का रौजा ।

सो दिल्ली को अधिक चाहता था परन्तु उस के बेटे अकबर ने यहां लौटकर अब के नगर आगरा को नदी के पच्छिम तीर पर बनवाया और उसे अपना मुख्य नगर किया । उस ने गढ़ को बनवाया और उस में के भवनों का आरंभ किया । उस का बेटा जहांगीर उस के पीछे गद्दी पर बैठा और पिता का मकबरा जो अब सिकन्दरा में प्रसिद्ध है बनवाया । परन्तु सब से उत्तम गृह जो आगरे में पाये जाते हैं सो जहांगीर के पुत्र शाहजहां के बने हुए हैं । औरंगजेब जो शाहजहां का चौथा पुत्र था उस ने दिल्ली को मुख्य नगर फिर बनाया और पीछे के दिनों में आगरे का बहुत अदल बदल हुआ । सन ई० १८०३ में जब वह मरहटा लोगों के वश में था तब

में वास किया । चार बरस पीछे वह वहां मरा और उस की लोथ काबुल में पहुंचाई गई । हुमायून बादशाह जो उस का पुत्र था

लार्ड लेक साहिब ने उन्हें जीत लिया और नगर को ले लिया । सन ई० १८३५ में वह नार्थ वेष्ट प्राविन्सज का मुख्य नगर किया गया

परन्तु बलवे के पीछे सरकार फिर इलाहाबाद में लौटके चली गई।

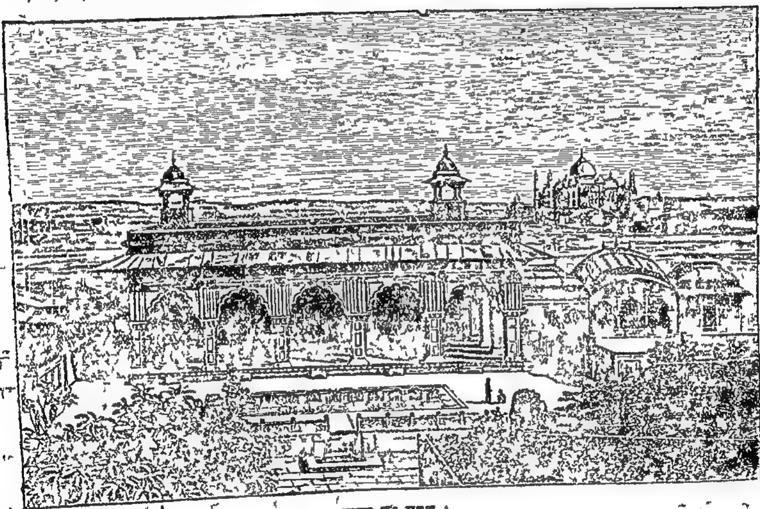


ताजमहल की कबर।

आगरे में कितने स्थान हैं जो बहुत देखने योग्य हैं। वहां का गढ ऊंचा और दृढ पत्थरों का बना हुआ है। उस की भीत ४० फुट ऊंची है और उस के बीच में वही भवन आदि हैं जो मुसलमान बादशाहों के काम में आते थे जैसा दीवान खास दीवान आम मसजिद आदि गृह हैं और यह श्वेत संग मरमर के बने हुए और ऐसी सुन्दरता से काढे हुए हैं कि उन को देखकर मन मोहित हो जाता है। फिर उन भवनों पर चढके यमुना पार की और आसपास की जमीन बडी सुन्दरता से दिखाई देती है। एक नहाने की कोठरी है जिस की भीतों में हजारों छोटे २ दर्पण लगे हुए हैं। फिर मोतीमहल है जिस को बादशाह शाहजहां ने सन ई० १६५४ में बनवाया। यह पत्थर के चबूतरे पर ऊंचा बना हुआ है और उस के तीन श्वेत २ संगमरमर के गुम्बज दूर से चमकते हैं। भीतर वह दालानों से तीन भागों में बांटा हुआ है और यह दालान मनभावन रीति से बने और काढे हुए हैं। परन्तु ताजबीबी का रौजा वह गृह है जो समस्त हिन्दुस्तान का मुकट है। उस की सुन्दरता को कौन वर्णन कर सकेगा। इस के समान कोई दूसरा कहीं नहीं मिलता। उस को ताजमहल भी कहते हैं और बटोही दूर देशों से उस को देखने आते हैं। इस को शाहजहां ने अपनी प्यारी रानी के स्मरणार्थ बनवाया। मुसलमान बादशाहों के मकबरे बहुधा एक रीति से बनाये जाते थे। दस्तूर यह था कि बादशाह आप अपने जीते जी में उस का आरम्भ करता था और ऐसा बनवाता जैसा उस को पसन्द होता था। वे किसी बाग को ऊंची भीत से घेर लेते और उस के बीच में चबूतरा उठाते थे जिस के ऊपर मकबरा बनाया जाता और जब लों बादशाह जीता रहता था तब लों अपनी रानियों और बालकों और मित्रों सहित हवा खाने के लिये सांझ को वहां जाया करता था।

शाहजहां की रानी जिस का नाम मुमताजमहल विख्यात था सन ई० १६२९ में मरी और ताजमहल का मकबरा शीघ्र आरम्भ

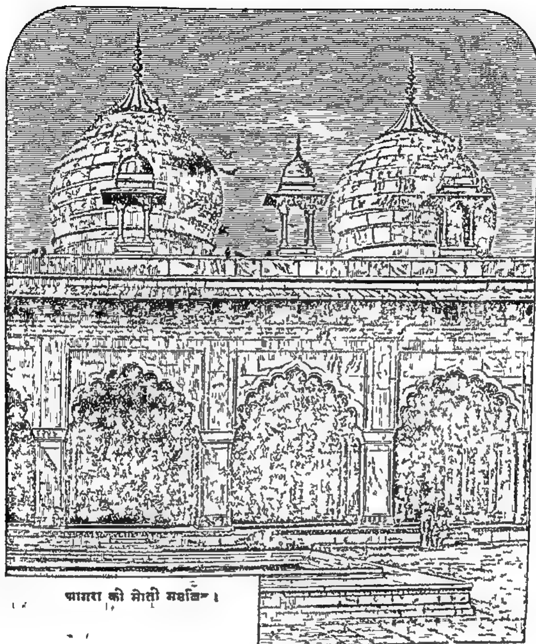
किया गया और यह १६४८ में समाप्त हुआ। उस के बनवाने में विशेषकर दो प्रकार के पत्थर अर्थात जैपुर के श्वेत संगमरमर और फतेहपुर सीकरी के लाल पत्थर लगाये गये हैं। कहते हैं कि उस के बनवाने और बिभूषित करने में २,00,00,000 रुपये लगाये गये हैं। चबूतरा श्वेत संगमरमर का बना हुआ १५ फुट ऊंचा और ३00 फुट लंबा चौड़ा है। इस के किनारों पर १00 फुट ऊंचे श्वेत मीनार खड़े हैं और बीच में मकबरा खड़ा है। मकबरा १८६ फुट लंबा और इतना चौड़ा है और उस का गुम्बज २00 फुट ऊंचा है और



अकबर का महल।

यह मकबरा आगरा से कोस भर दूर यमुना तीर पर बना है। बारी का फाटक भी एक ऊंचा पत्थर का बना हुआ गृह है। फाटक में प्रवेश करके एक सुन्दर बारी साम्हने मिलती है जिस के बीच में फव्वारों की श्रेणी लगी है और उस के दोनों ओर अच्छे २ फल फूल के वृक्ष लगे हुए हैं। बारी के उस ओर अर्थात नदी के किनारे पर एक बड़ा लाल पत्थर का चबूतरा है। बीस फुट ऊंचा और १00 फुट लंबा। इस चबूतरे के ऊपर दूसरा समस्त भीतों पर बहुमूल्य पत्थरों में ऐसे फूल काढे हुए हैं कि यहां का इस सब सुन्दरता को देखकर मन मोहित हो जाता है। फिर बहुत स्थानों मे कुरान के वचन पत्थर में खुदे हुए हैं।

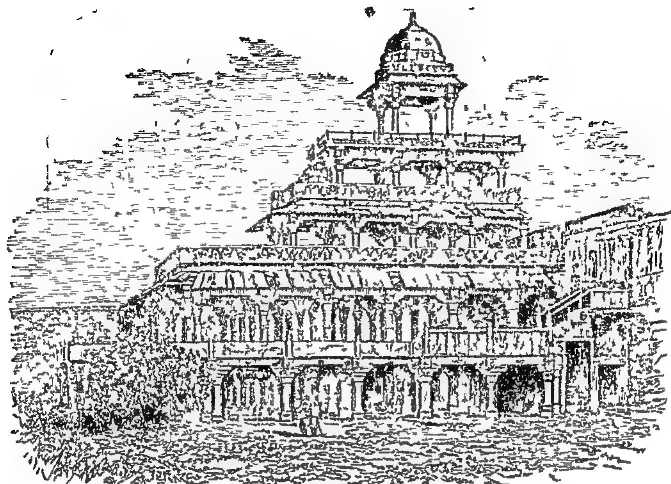
आगरा से कितने रेलवे सम्बन्ध रखते हैं। ईस्ट इण्डियन रेलवे यमुना पार टूंडले में है सो १४ मील लंबा छोटा रेलवे उसे आगरा से जोड़ देता है। आगरा में अन्न की बिक्री बहुत है। वहां पत्थर का जड़ाऊ काम भली



आगरा की मोती मसजिद।

भाति से किया जाता है। सिकन्दरा मे जो आगरा से ६ मील दूर है अकबर का बडा मकबरा है जो अकबर से आरंभ किया गया और उस के बेटे से समाप्त हुआ। वह एक बारी में बना है, जो ऊंची भीतों से घिरी हुई है। मक़बरा १00 फुट ऊंचा और ३00 फुट लंबा चौडा है। ऊपरवाले महल नीचेवालों से कुछ छोटे बने है, और सब के ऊपर छत नहीं लगी, बरन स्मरणार्थ पत्थर संगमरमर का है जिस पर ईश्वर के निन्नानवे नाम काढे हुए है सो आकाश के नीचे रक्खा हुआ है और चारो ओर संगमरमर की भीतें अद्भुत रीति से काढी हुई और शोभादायक पत्थर के काम बने हुए है। अकबर मोगल बादशाहों में उत्तम था। वह न्यायकर्त्ता और प्रजा की भलाई की चिन्ता करता था और चाहता था कि जैसा मुसलमान से तैसा हिन्दू से भलाई करे।

फतेहपुर सीकरी एक छोटी पहाडी से २३ मील पश्चिम ओर है। अकबर



फतेहपुर सीकरी का पंचमहला ।

कि मैं इस को अपना मुख्य नगर बनाऊं सो उस ने वहां पत्थर के बड़े २ भवनों को बनाया और पहाड़ी को ५ मील लंबी भीत से घेर लिया । वहां उस ने बड़ी मसजिद भी बनाई और उस के समीप बहुत ही सुन्दर एक मकबरा शेख जी का बना है क्योंकि अकबर ने सोचा कि इस की दुहाई से मुझ को बेटा मिला और आज लों स्त्री लोग जो पुत्र चाहती है इस के मकबरे में जाकर पूजा करती है । एक गृह जो फतेहपुर सीकरी मे बना था सो वह पंचमहला था जो इस चित्र में दिखाई देता है और दूसरा वह है जिस मे अकबर की रानियां आंख मिचौली खेला करती थीं । भीत के बाहर हिरनमीनार ७० फुट ऊंचा एक गृह है जिस के बाहर ऐसी बहुत सी वस्तु लगी हुई है जिन को गांववाले सत्य हाथी-दांत बताते है । फतेहपुर सीकरी अच्छा रहने का स्थान नहीं था क्योंकि वहां नदी न थी जिस के द्वारा से माल को इधर उधर पहुंचा दें और बने के पचास बरस पीछे बादशाह का दरबार दिल्ली में लौट गया ।

मथुरा का वर्णन ।

आगरा से ३० मील और आगे बढ़के मथुरा यमुना नदी के पश्चिम तीर पर बना है और ६ मील और आगे बढ़के वृन्दावन नगर मिलता है । आसपास की जमीन ८४ कोस लों व्रजमण्डल कहलाती और हिन्दू उसे अति पवित्र जमीन समझते है क्योंकि कहते है कि कृष्ण वहां गायों को चराता और १६,०००

गोपियो के संग रासमण्डल में नाचता था। बौद्धवालो के दिनो में मथुरा बौद्धवालों का नगर हो गया था जिस के पीछे महमूद गजनवी ने उसे घेर लिया और लूटा। बहुत से और मुसलमान राजाओं ने इस स्थान पर चढाई किई और यहा के मंदिरो को लूटके उजाड किया। सन १७५६ ई० में मथुरा पर बडी आपत्ति पडी क्योकि उस समय अहमदशाह अबदाली २५,००० अफगानों घुडचढे सग लेकर त्योहार के दिन मथुरा में दौड़ पडा जब कि नगर बेचारे यात्रियो से भरा था। मदिरो में उस ने गायो को बध किया और उन के लोहू से उन को अशुद्ध किया। उस ने नगर को फूक दिया और हजारो स्त्रियों और लडको और जवानो को कैदी करके ले गया। मथुरा और वृन्दावन में कृष्ण के नाम में अगणित मदिर बनाये गये है और यह बुरी पूजा वहां बहुत प्रचलित है।

राजपुताना का वर्णन।



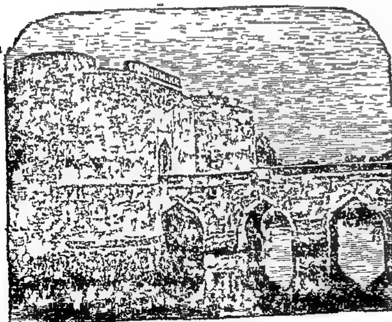
राजपूत लोग

आगरा की पश्चिम और पंजाब की दक्खिन ओर राजपुताना नाम एक देश है जो हिन्दुस्तान के इतिहास में बहुत विख्यात है। इस मे अठारह देशी राज्य है और ऐसी कुछ जमीन भी है जो सरकार की अमलदारी मे है। वह इतनी बडी जमीन है जितनी मदरास और उस मे १,२०,००००० निवासी पाये जाते है। अरावली नाम पहाड इस देश को दो भागो में बाट देता है। पश्चिम की ओर बहुत जमीन बालूमय और मरुभूमि है जहा बालू चारो ओर आंधियो से उडाई जाती है। वहा जल पाना कठिन है और कुओं को २०० वा ३०० फुट गहिरा खोदते है परन्तु और भी स्थान है जो अच्छे और फलदायक है। राजपूत लोग कहते है कि हम क्षत्री जाति के है परन्तु सत्य पूछो तो गूजर आदि जातियो में बहुत मिले हुए है। हण्टर साहिब कहता है कि आजकल हमारी आंखो के साम्हने ऐसे प्रधान जो और लडाकू सन्तानो के थे राजपूत और क्षत्री बनते जाते है। उस देश में विशेषकर हिन्दी भाषा है और महम्मदी देखने मे कम आते हैं। राजाओ मे टोंक के नवाब साहिब को छोड सब हिन्दू है।

बारहवीं सदी में राजपूत लोगो ने अपनी बडी सामर्थ्य दिखाई। वे वीरता में प्रसिद्ध हुए परन्तु उन का यह दस्तूर था कि अफीम के नशे में लडते थे। स्त्री और लडकियो का घात करना और कितनी और भी कुरीतें उन में प्रचलित थी। बच्चो के मारने का कारण यह था कि उन लोगो मे बिवाहो का व्यय बहुत अनुचित रीति से बढाया गया था सो पिताओ ने सोचा कि पुत्री को घात करना भला है। फिर उन लोगों मे लडने का यहा लो दस्तूर था कि जब कोई राजपूत कहो जाता था तो

ढाल तलवार लेके जाता था। उस देश के बीच में भील मिना आदि नाम के कितने जगली सन्तान फिरा करते है जिन का सुधारना कठिन है। महम्मदी बादशाहों ने राजपूत लोगों का बहुत बल घटाया और जब मोगलो का राज्य टूटने लगा तब उन पर दूसरी विपत्ति पड़ी कि उन दिनो मे मरहठा घुडचढो का बल बहुत बढा जाता था जो उन के नगरो को लूट लेते और उन से शुल्क लिया करते और नाना प्रकार से उन को सताते थे। सन ई० १८१७ मे लार्ड हेष्टिङ्ग ने पिण्डारी लोगों को मारा और मरहठा लोगो को राजपुताना देश से दूर किया। सिन्धिया ने सरकार अगरेज को अजमेर दे दिया और राजपुताना के सब राजाओं के सग नियम बांधा गया। उस देश मे कई एक स्थान हैं जिन का कुछ वर्णन करना योग्य है।

भरतपुर का वर्णन।



भरतपुर गढ का फाटक।

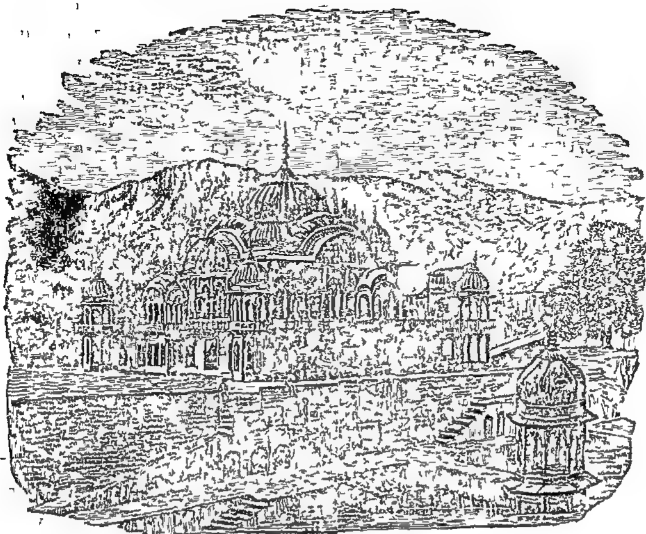
भरतपुर नगर आगरा से ३३ मील पश्चिम ओर है वह दृढ नगर है और आठ मील लबी भीत से घेरा हुआ है और जिस के बाहर बडी नहर जलसे भरी हुई है और भीत मे कहीं २ बुर्ज और कोट बने हुए है। लार्ड लेक साहिब ने सन १८०५ ई० में उसे लेने चाहा पर ले न सका परन्तु राजा ने थोड़े दिन पीछे अंगरेजों से नियम बाधा। सन १८२७ ई० मे लार्ड कामबरमीर ने नगर को घेरा और अपने वश मे कर लिया।

अलवर का वर्णन।

भरतपुर की उत्तर पश्चिम ओर अलवर नाम एक देशी राज्य है। अलवर नगर राज्य के बीच मे है और नगर के पास ऊंचा पहाड है जिस के ऊपर कोट बना है। जब यात्री पहाड पर चढे तो दूर लों जमीन को अच्छी रीति से देख सकता है। महाराजा का भवन पहाड के नीचे बना है। सन ई० १७७६ मे अलवर भरतपुर के राज्य में था सो सरकार ने उसे लिया। इस सदी के आरभ में अलवर के महाराजा बखतावरसिंह ने मरहठा लोगो से लडते समय सरकार अगरेज से सहायता मांगी और उन में नियम बांधा गया। लसवारी के मैदान में जो अलवर से १७ मील पूरब ओर है सिन्धिया की सेना और लार्ड लेक के बीच में बडी भारी लडाई किई गई।

जैपुर का वर्णन।

अलवर की दक्खिन पश्चिम ओर जैपुर है जो समस्त राजपुताना राज्यो में धनवान है और जैपुर नगर हिन्द के सुन्दर नगरो में विख्यात है। थोडी दूर पर अम्बेर नाम



महाराजा बखतावरसिंह का धौरहरा—अलवर ।

पुराना मुख्य नगर था परन्तु लोगो में यह कहानी थी कि यदि यह राज्य ६00 बरस से अधिक एक स्थान मे रहे तो उस पर विपत्ति पडेगी सो पिछली सदी में जैसिंह महाराजा ने अम्बेर को जो बहुत दिन से मुख्य नगर था छोड दिया । सन १०२८ में राजा जैसिंह ने अब के नगर की नेव डाली जो उस के नाम से जैपुर कहलाता है । उस के बीच में राजा का भवन बना है । नगर इस बात में प्रसिद्ध है कि उस की सडकें सीधी और चौडी हैं और पत्थरों से पटी हुई है और उस में बहुत से मंदिर और मसजिद और पक्की हवेलिया बनी है और रात को नगर गास की रोशनी से प्रकाशित होता है । राजा जैसिंह ज्योतिषविद्या को बहुत चाहता था और पांच नगरो मे बडे २ तारागृहो को बनवाया जिन मे सब से बडा वह है जो अपने नगर जैपुर में बनवाया था । नगर में कालिज और कौतुकशाला और कितने और देखने योग्य गृह बने है । जैपुर की पच्छिम ओर साम्भर नाम एक बडा ताल है जिस में इतना लोन मिलता है जो चारो ओर के नगरो में बिकता है अर्थात साल में ६,00000 मन निमक बनता है ।

अजमेर का वर्णन।

यदि बटोही आगरा मे रेल पर चढे और २३६ मील पच्छिम ओर जाये तो वह अजमेर नगर मे पहुंचता है। तारागढ नाम एक पहाड़ है जिस के ऊपर कोट बना है और पहाड के बगल मे अजमेर नगर पाया जाता है। वह पत्थर की भीत से घिरा हुआ है जिस मे पांच फाटक लगे हुए है। लोग कहते है कि यह बहुत प्राचीन नगर है और कि उस की नेव सन ईसवी १४५ मे डाली गई। अकबर बादशाह ने नगर के बाहर भवन और गृह बनवाया। जहांगीर के दिनो मे कई बरस लो अजमेर मोगलों का मुख्य नगर था। पिछली सदी मे मरहठा लोगो ने अजमेर को अपने वश मे लिया और सन ई० १८१८ मे सिन्धिया ने उसे सरकार अंगरेज के हाथ मे दे दिया। अजमेर से थोडी दूर पर पुष्कर नाम एक ताल है जिस के विषय लोग यह कहानी कहते है कि ब्रम्हा ने वहा एक बडा चढावा चढाया जिस के कारण से इस ताल का इतना पुण्य प्रताप हो गया कि जो पातकी उस मे नहाता सो स्वर्गवासी हो जाता है। लोगों मे कहावत है कि ब्रम्हा के दुष्कर्म्मो के कारण से उस की पूजा उठ गई है और कि इस पुष्करवाले मंदिर को छोड समस्त हिन्दुस्तान मे ब्रम्हा की पूजा के हेतु कोई दूसरा मंदिर पाया नही जाता है।

मेड़वारा का वर्णन।

अजमेर से दक्खिन पच्छिम ओर एक पहाडिस्थान है जिस में सैकडो बरस लो ऐसे जंगली निवासी पाये जाते थे जो आसपास के सन्तानो को बहुत दु:ख देते थे। उन का यह दस्तूर था कि लूट मार करने के लिये आसपास के गाव पर बडी फुर्ती से चढाइयां करते थे परन्तु शीघ्र अपने पहाडों में भागके लोट जाते थे और कोई उन्हे दण्ड न दे सका। राजपुताना के राजा लोगो ने बार २ उन्हे दण्ड देने चाहा परन्तु उन का कोई उपाय न चला कहीं मायर लोगो की सेना साम्हने न आती थी कि जिस से लडे और चाहे कोई उन का गढ तोड जाये अथवा गाव भस्म कर जाये इस से उन को कुछ हानि न होती थी बरन वे पीछे क्रूरता से उस का बदला लेते थे। उन लोगो मे डकैती और लूट मार जीविका के मुख्य द्वारा थे बरन उन में से बहुत ऐसे थे जो और देशो मे डकैती करके इस को शरणस्थान समझके आ बसे। ऐसे लोगों में नाना प्रकार की दुष्टता हुआ करती थी नरहत्या करने से उन को कुछ चिन्ता न होती थी। वे कभी अपनी कन्याओं को मार डालते और कभी अपनी माता को दासी होने के लिये बेच डालते और निरे निर्लज्ज और निर्दय हो सब प्रकार की दुष्टता करते थे जब कि यह जमीन सरकार अंगरेज के वश मे आई तब भी वैसी दुर्दशा रही। योद्धा हथियार लिये हुए इधर उधर फिरा करते थे और कभी २ पहाडो के मार्गो को बन्द कर रखते थे। सरकारी नोकर पकडे गये। सरकारी कैदी बन्दीगृह से चुराये गये और मार्गो मे चलना जोखिम की बात थी। हाल साहिब ने जो सरकार का एजण्ट था अच्छा उपाय निकाला। उस ने सोचा कि यदि ये लोग युद्ध करने से प्रसन्न है तो सरकार के लिये क्यों न युद्ध करे। सो उस ने मैडवारो की एक पलटन बनाई यह पलटन बहुत अच्छी निकली और उन्हों

के द्वारा से डकैती वहां की सन्तानों मे से मिटाई गई।

मायर लोगो मे न्याय करने के अद्भुत उपाय प्रचलित थे कभी २ जब कोई किसी पर दोष लगाता था तब अपने २ मित्रो के साम्हने दोनो तलवारे लेकर आपस मे लडते थे और जो जीते उस की बात पक्की होती थी। परन्तु शोक की बात यह थी कि पिता के झगडो पर बेटे पोते भी लडते थे। कभी यदि किसी पर दोष लगाया जाता था तब अपनी सफाई प्रगट करने के लिये अपने हाथ को उबलते हुए तेल में डालता था अथवा तप्त लोहे को हाथ मे लेता था। हाल साहिब ने उन्हे समझाया कि इस से भला यह है कि सब दोषो पर तुम पञ्चाइत करो और जैसा जिस का अपराध हो उस को दण्ड देओ।

हल जोतना विशेषकर उन लोगो में शिष्टाचार का द्वारा था। सन ई० १८६५ में डिकसन साहिब हाल साहिब की सन्ती मे एजण्ट हुआ। उस समय तो वहां कास्तकारी करना कठिन था। कभी पानी बरसता कभी नही बरसता था और यदि बरसे भी तो पहाडियो में शीघ्र बहके चला जाता था परन्तु डिकसन साहिब ने उन्हें समझाया कि कही २ बान्ध नीचानो में बनाकर उस पानी को रोक सकते और सूखे के समय में खेतो को सींच सकते हो वरन साहिब ने कहा कि ऐसे बान्धो के बनाने के लिये मै पेशगी रुपये तुम्हे दूगा और जब अन्न पैदा हो तब तुम इस पेशगी को लौटा देना। इस से बहुत लोग प्रसन्न हुए और डकैती को त्यागकर कास्तकारी करने लगे। डिकसन साहिब का दूसरा उपाय यह था कि वणिज व्योपार को उस देश में स्थापन करे क्योंकि यदि लोग अन्न को उत्पन्न करे तो उसे बेचने भी चाहेंगे सो साहिब ने नया नगर नाम एक स्थान बनवाया। मायर लोग उस से प्रसन्न न थे क्योंकि कहते थे कि यदि बनिया लोग आवेंगे तो हमे ठगेगे और बनिया भी उस नगर मे रहने न चाहते थे न हो कि मायर लोग कोई दिन हम को लूटके मारे। परन्तु उन्हो ने कहा कि यदि हमारी रक्षा के लिये नये नगर मे भीत बनाई जाये तो हम वहा आके रहेंगे। सो नया नगर भीत से घेरा गया और दो हजार घराने उस मे आके रहे।

यो धीरे २ यह जगली लोग सुधारे गये। सन १८२८ मे हाल साहिब ने कहा कि इन लोगो की इतनी उन्नति है कि अपनी पुत्रियो को अब घात नही करते न अपनी स्त्रियो को बेच डालते है। आजकल लोग पहिले के समान पहाडो की चोटियो पर नही रहते वरन अपने खेतो के समीप घर वा गाव बनाकर वहा कुशल से रहने लगे है और बटोही उन के अच्छे कपडे और हस-मुखो को देखके कहेगा कि शिष्टाचार पाने से उन को बहुत सुख प्राप्त हुआ और यह क्याही अच्छी बात होती कि जिस प्रेम और हित से साहिब लोगो ने जगली मायर लोगो की भलाई किई इतने हित और प्रेम से देश के जमीन्दार लोग और राजा और महाजन अपने भोले हिन्दू भाइयो की भलाई चाहते।

सुन्दर पद्मिनी का वर्णन।

अजमेर और मेडवारा की दक्खिन पश्चिम ओर मेवार नाम एक राज्य है जो उदयपुर नाम से भी कहलाता है और राजा लोग मानते है कि समस्त राजपूत के राज्यो में यही उत्तम और प्राचीन है। वरन कहते है कि मुख्य

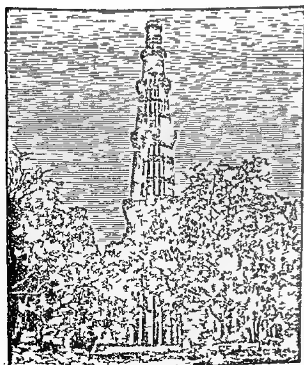
सूर्य्यवंशी येही राजा है। उस का महाराजा उदयपुर का राना कहलाता है और कहते हैं कि यह रामचन्द्र के घराने के है। जब मुसलमान हिन्द के राजाओं को जीतते थे तो उदयपुर मुख्य करके उन का साम्हना करता था और बड़ी बीरता से उन से लड़ता था और वहां के लोग इस बात पर बहुत फूलते हैं कि जैसा और राजा लोग अपनी राजकन्याओं को मुसलमान बादशाहों को बिवाह मे देते थे उदयपुर ने वैसा कभी न किया बरन एक राना और उस की सुन्दर पत्नी के विषय आज लों एक कहानी प्रसिद्ध है।

कहानी यह है कि खिलजी घराने का अलाउद्दीन पहिला मुसलमान बादशाह था जिस ने दक्खिन हिन्दुस्तान पर चढ़ाई किई। यह बात सन ई० १२९४ में हुई। बादशाह ने सुना कि भिमसी नाम चित्तौर के राना की पद्मिनी नाम रानी बहुतही सुन्दर है सो उस ने राना पास यों कहला भेजा कि पद्मिनी मुझे दो नहीं तो चित्तौर पर चढ़ाई करूंगा। राना बहुत घबड़ा गया परन्तु उस ने सोचा कि चाहे राज्य जाये मैं कभी रानी को न देऊंगा। बादशाह ने बड़ी सेना लेके चित्तौर को घेर लिया तौभी वह उसे न ले सका। एक दिन बादशाह ने राना को यों कहला भेजा कि मैं जो रानी की प्रतिमा को दर्पण मे देखूं तो सन्तुष्ट होके चला जाऊंगा। ऐसाही किया गया और जब बादशाह छावनी की ओर लौटा जाता था तब राना उस के आदरसन्मान करने को फाटक के बाहर निकला बादशाह के सेवकों ने कपट से राना को पकड़ लिया और बादशाह ने जब देखा कि अब राना मेरे बश मे है तब कहा कि पद्मिनी मुझे दे नहीं तो तुझे मरवा डालूंगा। परन्तु राना ने न माना। जब इस बात का सन्देश पद्मिनी के पास गढ़ मे पहुंचा तब उस ने कहा कि मैं अपने पति के प्राण बचाने के लिये बादशाह के पास जाऊंगी। सो उस ने सन्देश भेजा कि मैं अपनी सहेलियों सहित बादशाह की छावनी में आती हूं। सो बहुतसी पालकियां तैयार करके उस ने सहेलियों की सन्ती उन में हथियारबन्द योद्धाओं को भर दिया और बादशाह ने इन सब पालकियों को छावनी में आने दिया। जब राना रानी से मिलने के लिये आया तब यह कपट के योद्धा पालकियों से निकले और राना रानी को संग ले उन्हें नगर मे पहुंचाया। इस कपट से बादशाह और भी क्रोधित हो दूसरी बेर बड़ी सेना लेके चढ़ आया और चित्तौर को फेर घेरा। राना फिर बहुत बिस्मित हुआ क्योंकि एक रात कोई स्वप्न मे उस पास आया और कहा कि यदि राजघराने मे से बारह जन न मरें तो राज्य जायेगा। राना के बारह सूरबीर लड़के थे। उन्हों ने कहा कि पिता और राज्य के बचाने के लिये हम प्राण देंगे। सो हर एक दिन एक राजकुमार मारा जाता था और पिछला जो राना का प्यारा पुत्र एक बचा सो राना न चाहता था कि यह भी मारा जाये सो उस ने कहा कि तुम भागकर बच निकलो मैं आप मरूंगा।

उस समय के राजपूत लोगों मे एक डरावनी रीति यह थी कि जब लड़ाई मे हार जाते थे तब ऐसा न हो कि उन की स्त्रियां मुसलमानों के हाथ मे पड़ें सो वे पहिले अपनी समस्त स्त्रियों को घात करते और तब लड़ाई के मैदान मे दौड़के मरने तक लड़ते थे। चित्तौर नगर के भीतर बड़ी २ गुफायें थीं

सो राना ने आज्ञा दिई कि इन गुफाओ में आग लगाई जाय और तब उन मे सुन्दर पद्मिनी और सैकडो और स्त्रिया भेजी गई और गुफा के मुह बद किये गये और यह सब स्त्रिया भयङ्कर मृत्यु से मरी। राना आप अपनी इच्छा से मार डाला गया और तब फाटक खोल दिये गये और चित्तौर के सूरबीर लडते २ मर गये। जब बादशाह चित्तौर मे पहुच गया और जान गया कि सुन्दर पद्मिनी और और सब स्त्रिया मरकर मेरे हाथ से छूट गई तो बहुत क्रोधित हुआ और उस देश मे बहुत क्रूरता दिखाई। कहते है कि उस दिन से लेके आज लो वह गुफे खोले नही गये बरन राजपूत लोग उन्हे पवित्र स्थान समझते है।

पजाब का वर्णन।



कुतुबमीनार—दिल्ली।

पजाब जो पाच नदियो से नाम पाता है आजकल हिन्दुस्तान का उत्तर पच्छिम भाग है। उस मे १६,००० वर्ग मील जमीन है सो इतना बडा है जितना नार्थ वेष्ट प्राविन्सज़ अवध के साथ है। उस के उत्तर और पच्छिम की सीमा पहाडिस्थान है। परन्तु पजाब विशेषकर एक बडा मैदान है जो दक्खिन पच्छिम की ओर झुका हुआ है। वह पाच नदियो से सीचा जाता है जो सब इण्डस मे मिल जाती है। निवासियो की गिन्ती २,१०,००,००० है। इस देश मे हिन्दी उर्दू भाषा कुछ बोली जाती है परन्तु बहुधा लोग पजाबी को जो हिन्दी से कुछ मिलती है बोला करते है। जो अफगानी सीमा के समीप रहते है सो पश्तू को जो काबुल की बोली है बोला करते है।

पजाब का इतिहास।

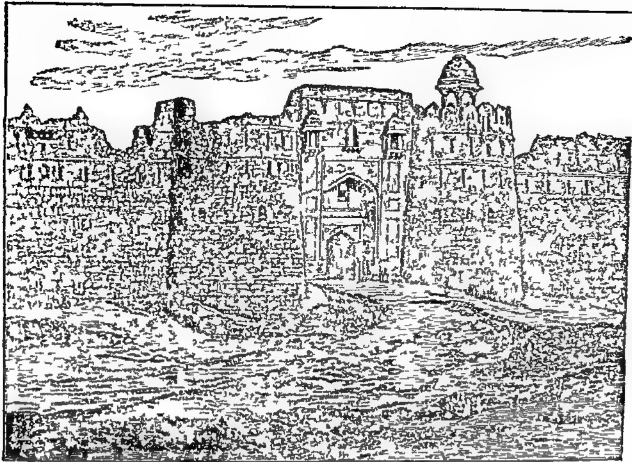
प्रगट है कि जब आर्य्य लोग उत्तर से आकर हिन्दुस्तान मे आये तो पहिले पजाब में उन का निवास हुआ। पीछे फारस के लोगो ने पजाब का कोई भाग अपने बश मे कर लिया। मसीह से पहिले ३२७ वर्ष सिकन्दर आजम जो मकदूनिया का राजा था पजाब में आया और पोरस महाराजा से बडी लडाई करके उसे जीत लिया। पोरस उस युद्ध में घायल किया गया और जब वह पकडा गया और सिकन्दर के आगे पहुचाया गया तब सिकन्दर ने पूछा कि मै तुझ से कैसा सलूक करु। तब पोरस ने उत्तर दिया कि जैसा राजाओ से करना योग्य है। इस उत्तर से सिकन्दर प्रसन्न हुआ और उस ने राज्य का बडा भाग उस को लौटाके दे दिया। जब कि सिकन्दर के योद्धा

कहते थे कि हम आगे हिन्दुस्तान मे और न बढेंगे तब सिकन्दर ने झीलम नदी में नौका लगाके सेना को सवार किया और उत्तर के मार्ग से फारस मे लौट गया । १०० बरस पीछे पंजाब असोका के हाथ मे जो बौद्ध-मतावलंबी का मगध का राजा था आ गया ।

सत्रहवीं ई० सदी मे मुसलमान लोग पंजाब मे चढाई करने लगे और धीरे २ समस्त देश उन के बश मे आ गया । सन ई० १७०५ में गुरु गोबिन्द ने यह इच्छा किई कि मै समस्त सिक्ख लोगो को मानो एक सेना बना रक्खू । इस अर्थ से उस ने सिक्खमत को जैसा अब है स्थापन किया । रणजीतसिंह के दिनो मे सिक्ख लोगो की सामर्थ्य अधिक हुई और जब रणजीतसिंह जो १७८० मे उत्पन्न हुआ उन का अध्यक्ष था तब अफगान के बादशाह ने उसे लाहौर का अध्यक्ष बनाया । उस ने सिक्खो मे से एक सेना बनाई और साहिब लोगो की सहायता से उन्हे रणशिक्षा भली भांति सिखाई । इस सेना के द्वारा से उस की सामर्थ्य यहां लो बढी कि समस्त पंजाब और काश्मीर भी उस के बश में आ गया । वह सन ई० १८४८ मे मरा और उस का बेटा खड्ग सिंह पंजाब की गद्दी पर बैठा । एक साल के पीछे वह मर गया बरन लोग कहते है कि उसे बिष खिलाया गया था । उस के मरने पर पंजाब मे बडी गडबडी हो गई क्योंकि राजा राजा से झगडा करते थे । अंगरेज जो योद्धाओं को सिखाते थे सो दूर किये गये और कोई सेना को बश मे न ला सका । वे बिलकुल स्वाधीन हो गये । सन ई० १८४५ मे बडी सिक्खसेना ने अंगरेजो की जमीन मे चढाई किई और उन में और अंगरेजो की सेना मे चार बडी बडी लडाइयां हुई जिन का फल यह हुआ कि सिक्ख लोग सतलज नदी के पार अपने देश में लौटाये गये । अंगरेजो ने पंजाब का एक भाग अपने बश में कर लिया और दिलीपसिंह जो रणजीतसिंह का छोटा पुत्र था राजा मान लिया गया । सन १८४८ में फिर युद्ध हुआ क्योंकि दो अंगरेजी अध्यक्ष मुलतान मे कपट से मारे गये और तिस पर सिक्ख लोगो ने ठठके चाहा कि अपने अधिकार को फिर स्थापन करें । उन मे और अंगरेजो मे दो भारी लडाइयां हुई जिन का फल यह हुआ कि समस्त पंजाब देश अंगरेजो के बश मे आया और महाराजा दिलीपसिंह को पिन्सन दिई गई । यह सन १८४९ मे हुआ । सन १८५८ में दिल्ली पंजाब के संग मिलाई गई और सब अधिकार एक लफटीनेण्ट गवर्नर के हाथ मे किया गया । उस ओर के कितने नगरो की चर्चा होगी जिन को बटोही उत्तर की ओर चलकर देखेगा ।

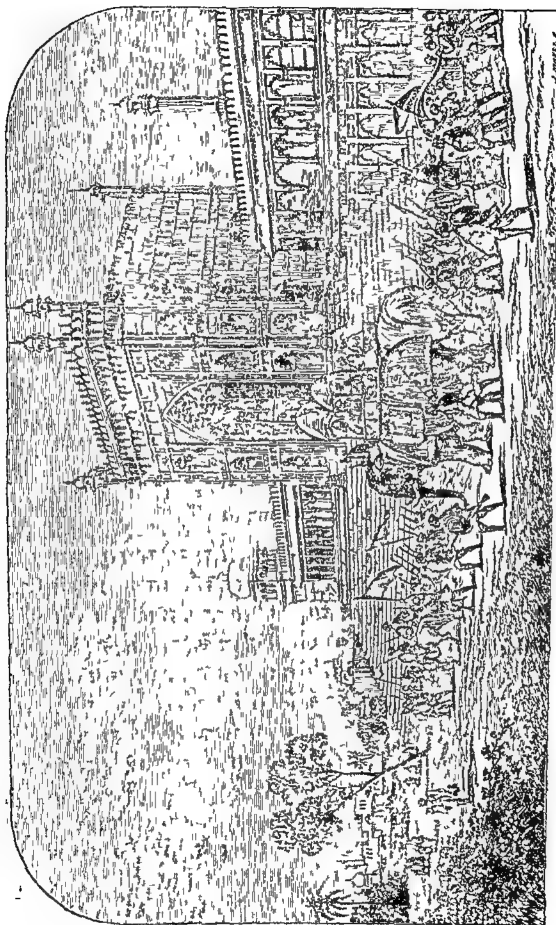
दिल्ली का बर्णन ।

दिल्ली यमुना नदी के पश्चिम तीर पर बनी है कलकत्ते से रेल पर सवार होके वह ९५४ मील दूर ठहरती है । दिल्ली हिन्दुस्तान के बहुतही बिख्यात नगरो मे है और उस का बहुतही प्राचीन इतिहास पाया जाता है । प्रगट है कि जब आर्य्य लोग उत्तर से हिन्दुस्तान मे आये तो उन के प्राचीन मुख्य नगरो मे यह एक है बरन जब बटोही दिल्ली के मैदान में खडा होता तो प्राचीन नगरों के खंडहर चारों ओर दूर लो दिखाई देते है । एक प्राचीन दिल्ली नगर इन्द्रप्रस्थ नाम से प्रसिद्ध था । महाभारत में लिखा है कि पाच



पुरानी दिल्ली का फाटक ।

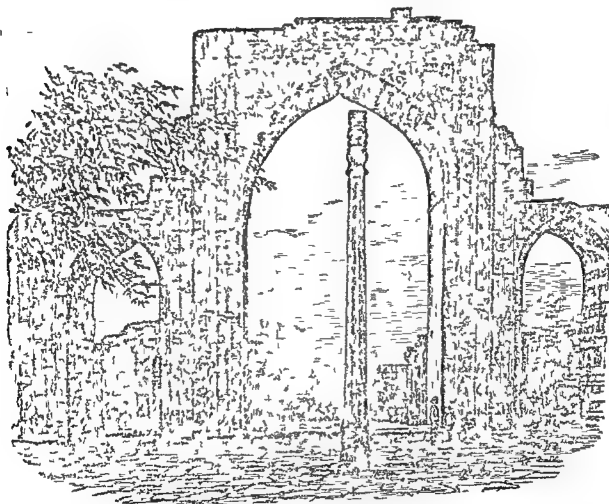
पाडव भाई जो गगा तीर के हस्तिनापुर नाम नगर से आये थे सो इन्द्रप्रस्थ की नेव डालनेहारे थे और युधिष्ठिर जो पहिला राजा था उस के वंश की तीस पीढ़ी दिल्ली की गद्दी पर बैठी । दिल्ली नाम पहिली सदी के पीछे इतिहासो में पाया जाता है । उस समय से बहुत बर्षो लो हिन्दू राजा वहा अधिकार रखते थे । चौथी सदी में कहते है कि राजा ध्रुव ने उस लोहे के खंभ को खडा किया जो आज लो कुतुब के पास खडा है जो ५० फुट ऊंचा १६ इंच मोटा है । सन ई० ७३६ में राजा अनगपाल ने दिल्ली को जो बहुत बरस से उजाड और सूनसान पडी थी फिर बनवाया और तौभी उन दिनो में उस के अधिक महाराजा लोग दिल्ली मे नहीं बरन कन्नौज में रहते थे । सन ई० ११८३ में महम्मद गोरी ने पृथुराज से लडकर उसे जीत लिया । थानेसर के मैदान में उस ने बडी क्रूरता से पृथुराज को घात किया । उन दिनो में दिल्ली कुतबुद्दीन के हाथ में छोड दिई गई थी और वह पीछे बादशाह बन गया और उस ने दिल्ली को अपना मुख्य नगर बनाया । कुतबुद्दीन जन्म से दास था परन्तु उस से दिल्ली के बहुत से बादशाह उत्पन्न हुए और नगर के कितने बडे २ गृह उस ने बनवाये । एक उस का चिन्ह वह स्तंभ है जो दिल्ली से दस मील दूर है और जो उस के नाम से कुतुब मीनार कहलाता है । वह २३८ फुट ऊंचा है बरन पहिले इस से ऊंचा था क्योंकि सन ई० १८०३ के भूंचाल में उस का ऊपरवाला भाग गिर पडा । कुतबुद्दीन के वंश के पीछे वह्द बादशाह आये जो तुगलक कहलाते है । उन का



दिल्ली की बड़ी मसजिद का फाटक ।

पहिला बादशाह गयासुद्दीन तुगलक नाम था और उस ने यहां एक नगर तुगलकाबाद नाम का बनवाया। यह दिल्ली से चार मील पूरब ओर है परन्तु पीछे लोगों ने यह बस्ती छोड दिई। उस के पुत्र महम्मद तुगलक ने तीन बार चाहा कि दिल्ली के समस्त निवासियों को एक दक्खिनी स्थान में जो देवगिरी नाम से प्रसिद्ध है ले पहुंचाऊं।

सन १३९८ मे तैमूरलंग की प्रसिद्ध चढाई अपनी इच्छानुसार बेचारे नगरवासियों को लूट मार करते रहे। कहते है कि दिल्ली की कितनी सडकों मे मृतकों की लोथें ढेर की ढेर हो गई यहां लों कि कोई उन में चल न सकता था। इतिहासरचक कहते है कि ऐसी क्रूरता कहीं दिखाई न गई कि मृतकों के कटे हुए मस्तकों से ऊंचे खंभ उठाये गये और उन के धड चीलहों और गीदडों को खिलाये



राजा ध्रुव का लोहे का खंभा।

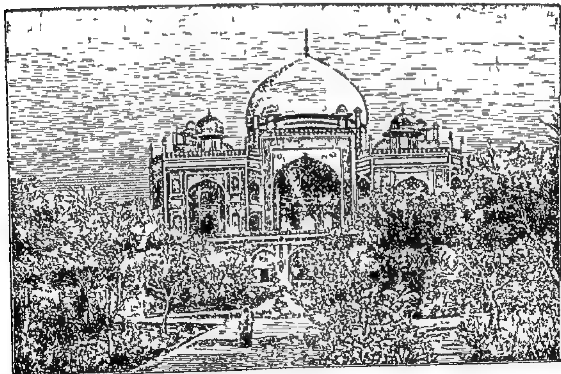
हिन्दुस्तान मे हुई। उस ने दिल्ली की भीतों के साम्हने महम्मद तुगलक से लडाई किई और उसे जीतकर दिल्ली को अपने बश में कर लिया। पांच दिन लों तैमूर ने अपने सेनापतियों को बडे सम्मेलन में खिलाया पिलाया और इतने दिन लों उस के क्रूर योद्धा लोग गये। वे नगर को न केवल लूटते बरन भस्म भी करते थे और जो निवासी बच गये सो दास और दासी होने के लिये बेचे गये यहां लों कि समस्त नगर उजाड किया गया।

सन १५२६ ई० में बाबर जो तैमूर से छठवीं पीढी का था सो पानीपत की लडाई में



चांदनी चौक—दिल्ली।

इब्राहीम लोदी से लड़ा और उसे जीत लिया और दिल्ली को अपने वश में कर लिया परन्तु उस ने आगरा को अपना मुख्य नगर बनाया। उस का पुत्र हुमायूं दिल्ली से अधिक प्रसन्न हुआ और उस का मकबरा आज लो देखने योग्य है। अकबर और जहांगीर बादशाह जो थे सो दिल्ली में नहीं बरन आगरा लाहौर और अजमेर में अधिक रहा करते थे शाह-जहां ने दिल्ली को ऐसा बनाया जैसा आजकल दिखाई देती है। और उस को अब की भीतों से घेर लिया। जुमा-मसजिद और बड़ा भवन जो अब है सो भी उस के बनाये हुए हैं।



हुमायूं का मकबरा—दिल्ली।

सन ई० १७३९ में नादिरशाह ने जो फारस का बादशाह था मोगल बादशाह को जीत लिया और दिल्ली को उस के हाथ से ले लिया। दो दिन पीछे यह झूठ बात लोगों में फैल गई कि नादिरशाह मर गया है सो नगरबासी फारसी लोगों को मारने लगे तिस पर नादिर-शाह ने ऐसे स्थान में खड़ा होके जहां से बड़ी २ सड़कों को देख सके योद्धाओं को आज्ञा दिई कि सब नगरवासियों को मार डालो और एक ही दिन में ३०,००० पुरुष स्त्रियां बालक

टुकड़े २ किये गये । ५८ दिन लो नादिरशाह के योद्धा लोग नगर के घरो को लूटते रहे । कितने लोग कहते हैं कि उन्हो ने ८,००,००,००० रुपये की सामग्री लूट लिई । दूसरे लोग कहते हैं कि यह नहीं वरन ३०,००,००,००० रुपये की हानि हुई । उस समय ताऊसी सिंहासन जो अद्भुत रीति रत्नो से विभूषित था फारस में पहुचाया गया । पिछली सदी के तेरहवे बरस के बीच में अफगानी लोगो की पाच चढाइया हुई जिन मे भयंकर रीति से दिल्ली निवासियो पर बडी क्रूरता दिखाई गई । एक समय दिल्ली के फाटक अफगान की सेना के लिये खोल दिये गये और वे मित्रो की रीति पर ग्रहण किये गये परन्तु महीना भर सेनावाले अपनी इच्छानुसार नगर में लूट मार करते रहे और इतने में अफगानियो के घुडचढ़े दिहात मे फिरा करते थे और बहुत से गाव को फूकते और निवासियों को घात करते थे । एक विशेष आनन्द उन का यह था कि हिन्दुओं के पवित्रस्थानो को गाय का रक्त छिड़कके अशुद्ध करते थे ।

सन १७८८ ई० में दिल्ली मरहठा लोगो के वश में आई बरन मोगलो का बादशाह सिन्धिया के हाथ में कैदी के समान रहा परन्तु सन ई० १८०३ मे अगरेजो ने दिल्ली को ले लिया और मरहठा लोगो को दूर किया । उस समय से ५० बरस लो नगर मे बडा चैन रहा परन्तु सन ई० १८५७ मे उन सिपाहियो ने जिन्हो ने मेरठ में बलवा किया था दिल्ली मे प्रवेश किया और तब जितने अगरेज नगर में थे पुरुष स्त्री बालक मारे गये । दो तीन महीने के पीछे दिल्ली सरकार अगरेज के वश मे फिर आई और मोगल बादशाह जिस ने सरकार से वैर किया था रङ्गून में भेजा गया । सन १८७७ ई० में दिल्ली मे बडा दरबार किया गया जिस में महारानी विक्टोरिया का नाम इम्प्रेस आफ इण्डिया मशहूर किया गया ।

दिल्ली के गली कूचे तग हैं परन्तु घर बहुधा ईंट से अच्छे बने हैं और दो तीन सडकें जिन मे लेन देन और आना जाना अधिक है अच्छी और चैाडी हैं । इन में चांदनी चैाक प्रसिद्ध है जिस के बीच मे वृक्ष लगे हुए हैं जैसा कि ७२ पृष्ठ की तसवीर मे देखने मे आता है । दिल्ली का गढ बहुत मनभावन है । उस में कितने गृह हैं जो तराशे हुए पत्थरो और रत्नो से विभूषित हो देखने योग्य हैं । इन मे दीवान खास बहुत सुन्दर है वरन बनानेहारो ने उस की भीतो पर ऐसा बचन लिख दिया कि यदि ससार भर में फिरदैास हो तो यही है । सत्य यही है परन्तु उस के बहुत से रहनेहारो को वह स्थान फिरदैास अर्थात बैकुठ न ठहरा ।

बडी मसजिद के बराबर हिन्दुस्तान भर में कोई दूसरी मसजिद न होगी । वह बहुत बडी और सगमरमर और लाल पत्थर से बनी है और ऊचे पर है और उस में चढने के लिये पत्थर की बडी और चैाडी सीढिया बनाई गई हैं । दिल्ली से दो मील दूर पर हुमायू का मकबरा देखने योग्य है । यह ताजमहल के समान एक बडी बारी के बीच में खडा है ।

दिल्ली के लोग गिन्ती में १,९४,००० हैं । ईष्टइण्डियन रेलवे एक बडे लोहे के पुल के द्वारा से जमुना पार जाती है और दिल्ली में प्रवेश करती है वरन कई एक और रेलवे दिल्ली में मिलती हैं । यहा एक विशेष कारीगरी बूटेदारी है अर्थात सोना चान्दी से सुन्दर चमकीला वस्त्र बनाना है । मोगलो के राज्य के जाते रहने से यह काम कम किया जाता है परन्तु उस की सन्ती में नये २ उद्योग

उत्पन्न होते जाते है और कितनी रीति से नगर की उन्नति होती जाती है।

दिल्ली से ६० मील उत्तर ओर पानीपत नाम एक बहुत प्राचीन स्थान है। कहते है कि जब युधिष्ठिर और दुर्योधन लडाई करते थे तो उस ने यह पत अर्थात स्थान दुर्योधन से मांगा। पानीपत के मैदान मे तीन बार बड़ी लडाइया हुई जिन के कारण से उत्तर हिन्दुस्तान का राज्य जीतनेहारे को मिला।

पानीपत से २५ मील उत्तर पच्छिम ओर थानेसर नाम एक बस्ती सरस्वती नदी के तट पर बनी है। हिन्दुस्तान के सब से प्राचीन नगरो मे एक यही है। महाभारत की कहानियो मे उस का नाम कई बार मिलता है वरन कुरुक्षेत्र का मैदान जो महाभारत में प्रसिद्ध है इस बस्ती के समीप है। सन ई० १००१ मे महमूद गजनवी ने एक बार इस स्थान पर चढाई किई। वहां का एक ताल विख्यात है जिस में स्नान करने के लिये यात्री दूर से आते है वरन हिन्दुओं में यह कहानी प्रचलित है कि जब सूर्य्यग्रहण होता है तो समस्त और पवित्र तालों का जल इस ताल में आकर शरणागत होता है सो जो कोई ऐसे समय मे यहा स्नान करे तो मानो उसी क्षण मे समस्त तीर्थो में स्नान कर चुकता है और कौन वर्णन कर सकता कि इस एक स्नान से पुण्य प्रताप कहां लो उत्पन्न होता है।

अम्बाला एक बडी छावनी है जो सन ई० १८१३ में सरकार अंगरेज के हाथ में आई। उस में और दिल्ली में १३६ मील की रेल बनी है। यह वह स्थान है जहा यात्री रेलवे को छोड़कर शिमला पहाड़ की ओर जाता है। वह डाकगाड़ी में सवार होके कालका में जो अम्बाला से ३७ मील दूर है जा पहुंचता और यह पहाड़ के बगल मे है। यदि यात्री पुराने मार्ग से चले तो शिमला कालका से ४० मील दूर है परन्तु वह मार्ग ऐसा ऊंचा नीचा है कि उस में गाड़िया नही चल सकतीं। आजकल ५० मील लबी एक नई सड़क बनी है जिस मे तांगा नाम गाडी चल सकती है यह एक हलकी दो पहिये की गाडी है जिस को दो टट्टू खींचते है।



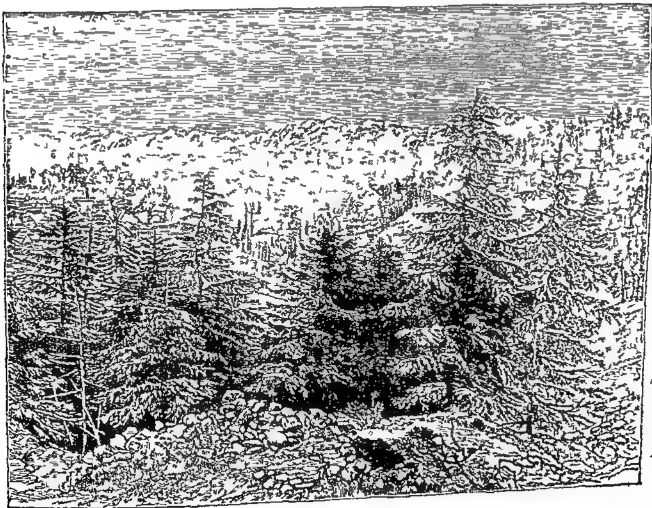
शिमला पहाड़ की पुरानी सड़क।

सन १८१९ ई० में एक साहिब ने पहिले उस स्थान में जो अब शिमला नाम से प्रसिद्ध है एक घर बनाया। उस समय से बहुत से घर वहा बन्ने लगे। सन १८२७ ई० में लार्ड एमहर्ष्ट साहिब कई महीने लों वहां रहे

और लार्ड लारन्स के दिनो से लेके अब लो वह छ महीने लो हिन्दुस्तान का मुख्य नगर ठहरता है ।

शिमला समुद्र से ७,००० फुट ऊचा है बरसात मे बहुत पानी बरसता और बहुत बादल घरो पर पडे रहते है । वहा से हिमालय के बड़े २ पर्व्वत कम दिखाते है परन्तु यदि कोई समीप के पहाडो पर चढे तो श्वेत चोटियां भली भाति दिखाई देती है ।

अम्बाला से यदि यात्री रेल पर सवार सरकार अगरेज के हाथ में आया लुधियाना सरकार की बडी छावनी था क्योंकि सीमा के पास था और सिक्ख लोगो और सरकारी सेना मे कितनी भारी लडाइया लुधियाना के समीप किई गई । लुधियाना से ३२ मील आगे बढकर जलधर नाम एक बडी छावनी है और उस से ५२ मील आगे बढके अमृतसर है जो सिक्ख लोगो का पवित्र तीर्थ स्थान है ।



शिमला पहाड ।

होके उत्तर पच्छिम ओर चले तो लुधियाना शहर मिलेगा जिस में नाना प्रकार के अच्छे कपडे बनते है उस से पहिले जब पनाब देश

सिक्ख लोगो का वर्णन ।

बहुत दिनो तक सिक्ख लोग पनाब के अधिकारी रहे । सिक्ख शब्द का अर्थ शिष्य

अर्थात चेला है क्योंकि यह लोग विशेषकर अपने गुरुओं को माना करते थे। नान्हक जिस ने इस मत को आरंभ किया सो सन ई० १४६९ मे लाहौर के समीप उत्पन्न हुआ। उस का मत विशेषकर कबीर की शिक्षा से निकाला गया। वे दोनो यह विचार करते थे कि जब हिन्दू मुसलमान एक संग रहते है तो चाहिये कि उन का एक मत हो जाये। वह सोचता था कि उस मत की जड़वाली बात यह हो सकती है कि दोनों सन्तान एक ही परमेश्वर को भजे परन्तु सत्य पूछो तो नान्हक यह नहीं मानता था कि परमेश्वर एक है वरन यह मानता था कि वह सब कुछ है। वह यह सिखाता था कि हरी नाम जपने से मुक्ति मिलती है और कि वह और किसी द्वारा से न मिलेगी। नान्हक इधर उधर बहुत यात्रा करता था वरन लोग उस के विषय अद्भुत प्रकार की कहानियां कहा करते थे। वे कहते थे कि जब वह चाहता था तब हवा में चिड़ियों के समान उड़ सकता था और जब किसी स्थान मे जाने चाहता था तब उस स्थान को अपने पास बुला सकता था। यह भी कहते है कि एक बार मक्का में जाकर हज्ज किया और जब वहां था तब रात को काबा की ओर पैर फैलाके सो गया। किसी ने उसे निन्दा करके जगाया कि अरे दुष्ट क्या उस स्थान की ओर जहां ईश्वर है तू अनादर से पाव फैलाता है। वह बोला बता दो भाई कि ईश्वर किधर नहीं है और मैं उधर को पांव फैलाऊंगा।

सन ई० १५३९ में जब ७० बरस की अवस्था में था तब नान्हक मर गया परन्तु उस के पीछे सिक्ख लोगों के बहुत गुरु उठे। गोविन्द ने जो दसवां गुरु था चाहा कि सिक्ख लोग लड़नेहारे सन्तान हो जाये। उस ने जाति के भेद मात्र को वर्जित किया और लोगों को समझाया कि अपने २ नाम में सिंह शब्द जोड़ दे और लंबे केश रक्खे और तरवार बांधे फिरे। गोविन्द के दिन झगड़ों में कटे और पीछे किसी ने उस को कपट से घात किया। पटना नगर में एक मंदिर उस के नाम से बना है। जब गोविन्द बूढ़ा हुआ और लोग कहते थे कि बताओ तो कि आप के पीछे गुरु कौन होगा तो उस ने उत्तर दिया कि नहीं मेरे मरने पर ग्रन्थ साहिब आप तुम्हारा गुरु होगा जो कुछ बूझने चाहते हो उस पुस्तक से पूछना और वही तुम्हें बतायेगी। अब थोड़े दिन हुए कि ट्रम्प साहिब ने आदि ग्रन्थ को अंगरेजी भाषा में उल्था किया परन्तु वह पुस्तक पढ़ने मे अच्छी नहीं है क्योंकि एक ही बात बार २ दूसरे शब्दों में लिखकर दोहराई जाती है और पढ़नेहारा थक जाता है। सिक्ख लोग इस बात पर फूलते है कि हिन्दुओं के समान हम मूर्त्तिपूजा नहीं करते है। परन्तु सत्य पूछो तो ग्रन्थ की पुस्तक उन की मूर्त्ति है। जैसा हिन्दू अपनी मूर्त्तों से करते है वैसे वे ग्रन्थ को पहिनाते और सुलाते और पंखा करते और सब बातों में ऐसा करते है जैसा हिन्दू कृष्ण की मूर्त्ति से करते है। सिक्ख लोग जाति के भेद को मानते है और हिन्दू रीति व्यवहारों पर चलते है सो गुरुओं की शिक्षा बहुत बातों में व्यर्थ ठहरी है वरन बहुत मिथ्या बातों में जैसा कि गाय के पूजने में हिन्दुओं से अधिक मूर्खता उन में पाई जाती है। पंजाब में ऐसे दिन हुए जिन में अपनी पुत्री का घात करना छोटा पाप और गाय का घात करना महापाप समझा जाता था। इस का कारण यह था कि गाय के विषय उन में

और मुसलमानो मे बडा झगडा रहता था और मुसलमान जब कभी उन को अवसर मिलता तो हिन्दुओ पर विजय करके अपने विजय के प्रगट करने के हेतु वहा गायो को घात करते थे। और सिक्ख लोग इस्से क्रोधित हो जब उन्हे विजय मिलता था तो मुसलमानो की मसजिदो में सुअरो को बध करते थे। नानक की इच्छा यह थी कि हिन्दू और मुसलमान एक हो जाये परन्तु आज लो पजाब मे उन मे बडा बैर रहता है। सिक्ख लोगों में एक बात यह है कि मद पीना वर्जित नही है परन्तु कोई तमाखू न पीये नहीं तो उस का समस्त पुण्य प्रताप जाता रहेगा। सिक्ख लोगो में एक बुरा मत यह है जो अकाली नाम से प्रसिद्ध है वे कहते है कि हम निष्काल ईश्वर को भजते है और कि हमें उचित है कि अपने मत के वैरियो को मार डाले। वे ऊचो पगडी बाधते है जिन में स्पात के चक्र लगे रहते है।

सिक्ख लोगो की गिन्ती १८,००,००० है। उन के समान अगरेज किसी सूरवीर सन्तान से हिन्दुस्तान मे न लडे परन्तु आजकल वे सरकार की बडी मित्रता करते है और बलवे के दिनो मे उन्हो ने सरकार की बडी सहायता किई।

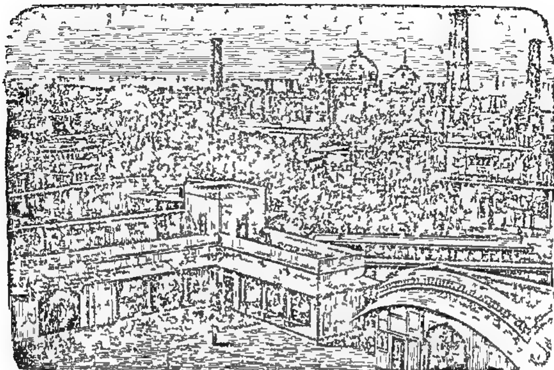
अमृतसर का वर्णन।

लाहौर को छोडके अमृतसर पजाब का सब से बडा नगर है। वह रावी और व्यास नदी के बीच में बना है। अकबर बादशाह ने रामदास को जो सिक्ख लोगो का चौथा गुरु था यहा नगर बनाने के लिये जमीन दिई। उस ने नगर की नेव डाली और उस बडे ताल को खुदवाया जिस से नगर का नाम विख्यात है और ताल के बीच में मदिर भी बनवाने लगा जो उस के बेटे से समाप्त हुआ। सन ई० १७६२ मे अफगानियो और सिक्ख लोगो मे बडी लडाई हुई जिस मे अफगानियो को विजय प्राप्त हुआ सो उन्हो ने अमृतसर नगर को उजाड दिया और बारूद लगाकर मदिर को गिरा दिया और ताल को मिट्टी से भर दिया और पवित्रस्थान को गाय के रक्त से अशुद्ध किया। पीछे सिक्ख लोगो ने उस नगर को फिर बनवाया और सन ई० १८०२ में वह स्थान रणजीतसिंह के हाथ में आया उस ने उस का बडा आदर-सन्मान किया और मदिर पर बहुत रुपये लगाये। उस ने उस की छत पर ऐसे तावे के पत्र लगाये जिन के ऊपर सोने का मुलम्मा किया हुआ था जिस से मदिर धूप मे चमकता है और इस से उस का नाम सोन्हला मदिर विख्यात भी हुआ। उस ने गोविन्दघर नाम नगर के समीप एक बडा गढ भी बनवाया।

अमृतसर का सोन्हला मदिर देखने योग्य है। नीचे वह श्वेत सगमरमर का बना और ताजमहल के समान रत्नो से सवारा हुआ है। उस में इस प्रकार की पूजा हुआ करती है कि भीतर की बडी कोठरी मे गुरु जी बैठते है और ग्रन्थ की पुस्तक उस के आगे खुली रहा करती है जिस मे से गुरु और उस के सहायक बाजाओ के सहित गाके सुनाते है और पुजेरी उन के सन्मुख या उन के साम्हने दान दक्षिणा डाला करते और तब प्रणाम कर चले जाते है क्योकि ग्रन्थ की पुस्तक पूज्यवस्तु समझी जाती है। अमृतसर के गली कूचे टेढे तिरछे और तग है परन्तु आजकल कुछ सुधारे गये है। अमृतसर में लेन देन

और व्योपार बहुत है और बहुत काश्मीरी लोग जो उस मे रहते दुशाले बनाते है । नगर के गृहो में अलिकसण्ड्रा नाम लडकियों की पाठशाला अच्छी है ।

लाहैार का वर्णन ।



लाहैार नगर ।

अमृतसर से ३२ मील और आगे बढके लाहैार नगर देखने में आता है । यह पंजाब का मुख्य नगर और रावी नदी से मील भर दूर है । इस स्थान के अदल बदल बहुत हो चुके है । तीन सा बरस लो वह मानो महम्मदियो की चढाइयें के रोकने के लिये दृढ गढ था परन्तु दसवी सदी के अन्त में सुबक्तगीन ने जो गजनी का सुलतान था जैपाल नाम लाहैार के महाराजा को जीत लिया सो जैपाल ने निरास हो अपने को आग से भस्म किया । सो लाहैार गजनी सुलतानो का मुख्य नगर हो गया पीछे मोगलों के बादशाह वहा रहने से प्रसन्न हुए । अकबर जहांगीर शाहजहा औरंगजेब क्रम २ करके कुछ दिन लो वहा रहे और एक २ ने अच्छे २ गृह वहा बनवा दिये परन्तु पीछे वैरियो की चढाइयो से नगर की सुन्दरता जाती रही वह मानो ईटो का ढेर हो गया जिन के बीच मे सिक्ख लोगो के दो कोट बने रहे और बाहर चारो ओर तोडे हुए घरो के चिन्ह दिखाई देते थे । रंजीतसिंह के दिनो मे लाहैार की उन्नति हुई परन्तु उस ने मुसलमानो के मकबरो से पत्थर निकलवाकर अमृतसर के मंदिर को बनवाया । रंजीतसिंह का घोरहरा अच्छा बना है । उस में हिन्दू और महम्मदी दोनो प्रकार की बनावट दिखाई देती है । घोरहरा के बीच मे सिक्ख मत की पोथी रक्खी हुई है । ग्यारह मट्टी के चैारे है जिन में रंजीतसिंह की ग्यारह रानियो की राख रक्खी हुई है जो कि रंजीतसिंह के लिये सती



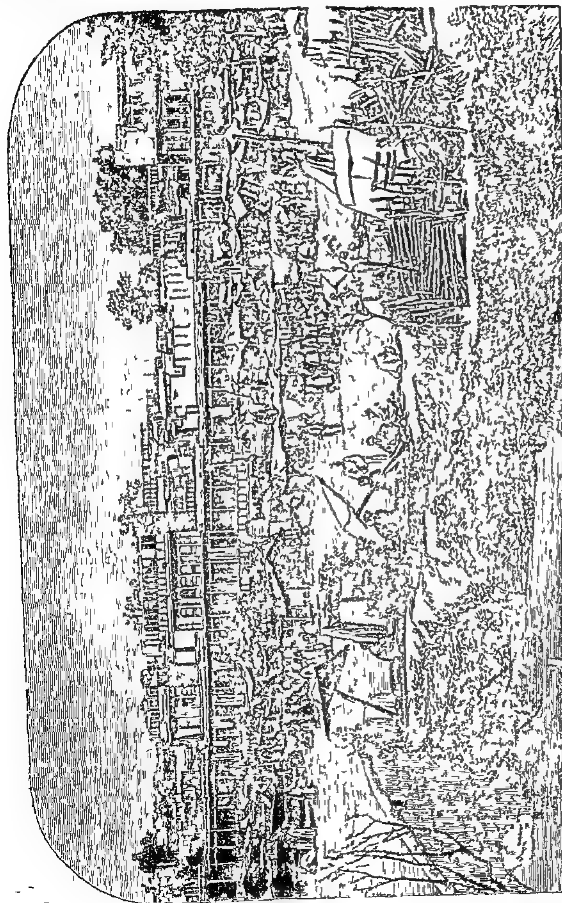
लाहौर के महाराजाओं का भवन ।

हुई थीं। नगर में घर ऊचे और सडके तंग हैं और इस कारण से सडके अच्छी नहीं है परन्तु मोगलों के समय के बहुत अच्छे २ गृह दिखाई देते है और उन को छोड पंजाब यूनीवर्सिटी मेयो हास्पिटल और रेलवे का ष्टेशनघर आजकल के बनाये हुए अच्छे गृह हैं। लोगों की गिन्ती १,७७,००० है यह अमृतसर की गिन्ती से कुछ बडी है। लाहौर से थोडी दूर मियामीर नाम अंगरेजों की बडी छावनी है।

कांगडा का वर्णन।

पंजाब देश के उत्तर पूरब कोने मे कांगडा नाम एक पहाडिस्तान है जो हिमालय के उस पार अर्थात तिब्बत लों पहुंचता है। पूर्वकाल में यह जलधर के राजपूत राजाओं के राज्य का एक भाग था। कांगडा गढ जो एक अलग पहाडी की चोटी पर बना था जैसा अगले पृष्ठ के चित्र में दिखाई देता

के कारण से पानी मे एक जोखिममय भवर उठता रहता है। ये दो चटान कमालिया और जलालिया दो नास्तिको के नामों से कहलाते है जो अकबर बादशाह के दिनो में उन की चोटियो पर से गिराये गये थे परन्तु जब से रेल का पुल बना है तब से नदी पार चलना सहल है।

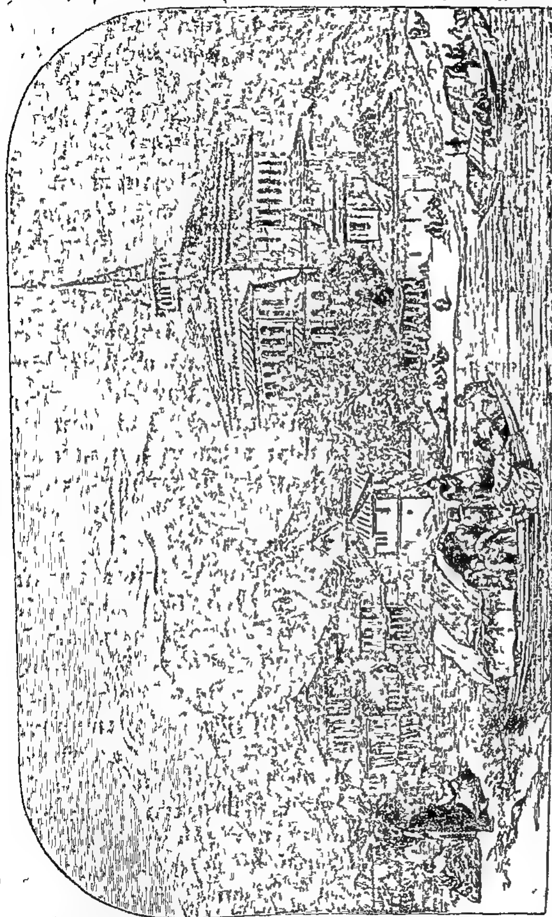

पेशावर नगर।

अटक से ४६ मील बढके पेशावर नगर मिलता है जो काबुल नदी के नोचान में बना है। उस नोचान के पच्छिम सिरे पर खैबर नाम वह दुर्गमार्ग है जिस के द्वारा से लोग पहाडों को पार करके काबुल मे जाया करते है। पूर्व वाले सिरे पर सिन्ध नदी है। यह नोचान स्वाधीन पठानो वा अफगानी सन्तानों से घिरा हुआ है जो वहा के निवासियो को बहुत कष्ट दिया करते है। पेशावर मे अगणित लडाइया हो चुकी जिन का यहा वर्णन करना अवश्य नहो है। सन १८१८ ईसवी मे सिक्ख लोगो ने इस जमीन को पहाड़ो तक अपने वश मे कर लिया और कितने वर्ष पीछे वे उसे बसाने लगे। सन ईसवी १८४८ मे वह अगरेजो के हाथ मे आई।



श्लीमश्लिट पैश्र दुगमार्गो मे।

पेशावर नगर में घर बनाने का यह दस्तूर है कि पहिले लकडी के चौखटे की भीतें उठाते है और पीछे उन को छोटी २ ईंटों वा मट्टी से भर देते है। गली कूंचे बहुधा



शाहहमदान की मसजिद—श्रीनगर।

गये हैं। लदाख देश के निवासी और सतान देख पड़ते हैं। उन का रूप रंग चीनवालो का सा है। आजकल काश्मीरवासियो को भूचालो से बहुत दुःख पहुंचा है।

काश्मीर के निवास में एक बहुत प्राचीन हिन्दू राज्य था। वह इस बात मे विख्यात था कि यह अकेला हिन्दू राज्य था जिस का पूर्वकाल का लिखा हुआ इतिहास पाया जाता है। चौदहवीं सदी मे मुसलमानों का राज्य यहा स्थापित किया गया। सन ई० १७५२ में अहमद शाह ने काश्मीर को जीत लिया और वह सन १८१९ तक अफगानी लोगो के वश में रहा तब सिक्ख लोगों के वश मे आया। जब अंगरेजों से सिक्ख लोगों की लड़ाई हुई तब ७५ लाख रुपये के देने पर काश्मीर गुलाब सिंह के हाथ में स्थिर किया गया।

होते हैं। वहा से आकर कितने काश्मीरी ब्राह्मण हिन्दुस्तान के बहुत नगरो में बस

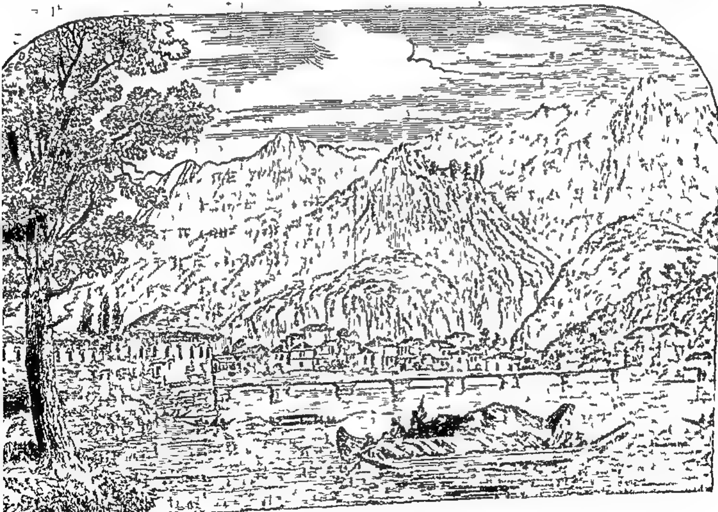
काश्मीर के राज्य मे बहुत उपद्रव रहता था। महाराजा हिन्दू थे और देश के निवासी अधुधा

इम्मदी। सो प्रजा को नाना प्रकार का दुःख हुंचता था। पिछले राजा के मन मे यह आया के, मेरा पिता मछली का जन्म ले चुका है सो स ने मछलियो का पकडना वर्जित किया सा न हो, कि कोई, पिता को खा जाय। ब वह राजा, मरा और दूसरा गद्दी पर ठा तब भी देश की बुरी दशा रही यहा ा कि सर्कार ने कुछ दिन लो राज्य कार्य्य किसी प्रतिनिधि के हाथ में सोप दिया।

तट पर वह है। वहा आठ स्तमवाला पुल बना है जिस के द्वारा यात्री झोलम के पार जा सकता है जैसा इस चित्र मे देखने में आता है।

सिन्ध देश की यात्रा।

लाहौर में लौटकर यात्री रेलगाडी में सवार होके मुलतान नगर को जो ३१० मील



बारामूला और झोलम नदी।

बारामूला उस नगर का नाम है जो वहा बना है जहा झीलम नदी पहाडों के बीच मे से बहके निचान को छोड देती है। ऊंचे २ पहाड पास है और उन के नीचे नदी के

दूर है जा सकता है। यह अति प्राचीन नगर है। सिकन्दर महान ने उसे घेर लिया और कठिन लडाई करके उसे वश में लाया परन्तु उस युद्ध में आप घायल हो गया।

बहुधा खेती बारी करते है। बस्तियों मे बहुत से हिन्दू लोग बणिज व्योपार करते है। बहुत सिन्धी लोग एक ऊंची अद्भुत रूप की टोपी पहिनते हैं।



बोलन दुर्गमार्ग।

ऊपरवाले सिन्ध मे एक स्थान है जहां सिन्ध नदी चटानों में कटे हुए दो सकरे मार्ग में बहती है। बीच में एक टापू है जिस पर भक्कर नाम एक गढ़ बना है। पच्छिम वाले तीर पर सक्कर नाम बस्ती बनी है और पूरबवाले तीर पर रोड़ी नगर है। इस स्थान में नदी पर रेलगाड़ी के पार उतरने के लिये एक अच्छा पुल बना है।

सक्कर के आगे सक नाम एक गांव है जहां से दूसरी रेलवे आरम्भ हुई है जो बलूचिस्तान के क्वेटा नगर तक अर्थात् १५६ मील दूर तक बनी है। यह रेल बोलन नाम प्रसिद्ध दुर्गमार्ग के द्वारा से पहाड़ों के उस पार पहुचाई जाती है। बोलन का दुर्गमार्ग ६० मील लंबा है

और कितने स्थानों में इतना सकरा है कि तीन चार सवार कठिनता से एक संग चल सकते हैं। परन्तु जब वहां की नदी में बाढ़ बढ़ती तब मार्ग बन्द हो जाता है। दुर्गमार्ग की सब से बड़ी ऊंचाई ८५00 फुट है और ऐसा न हो कि कोई बैरी इस मार्ग के द्वारा उत्तर से आवे सर्कार ने सन १८७६ में क्वेटा में छावनी बनाई तब से यहां की दशा कुछ अच्छी हो गई। बटोही जो इस मार्ग से चलते हैं सो अधिक रक्षा पाते हैं और लेनदेन अधिक बढ़ता जाता है।

अब यात्री सक्कर में जहाज पर सवार हो और २२५ मील समुद्र की ओर चले तो कतरी नगर में पहुंचता है और वहां से रेलवे दक्खिन पच्छिम की ओर कराची लों बनी है। कतरी से तीन मील दूर नदी पार एक पथरीली पहाड़ी है उस पर हैदराबाद नगर बना है जो पहिले अमीर लोगों का मुख्य नगर था। वहां के सुन्दर बर्त्तन और बूटे काढे कौशाम्बर के कपड़े प्रसिद्ध हैं। वहां वह बडे २ बर्त्तन भी बनाये जाते हैं जिन्हें इण्डस नदी के मछुवे जाल के और घेड़े के सभालने के लिये काम में लाते हैं।

कराची जो पच्छिम सीमा पर बना है सिन्ध देश का सब से बड़ा नगर है। आजकल सर्कार के यत्नों से उस का बहुत अच्छा कोल बन गया है और पंजाब का अधिक लेन देन जो और देशों से होता सो कराची के द्वारा किया जाता है। पूर्वकाल की अपेक्षा अब नगर की बड़ी उन्नति है। समुद्र के समीप होने से यहां गर्मी कम होती है। हैदराबाद की पूरब ओर उन पहाड़ियों के समीप जो मरुभूमि की सीमा पर है अमरकोट नाम एक बस्ती है। सन ईसवी १५४२ मे जब हुमायूं यहां होके काबुल को जाता था तब उस का बेटा जो पीछे अकबर बादशाह प्रसिद्ध हुआ यहां उत्पन्न हुआ।

सिन्ध की दक्खिन पूरब ओर कच्छ नाम एक लंबी धनुष आकार जमीन है और उस में और सिन्ध के बीच में एक लंबी खारे पानी की झील है जिस को लोग कच्छ का महारण्य कहते हैं। कच्छ की जमीन बहुत ऊसर और निष्फल है। पहाड़ियों की दो पांतियां पूर्व से पच्छिम लों उस में हैं। उस देश में जंगली गदहे बहुत पाये जाते और घोड़े बहुत पाले जाते हैं। कच्छ का महाराजा राव नाम से प्रसिद्ध है और उस के अधीन २00 सर्दार हैं। भुज नाम मुख्य नगर देश के बीच में है। सन ईसवी १८१९ में एक बड़ा भूचाल वहां हुआ कि जिस से भुज बहुत उलट गया और वहां बालू का एक बड़ा ढेर उठ गया जिस को वहां के लोग अल्लाहबांध नाम देते हैं। समीप की एक जमीन उस समय बैठ गई और बड़ी झील बन गई।

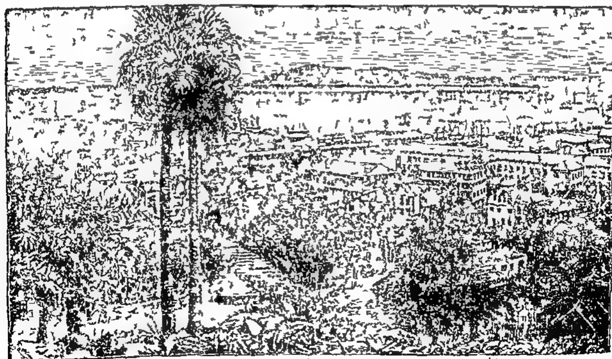
वह रन जिस की चर्चा ऊपर हुई एक बालूमय निचान है जिस पर समुद्र का जल बरसात में चढ़ जाता है और दूसरे समयों में जल सूख जाता और जमीन पर लोन हो जाता है इस कारण से वह अरण्य अर्थात मरुभूमि कहलाती है। रन में कितने टापू पाये जाते हैं परन्तु जंगली गदहों और मक्खियों को छोड़ कोई जीव वहां नहीं रहता। कच्छ देश की पूर्वी सीमा पर एक और छोटा रन पाया जाता है।

सिन्ध की दक्खिन पूरब ओर एक बड़ा सा प्रायद्वीप है जिस का नाम पूर्वकाल में सुराष्ट्र था और आजकल काठियावार है जिस में दो चार तीर्थस्थान पाये जाते हैं। द्वारिका

जो उत्तर पच्छिम के कोने पर है वह स्थान है जहा कहते है कि कृष्ण कुछ दिन तक रहा था और सोमनाथ नाम एक प्रसिद्ध मन्दिर है जो दक्षिण के समुद्र तीर पर बना है जिस के समीप कृष्ण मरा था और उस की लोथ फूकी गई थी। सन १०२५ ईसवी मे महमूद गजनवी ने सेना सहित आकर इस मन्दिर को लूट लिया। सोमनाथ की उत्तर ओर एक जगली पहाडिस्तान है जिस का गिर नाम है। एक पहाडी गिरनार कहलाती है उस के बगल ऐसे पत्थर मिलते है जिन पर सन २५० मसीह से पहिले असोका बादशाह ने अपनी आज्ञाये लिखवाई। गिरनार जैन मतवालो का विख्यात तीर्थस्थान है और उस पहाडी की चोटी पर कितने सुन्दर मन्दिर उस मत के बने है। इस के पच्छिम ओर शत्रुजय पहाड है जहा अगणित जैन मन्दिर बने है और जिस के दर्शन करने के लिये हजारो यात्री हर सा[ल] जाया करते है। इस पहाड के समीप पलि[ता]ना नाम एक नगर भी है।

काठियावार देश १८८ अलग २ राज्यो [मे] बाटा गया है जिन मे से ९६ अगरेजों [की] अमलदारी मे है और ७० बडोदा के गायकवा[ड] को कर देते है और बाकी जो है सो कु[छ] कर नही देते है। सर्दारो के लडको के पढा[ने] के लिये एक राजकुमार कालिज उस देश [मे] बना है। उस मे भाव नगर सब से बलवन्[त] राज्य है और उस में राज्यकार्य्य भी भले भाति किये जाते है और हिन्द के देशी राज्यो मे यही पहिला था जिस ने राज्य के रुपयो [से] एक रेलवे बनवाई। वहा के कितने और राजा लोग प्रजा के सुख की अधिक चिन्ता करते हैं। यात्री भाव नगर के पास जहाज पर सवार होके समुद्र के मार्ग से बम्बई मे पहुच सकता है।

बम्बई प्रेसीडेन्सी का वर्णन।



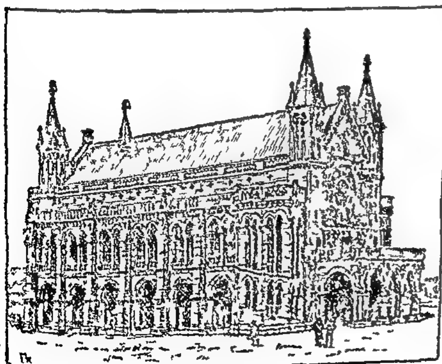
बम्बई का कोस।

बम्बई प्रेसिडेन्सी मे सिन्ध देश का बडा भाग है। वह एक लम्बा देश है जो समुद्र तीर वहा से दक्षिण ओर फैला हुआ है। उस की पूर्वी सीमा ये है मैसूर और निजाम का राज्य और हिन्द के बीचवाले राज्य। वह मन्दराज की प्रेसिडेन्सी से कुछ छोटी है अर्थात उस मे १,२४,००० वर्ग मील जमीन है और उस मे १,९०,००,००० निवासी है। फिर बम्बई की अमलदारी में कितने देशी राज्य है जिन मे ७४,००० वर्ग मील जमीन और अस्सी लाख निवासी है। वह जमीन जो समुद्र तीर पर है बहुत ऊंची नीची और असम है और उस में और दक्षिण की ऊची जमीन में पहाडो की बडी पांति जो पच्छिमी घाट कहलाती है पाई जाती है। बम्बई के उत्तरवाले भागो में चार नदियां बहतीं और बम्बई के समुद्र में जा गिरतीं है यह सब राबती और माही और तापती और नर्वदा नदिया है।

पच्छिमा घाट के समीप बहुत पानी बरसा करता है। वहा के खेतो मे गेहूं और रुई अधिक उत्पन्न होता है। समुद्र तीर पर नारियल के वृक्ष बहुत है। पहाडो में वृक्ष के महावन है जहा से साखू आदि बहुत लकडी प्राप्त होती है। बबई प्रेसिडेन्सी में तीन भाषाये प्रचलित है अर्थात बबई के समुद्र के पास गुजराती और बीच में मरहठो और दक्षिण मे कनारी। लोग बहुधा हिन्दूधर्म्म को मानते है पर पाच निवासियो मे एक मुहम्मदी है और जैन और पार्सी और मसीही भी है। बबई प्रेसिडेन्सी का अध्यक्ष गवर्नर कहलाता है और दो राजसभा राज्यकार्य्य में उस को सहायता करती है।

बम्बई के इतिहास का वृत्तान्त।

सन ई० १५३२ में बबई नाम एक छोटा टापू पोर्टुगाली लोगो के हाथ में आया है। सन १६६१ में जब इङ्गलिस्तान के चार्लस दूसरे ने एक पोर्टुगाली राजकन्या को बिवाह लिया था तब यह टापू स्त्रीधन की रीति पर उसे दिया गया। परन्तु टापू चार्लस बादशाह के काम न आया सो सन १६६८ में उस ने उसे दस रुपये के किराये पर कम्पनी बहादुर के हाथ में दे दिया। परन्तु उसी साल में जञ्जीरा के नवाब ने जो मोगलो के जहाजो का सर्दार था टापू को घेरा। सन १७०८ में सर्कार



विक्टोरिया टर्मिनस—बम्बई।



[illegible] की एक सड़क।

की अमलदारी बंगाल मन्दराज और बम्बई इन तीन प्रेसिडेन्सियों मे बांटी गई। उस बडी लडाई के दिनो में जो मरहठा लोगो से किई गई अर्थात सन ईसवी १७७४ से लेके १७८२ तक सालसट आदि कितने टापू और तानना नगर बम्बई की प्रेसिडेन्सी मे जोडे गये। सन १८१८ में पेशवा का अधिकार उलट दिया गया, और तब से बम्बई नगर की बहुत बढती होने लगी और वह एक बडी जमीन का मुख्य नगर हुआ। उस का कोल समस्त हिन्द के और कोलो से अच्छा और वह हिन्द के और नगरो से भी बडा है क्योंकि उस में ८,४०,००० निवासी है जिन में से ६00000 हिन्दू २00000 मुहम्मदी और बहुत से पारसी है।

बम्बई हिन्द के नगरो में इन दो बातो के विषय प्रसिद्ध है कि चारो ओर देखने योग्य स्थान है और कि और स्थानो से बढकर वहा वणिज ब्योपार करने के लिये अच्छा अवसर मिलता है। आजकल रेलवे से लेके धरती तक बांध बांधा गया है सो टापू मानो अब टापू न रहा। जो यात्री समुद्र से कोल मे आता, उस के आगे मनभावन, रंगभूमि चारो ओर दृष्टि आती है। साम्हने चौडे कोल का पानी है जिस में इधर उधर टापू पाये जाते हैं और अगणित देशी नौका इधर उधर जाती है और बहुत से विलायती जहाज लंगर डाले हुए रहा करते है उन के पीछे धरती पर नगर है जिस में बहुत से ऊंचे नीचे घर मन्दिर आदि दूर से दिखाई देते हैं। समुद्र के किनारे बडे २ गोदाम महाजनो के सौदा धरने के लिये और जहाजो के मरम्मत करने के स्थान बने हुए है और लहरो के रोकने के लिये पांच मील तक बांध बांधा गया है। फिर नगर के पीछे वह पहाड दूर से दिखाई देते है जो पच्छिमी घाट कहलाते है।

बम्बई का टापू एक नीचे मैदान मे है जो ११ मील लंबा और ३ मील चौडा है और उस मे छोटी पहाडियो की दो पांति पाई जाती है। इन मे से एक का सिरा कोलाबा पहाडी है जो टापू की जमीन को पूर्व ओर लहरो के जोर से बचाती है। दूसरी पांति के सिरे पर मलाबार पहाडी है और वह निचान जो उन के बीच में है सो बाकबे कहलाता है वहां से लेके कोल के तीर लो कुछ जमीन ऊंची है और उस पर बम्बई का गढ बना है और उस के पास बस्ती बसाई गई है। आजकल गढ की भीतें गिर गई और उन की नेवो के ऊपर महाजनो के बडे २ बैठक बने है।

सन ईसवी १८६१ में जब अमरीका में भारी लडाई हुई, तब हिन्द में रुई की बिक्री बहुत अधिक बढ गई और यह बिक्री विशेष कर बम्बई के द्वारा से हुई सो वहा के ब्योपारी शीघ्र धनवान होने लगे और धन के बढने से बडे २ सर्कारी गृह वहा बनने लगे। एक बात मे बम्बई कलकत्ते और मन्दराज से बढकर है अर्थात कि गृहो के बनवाने के लिये अच्छे २ पत्थर समीप प्राप्त होते है सो उन्हे ईंटो से बनाना नही पडता है। सिनेट हौस अच्छा बना हुआ घर है जैसा ९३ पृष्ठ के चित्र में दिखाई देता है। रेलवे का एक बहुत बडा ष्टेशन घर भी है और वह घर जो यूनीवर्सिटी के लिये बनाया गया है देखने योग्य है। उस बडे चित्र से प्रगट होता है कि बम्बई की सडको का कैसा रूप है।

बम्बई मे एक विख्यात घर पिंजरापोल कहलाता है जिस को जैन लोगों ने बनवाया है इस अर्थ से कि वहा ऐसे बूढे बैल बिल्ली कुत्ते मुर्गी आदि जीव जिन का कोई मालिक नही मरण दिन लो पाले जावें क्योंकि वे ऐसे जीवो का पालना दया धर्म्म और बडे पुण्य की बात समझते है। कितने जैन लोग इधर उधर फिरकर चिउटियो की बिलो पर मिसी डाला करते और कपोतो को खिलाया करते है क्योंकि इस को धर्म्मकार्य्य जानते है। जो वे मनुष्य जाति पर इतनी दया करते और लूले लंगडों को पालते तो क्याही भला होता। काठियावार देश में जब बहुत सी बेचारी लडकिया घात किई जाती थीं तो जैन लोग इस कुरीति को न रोकते थे पर जब कोई मांस खाने की लालसा से भेडी को वहा मारने चाहता था तब इस काम को बहुत रोकते थे। ऐसी उलटी समझ कितने लोगो की हो जाती है।

मलाबार पहाडी वह विशेष स्थान है जहा बम्बई के धनवान साहिब लोग रहने चाहते है। नीचे से ऊपर तक उन की बहुत सी कोठियां बनी हुई है। और चोटी पर लार्ड साहिब का भवन है और पहाडी के ऊपर से नगर और समुद्र भली भांति दिखाई देता है। वहा से यात्री गाडी मे सवार होके और पाच मील चलके समुद्र तट पर वह स्थान देखेगा जो अपाल्लो बन्दर नाम से प्रसिद्ध है जहां जहाजों का माल बहुत करके धरती पर उतारा जाता है।

बम्बई वह नगर है कि जिस से सब डाक के जहाज जाते है और वह जहाज भी आते जाते कि जिन के द्वारा गोरे लोग हिन्दुस्तान में आते और विलायत जाते है और सब विलायती के प्राईवेट भी इस काल मे आते जाते है। सो नगर की सडको में नाना प्रकार के बहुत परदेशी लोग फिरा करते हैं यहा लो कि दिन रात अद्भुत तमाशा देखने में आता है।

बम्बई नगर मे आजकल एक प्रकार के लोग बहुत विख्यात है जो जवान बम्बईवाले कहलाते है मानो कि और सब नगरवासी बूढे और निर्बुद्धि है और यही जवान अकेले समझनेहारे और नई विद्या के पानेहारे है। सत्य पूछो तो ये जवान अंगरेजी स्कूलो में पढे हुए है और वे बहुत बातों में ऐसा विचार नही करते जैसा उन के पुरखे करते थे तौभी वे अद्भुत रीति से पुरानी लीको पर चलनेहारे है सो उन के सोच और उन के काम और है। कहते कुछ और करते कुछ और है सो हलकेपन का दोष उन पर लगाया जाता है।

एक हिन्द की सैर नाम पुस्तक में भोलानाथ चोस साहिब ने इन जवान बम्बईवालो के विषय में यो कहा है कि हमारे लोग आरंभ से यह न जानते थे कि स्वाधीन होना क्या बात है न इस को जानना चाहते थे। जो राजा चाहे सोही बात ठीक है सो अब किस अर्थ से राज्यकार्य्य मे हाथ डालने चाहते है।

वार्डसवर्थ साहिब जो हिन्दू लोगों के विशेष मित्र है इन विद्यार्थियों पर यह दोष लगाते है कि हमारे हिन्दू भाइयो में एक अति बुरी रीति यह है कि वह कन्या जिस का वर बचपन मे मर जाय सो कभी विवाह करने नही पाती बरन जीवन भर क्लेश उठाती रहती है परन्तु जब लों बच्चों के विवाह करने की कुरीति मिट न जाय तब लो इस कुरीति

का मिटाना अनहोना है। कौन देश है जिस मे शिष्टाचार कुछ फैलने पर भी ऐसा अनुचित दस्तूर चले। जब मै पहिले हिन्द देश मे आया तब विचार करता था कि जितने हिन्दू ज्ञानवान है सो इस बुरे दस्तूर से लज्जित होगे और विशेष करके वह जवान हिन्दू जो अगरेजी विद्या पढे हुए है वे इस को कुरीति जानकर चाहेगे कि ऐसे जंगलीपन से अपने देश को शुद्ध करे परन्तु अब मै जान गया कि वे भी जो ज्ञानी कहलाते है इस मूर्खता को छोडने नही चाहते है वरन जो अपने को अगरेजो के समान राज्य करने योग्य समझते है वे भी ऐसे अन्याय के विचार से छूट नही गये है। जब उन से पूछा जाता कि क्या यह बुरी और उपद्रव की बात नही है कि वह बेचारी लडकी जिस का केवल नाम मात्र का विवाह हुआ और जिस ने पति को कभी न जाना सो जीवन भर दुखित रहे और क्या ईश्वर इस से क्रोधित न होगा परन्तु यह लोग नाना प्रकार का बहाना करके इस बुराई को छिपाना चाहते और लज्जित होने के विरुद्ध इस दस्तूर को अच्छा कहते और स्थापन करने चाहते है।

यही भी कुरीति इन पढे हुए हिन्दुओ में पाई जाती है कि जब उन मे से कोई ज्ञानी पण्डित कोई पुराने दस्तूर को जो अशुद्ध और हानिकारक है शुद्ध किया चाहे तो ये लोग उस पण्डित को बैरी जान उसे बदनाम कर देते और उस सुधराव को रोकने और प्राचीन लीक पर चलने चाहते है और यह बहाना करते है कि जो हमारी लडकिया बचपन में बिवाही न जाती तो उन्हे पतिव्रता रखना अनहोना है और यह नहीं सोचते कि ऐसे कहने से हम अपने देश के भाइयो को अति भ्रष्ट और कुकर्म्मी ठहराते है। और देशो में स्त्रिया बहुत सकोच और लज्जा शीलता से रहती है और कोई नहीं कहता है कि उन्हे बचपन में विवाह करना अवश्य है तो हिन्द की स्त्रियो के लिये ऐसा क्यो न अवश्य हो। केवल इतनी बात है कि ये लोग प्राचीन लीको पर मोहित है और सुधर जाने को नहीं चाहते है।

फिर ये जवान बम्बईवाले कहते हैं कि उत्तम हिन्दू हम ही है क्योंकि स्वदेश की भलाई हम ही ढूढते है। सुबोधपत्रिका नाम एक हिन्दी समाचारपत्र मे इस बात के विषय मे यह लिखा है कि इन लोगो को बहुत कच्ची स्वदेश प्रीति है। वे हर बात में अपने पुरखो की स्तुति गाते परन्तु जानते नही कि पुरखे कौन और कैसे थे। फिर वे अगरेजो की हर एक रीति को कितनी अच्छी क्यो न होवे बुरी कहते है। वे यह भी कहते है कि अगरेजो मे कोई ज्ञान और विद्या ऐसी नही है जिस को हमारे पुरखे न रखते थे वरन यह भी कहते है कि हमारे पुरखे ससार की बातो को ऐसी भली भाति जानते थे कि जब जी चाहे तब जल बरसा सकते थे। यदि ऐसी कोई विद्या रखते थे तो वह क्योंकर खो गई और यदि हिन्दू पण्डितो मे इतना महात्म है तो क्यो उस शक्ति को फिर प्राप्त नहीं करते है।

हिन्दू समाचारपत्र में यो लिखा है कि इस प्राचीन लीक की चिन्ता विशेषकर पूना नगर में पाई जाती है क्योंकि यह वह स्थान है जहा अगरेजी राज्य का बैर बहुत उत्पन्न होता है। वहा ब्राह्मणो का अधिकार अधिक है और उन का यह विचार है कि पुरखो के दिन अच्छे थे।

पारसी लोगों का वृत्तान्त ।

बम्बई मे पारसियो की गिन्ती बहुत नही है पर उन के बराबर कोई धन बटोरनेहारा सन्तान हिन्द देश मे पाया नही जाता है। अगले दिनों में जब मुसलमानों का राज्य फारस देश मे प्रबल हुआ और वे वहां के लोगो को दु:ख देने लगे तब बहुत निवासी वहां से भागकर बम्बई मे आ बसे और वहां वे बहुत सुभाग्य हुए और उन में से बहुत बडे महाजन बन गये है। वे हिन्दुओ के समान जाति की बात नही मानते है सो बिन रोक के हर कही चल फिर सकते और और देशो की सैर करके धन प्राप्त कर सकते है। वे अपने बालकों को अधिक पढाया भी करते है और इस से भी उन को बहुत लाभ पहुंचता है।

उन का धर्म्म यह है कि जरतुश्त गुरु के चेले है और उन का शास्त्र अवस्ता नाम से प्रसिद्ध है। कहते तो है कि हम एकही परमेश्वर को मानते है तौभी चार पदार्थो को अर्थात आग पवन मिट्टी जल का बड़ा आदर सन्मान करते है। हिन्दुओं की नाई वे गाय के मूत को बहुत पवित्र जानते है। वे इस को निरंग नाम से प्रतिदिन सवेरे घर में लाया करते और अपने हाथ पाव मुह पर अपने को शुद्ध करने के हेतु थोडा सा लगाते है बरन बडी पूजा मे थोडा सा पी भी लेते हैं। उन के मन्दिरो में एक आग सदा जलती रहती है। उन में और हिन्दुओ में एक भिन्नता यह है कि वे अपने मृतकों को भस्म नही करते बरन उन को वे एक प्रकार के गर्गज मे जिस को शून्य गर्गज कहते रख देते जिस्तें गिद्ध आदि पक्षी उन को खा जायें। जब २ तुम उस की ओर दृष्टि करो तो दो चार गिद्ध उ के ऊपर बैठे हुए लोथ की बाट जोह दिखाई देंगे। जब लोथ वहा धरी जाती है पक्षी झट उस पर झपटते और उसे टुकडा करने लगते है और जब पेट भर जाता तो फिर अपने स्थान को उड़ जाते है।

कितने पारसी महाजन इस बात में कि अपन धन से बहुत दुखियो को सुख दे विख्यात हुए है जैसा कि सर जमसतजी जीजी भाई साहिब हुए है फिर उन मे मलाबारी साहिब हैं जो देश की उन्नति की बडी चिन्ता करते और रीति व्योहारो को सुधारने मे बडा परिश्रम कर रहे है वे भी पारसियो में से है। पर शोक की बात है कि अब बहुत से जवान पारसियो के विषय यह सुन्ने मे आता कि वे अधिक सुख विलास करने लगे और मदिरा अधिक पिया करते और नाच तमाशे मे अधिक जाया करते है। चाहिये कि जो उस सन्तान मे महाशय समझे जाते है सो ऐसी कुरीतों को रोके।

हिन्द देश के पहाडो मे कटे हुए मन्दिर।

हिन्दुस्तान मे एक अद्भुत प्रकार के प्राचीन मन्दिर पाये जाते है जो पहाड़ों वा चटानो मे काट काटके बनाये गये थे। इतने बहुत और इतने बडे खोदे हुए मन्दिर किसी और देश में पाये नहीं जाते है और ये मन्दिर बहुधा बम्बई प्रेसीडेन्सी में है। कहते है कि वह समय कि जिस में लोग ऐसे मन्दिर खोदते थे सो मसीही सन २५० से लेके अर्थात बौद्धमत के फैलने से लेके ८०० वर्ष तक अर्थात सन ईसवी १०५० वर्ष तक था।

ऐसा एक मन्दिर एक टापू में है जो बंबई से केवल तीन कोस दूर है। पोर्टुगाली



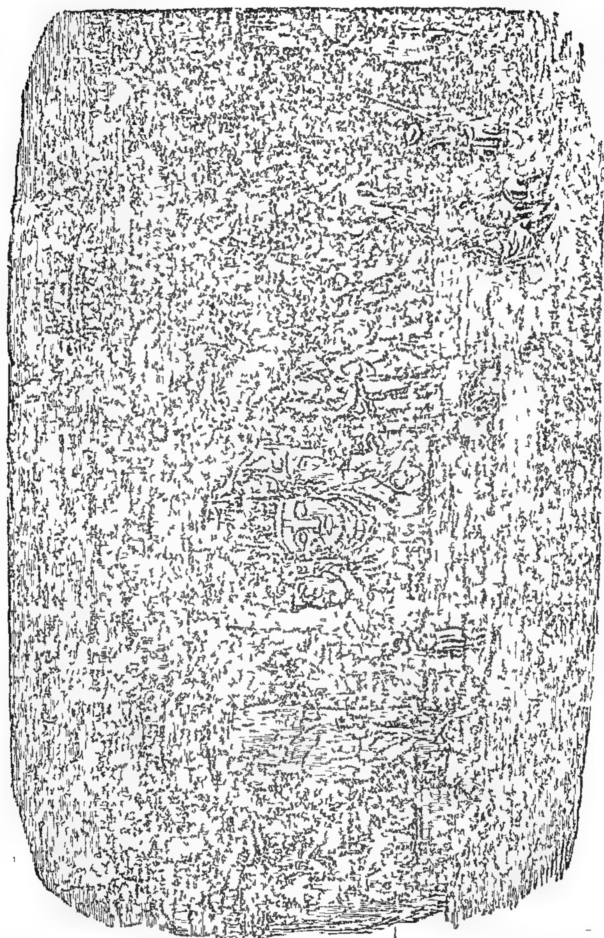
अलाफाण्टा मन्दिर।

लोग उस टापू को अलाफाण्टा नाम देते थे इस कारण से कि उस घाट के समीप जहां जहाजवाले उतरते है एक पत्थर का हाथी खडा था। उस टापू के पच्छिम तीर पर एक पहाडी है और उस पर २५० फुट की ऊंचाई पर एक कटी हुई बडी गुफा दिखाई देती है। यह एक मन्दिर है जो कडे चटान में कटा हुआ है उस का बडा फाटक उत्तर की ओर है और जैसा इस चित्र में दिखाई देता वह दो खंभे और दो अधखंभो से बना हुआ है जिन के बीच में तीन खुले स्थान है अर्थात बडी कोठरी बीच में और दोनो बगलो मे छोटी कोठरिया है जो पहाडी के भीतर चली गई है।

बडा मन्दिर देखने योग्य है वह १३० फुट लंबा और इतनाही चौडा है। उस में २६ खंभे और १६ अधखंभे छत को संभालते है परन्तु आजकल उन में से ८ खंभे टूटे पडे है। मन्दिर की ऊंचाई कहीं १५ फुट और कहीं १९ फुट है।

जब यात्री साम्हने के फाटक से प्रवेश करता है तो देखता कि आगे को एक त्रिमूर्त्ति नाम मूर्त्ति १९ फुट ऊंची खडी है। दोनो बगलो मे १२ फुट ऊंचे दो बडे पत्थर के द्वारपाल रक्खे हुए है। त्रिमूर्त्ति के समीप मन्दिर की पावन कोठरी अर्थात गर्भ है। उस की चारो ओर एक २ द्वार है और एक २ द्वार के पास पत्थर का द्वारपाल बना है। यह गर्भ सादा चौकोन और १९ फुट लंबा चौडा है। उस के बीच में वेदी बनी है जो १० फुट लंबी चौडी और ३ फुट ऊंची है और उस के ऊपर लिंगमूर्त्ति धरी है। त्रिमूर्त्ति के पूरब ओर एक कोठरी है जिस में शिव की बडी भारी १७ फुट की ऊंची मूर्त्ति है जिस को अर्धनारी अर्थात आधा स्त्री आधा पुरुष कहते है और उस की चारों ओर बहुत सी प्रतिमा बनी हुई है। त्रिमूर्त्ति के पच्छिम ओर तीसरी कोठरी है जिस में शिव पार्वती आदि की मूर्त्ति धरी है।

इस वर्णन से प्रगट होता है कि चाहे



त्रिमूर्ति—एलिफाण्टा मन्दिर में।

बौद्धमतवालों ने इस गुफे को खुदवाया तौभी शैव लोगों ने उस को बिलकुल अपनाया है। ज्ञानवान सोचते हैं कि यह मन्दिर आठवीं सदी में तैयार किया गया होगा। इस के

पुराने चटान के बड़े २ मन्दिर सालसट के टापू मे और कार्ली में जो बंबई और पूना के बीच में है और अजन्ता में जो निजाम के राज्य में है देखने में आते है और फिर अल्लोरा में जो अजन्ता के समीप है तीनो अर्थात बौद्ध जैन और हिन्दू मतों के मन्दिर चटानो में खुदे हुए है। उन में कैलाश नाम एक अद्भुत प्रकार का मन्दिर है जो पहाड़ में खोदा गया और अलग खड़ा है क्योंकि चारो ओर पहाड़ काटके अलग किया गया है। यह अति भारी मन्दिर है बांच में उस का नाप २४० फुट लंबा और १५0 फुट चौड़ा और कहीं २ उस की ऊंचाई १00 फुट है। कैलाश शिव का मन्दिर समझा जाता है पर विष्णु आदि देवताओ की भी मूर्त्ते उस में पाई जाती है। लोग कहते है कि आठवीं सदी में इलिचपुर के ईदू नाम किसी राजा ने यहां के एक सोते से जल पिया और किसी भारी रोग से चंगा हुआ सो अति मगन हो उस ने कैलाश को बनवाया।

बंबई देश का उत्तरवाला भाग जो कच्छ सागर के समीप है सो गुजरात देश कहलाता है। इस की दक्षिणवाली सीमा दमन है जो बंबई से ११0 मील दूर है और उत्तर की ओर वह राजपुताना तक फैला हुआ है। उस में १0,000 वर्ग मील जमीन है। काठियावार भी कभी इस ही का भाग समझा जाता है। तापती नर्वदा माही आदि नदिया इस देश मे बहकर बंबई के सागर मे जा गिरती है।

गुजरात में बहुत ऐसी अच्छी जमीन है कि लोग उसे हिन्द का बगीचा कहते है। जहां काला २ मिट्टी है तहां अच्छी रुई उत्पन्न होती है। वहां अच्छा बाजरा भी उगता है। उत्तरवाले गुजरात में बहुत अच्छे गाय बैल पाये जाते है। 10000000 आदमी गुजराती भाषा बोलते है। वह हिन्दी के समान है पर उस में पारसी शब्द अधिक मिले हुए हैं। वे उसे ऐसे अक्षरो से जो कुछ कैथी की रीति पर है लिखा करते है।

गुजरात के निवासी बड़े परिश्रमी है और उन के बनिया और महाजन बड़े चतुर है परन्तु धर्म्म की बातो में वे बहुत अज्ञान है। उन में वल्लभाचार्य्य का एक अति घिनौना मत प्रचलित है जिस मे चेले यह मानते कि हमारे गुरु लोग विष्णु के अवतार है जिन को तन मन धन से पूजना धर्म्म है। यह बुराई यहां लो फैल गई है कि कितने बंबई के महाजन अपनी स्त्रियो और कन्याओ को इन दुष्टों के पास भेजते है और इस कुकर्म्म को धर्म्म कार्य्य जानते है। हाय ऐसे कुबुद्धियो पर। हिन्द के और भागो की अपेक्षा जैन मतवाले अधिक गुजरात मे पाये जाते है। उस देश में कितने देशी राज्य पाये जाते है और बहुत जमीन सर्कार की अमलदारी मे भी है। उस मे कितने बड़े नगर है जिन का कुछ वर्णन यहां लिखा जाता है

सूरत का वर्णन।

सूरत एक नगर है जो बंबई से १६0 मील दूर पर तापती नदी के तट पर बना है। यह बहुत प्राचीन नहीं है। पहिले अंगरेज जो हिन्द में आके बसे सो सन ईसवी १६१२ में यहां बसाये गये। सन १६६४ में शिवाजी ने उस को लूटा और उस के पीछे मरहठा लोगों की चढाइयां कई बरस लों यहां होती रहीं। सन १६९५ में उस के बराबर हिन्द के किसी और नगर में बणिज व्योपार नहीं होता था। सन १७५९ मे यह सर्कार के

हाथ में आया। पूर्वकाल में यह विशेष स्थान था जहां से रुई विलायत को भेजी जाती थी। जब से बंबई की बढ़ती हुई तब से सूरत घट गया है तौभी इस प्रेसीडेन्सी में वह चौथी बस्ती गिना जाता है।

ब्रोच का वर्णन ।

ब्रोच नाम एक नगर है जो नर्वदा तीर पर सूरत से ३० मील उत्तर को है और नदी के मुहाने से २० मील दूर है। यह बहुत पुरानी बस्ती है और १८०० वर्ष बीते वह पच्छिम हिन्दुस्तान का एक विशेष नगर था। वह सिन्धिया महाराजा के हाथ में पड़ा पर सन ईसवी १८०३ में अंगरेजों ने उसे उस से ले लिया। कहते हैं कि ग्यारहवीं सदी में पारसी लोग ब्रोच में बसने लगे। पूर्वकाल में बहुत सा कपड़ा यहां से और देशों को भेजा जाता था।

बड़ोदा का वर्णन ।

बड़ोदा जो ब्रोच से ४४ मील उत्तर ओर है सो गायकवाड महाराजा का मुख्य नगर है। प्रगट नहीं कि महाराजा के घराने का कब से आरंभ हुआ केवल इतना जाना जाता है कि वह एक मरहठा घराना है और सन ई० १७२० से विख्यात होने लगा। सन १८५७ के बलवे के समय में खण्डेराव ने जो गायकवाड़ था सर्कार से मित्रता किई और इस सुकर्म्म से उस का राज्य बढाया गया परन्तु उस के मरने पर उस का भाई मल्हरराव जो भाई को बिष पिलाने के दोष से अपराधी ठहरके बन्दीगृह में एक बार डाला गया था सो गद्दी पर बैठाया गया। वह इस योग्य नहीं था परन्तु नाना प्रकार से प्रजा को दुःख देके सोने चांदी की तोपें बनवाने आदि अज्ञानता के कर्म्मों में अपने रुपयों को उड़ाने लगा यहां लों कि सर्कार ने उसे यह धमकी दिई कि ऐसी चाल चलने से यह अवश्य होगा कि दूसरा राजा बड़ोदा की गद्दी पर बैठाया जाय। मल्हरराव नहीं सुधरा पर कुछ दिन पीछे यह दोष उस पर लगाया गया कि उस ने रेजीडेण्ट साहिब को बिष पिलाने का यत्न किया सो वह दूर किया गया और एक अति उत्तम राजकुमार जो खण्डेराव की विधवा का लेपालक पुत्र था गद्दी पर बैठाया गया। यह जवान हिन्द के और राजाओं को बहुत बातों में अच्छा निदर्शन दे रहा है।

अहमदाबाद का वर्णन ।

अहमदाबाद एक नगर चर्मण्वती नदी के तट पर ६२ मील बड़ोदा से उत्तर पच्छिम ओर को बसा है। यह बंबई प्रेसीडेन्सी का तीसरा नगर और गुजरात देश में सब से बड़ा नगर है। उस का नाम इस लिये है कि सन ईसवी १४१४ में अहमद शाह ने उस की नेव डाली। गुजरात के और नगरों के संग वह सन १५७३ में अकबर बादशाह के वश में आया। ईसवी सोलहवीं और सत्रहवीं सदियों में वह पच्छिम हिन्द के सब से उत्तम नगरों में गिना जाता था। सन १७५७ में मरहठा लोगों ने उसे वश में कर लिया और सन १८१८ में अंगरेजों ने उसे ले लिया।

मुसलमानों के कितने अच्छे मकबरे और मसजिदें अहमदाबाद में हैं परन्तु यह बहुधा हिन्दू प्रकार की बनावट के हैं। उन में बहुत सी खिड़कियां देखने योग्य हैं जिन में पत्थर की महीन २ जालियां कटी हुई हैं। पूर्वकाल में तीन प्रकार के कपड़े बहुत ही अच्छे इस नगर में बनते थे अर्थात किमखाब और कौशाम्बर और रुई के कपड़े यहां लों कि वहां यह कहावत सुनने में आती थी कि अहमदाबाद

का सुभाग्य तीन सूतों पर लटका रहता है अर्थात कौशाम्बर सोना और रुई के सूतों पर। आजकल इतनी कारीगरी वहां नहीं है तौभी अगणित नगरवासी कपड़े बनाने से जीविका पाते हैं। बहुत कागज और मिट्टी के बर्त्तन भी वहां बनते हैं।

महाराष्ट्र देश का वृत्तान्त।

मरहठा लोग एक त्रिकोण देश में रहते हैं। नीचे की सीमा अरब का सागर है और उस की नोक बम्बई से ७०० मील दूर दक्षिण में है और पोर्टुगाली लोगों के दो देश अर्थात दमन और गोआ उत्तर और दक्षिणवाले कालों में हैं। उस में कोंकण नाम एक भाग है जो समुद्र तीर पर बहुत ऊंचा नीचा और असम है क्योंकि उस में बहुत सी सकरी गलियां घाट के पहाड़ों की ओर गई हैं। पूरब ओर ऐसा मैदान मिलता जो २००० फुट ऊंचा उठा हुआ है। कहीं २ इस मैदान में बड़े २ चटान निकले हुए हैं और प्राचीनकाल में बहुतों के ऊपर कोट बनाये गये थे।

मरहठी भाषा कुछ हिन्दी की नाईं है पर उस में संस्कृत शब्द अधिक मिलाये गये हैं। वे उस को नागरी अक्षरों से लिखते हैं पर दो चार अक्षरों का रूप बदलते हैं। वे कभी इन अक्षरों को बालबोध नाम कहते हैं। साधारण लोग एक प्रकार का लिखना जिस को मोदी कहते काम में लाते हैं।

मरहठा लोग छोटे होते परन्तु दौड़धूप के बड़े उठानेहारे हैं। बंगाली लोग बहुत नंगे सिर फिरा करते परन्तु मरहठा लोगों के बड़े २ सेले प्रसिद्ध हैं। हिन्द के और भागों की अपेक्षा मुसलमानों का राज्य यहां कम प्रबल था और इस लिये यहां की स्त्रियां और हिन्दू स्त्रियों से परदे में कम रहती हैं।

कहते हैं कि पहिली ईसवी सदी में महाराष्ट्र देश का महाराजा शालिवाहन था जो कुम्हार का बेटा था और जिस का मुख्य नगर पैठन था जो गोदावरी नदी पर बना था। जो लोग नर्बदा नदी के दक्षिण ओर रहते हैं सो आज तक उस के राज्य के आरंभ से अर्थात सन ईसवी ७७ से सन गिनते हैं। इस घराने के पीछे और वंश के लोग यहां की गद्दी पर बैठा करते थे। जब कि मुसलमानों की पहिली चढ़ाई दक्षिण में हुई अर्थात सन ईसवी १२९४ में तब उन्हों ने यह पाया कि देवगिरि अर्थात दौलताबाद के राजा लोग महाराष्ट्र के अधिकारी थे। दक्षिण में पहिला महम्मदी राज्य जो स्वाधीन स्थापन किया गया सो वही था जो बहमनी राज्य कहलाता था जिस का मुख्य नगर गुलबर्गा था। जब यह राज्य टुकड़ा २ किया गया तब पांच राज्य इन टुकड़ों से स्थापन हुए अर्थात बीजापुर और अहमदनगर और इलिचपुर और गालकान्दा और बीदरपुर। सोलहवीं सदी के बीच में मुसलमान लोग निर्बल होने लगे और शिवाजी की बीरता से मरहठा राज्य फिर उस देश में स्थिर किया गया।

शिवाजी एक कोट में उत्पन्न हुआ कोटों के द्वारा से उस का जोर बढ़ा और एक कोट में वह मर गया इस लिये औरंगजेब बादशाह उसे ठट्ठों में उड़ाके कोट का चूहा कहता था। परन्तु वहां के लोग विशेषकर शिवाजी का गुण गाते हैं उस बिश्वासघात के कर्म से जिस से उस ने अपने वैरी को कपट से मारा। जब उस ने देखा कि अफजलखां पर मेरा वश नहीं चलता तब उस ने छल से उस से भेंट करने चाही। तब उस भेंट

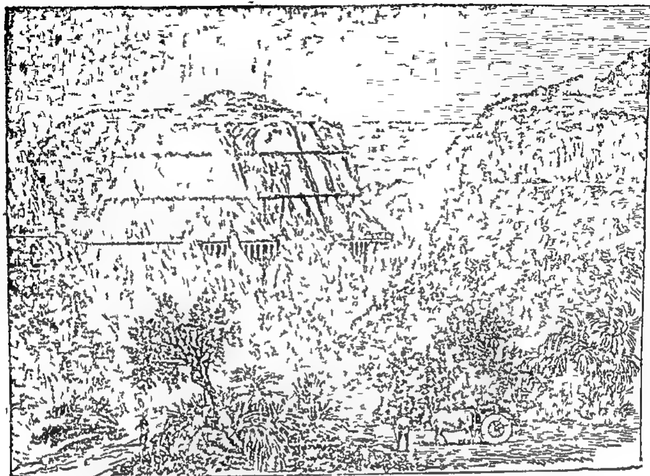
के लिये शिवाजी ने बड़ी तैयारी किई। उस ने पूजा पाठ किई और अपनी माता से आशीष मांगी। तब लोहे के झिलम के ऊपर उस ने स्वेत कपड़ा पहिना दहिनी आस्तीन में एक खंजर छिपा लिया और बायें हाथ मे बाघ के नख की नाई ऐसी वस्तु थी जिस मे तीन छूरियां लगी हुई थीं। अफजल खां के सन्मुख आके उस ने डरने का बहुत बहाना किया सो उस के सन्देह को दूर करने के लिये अफजलखां ने अपने सेवको को दूर किया तब कपट का प्रणाम करके शिवाजी ने अफजलखां के पेट में ऐसा मारा कि वह फट गया यहां लों कि वह मर गया। इस कपट के कारण से मरहठा लोग आजकल शिवाजी की बड़ी प्रशंसा करते है मानो उस ने बड़ा धर्म्म कार्य्य किया।

बहुत योद्धा सदा शिवाजी के झण्डे का भोक्षा करते थे क्योंकि उस का वचन यह था कि गौ ब्राह्मण के लिये लड़ता हूं और उस के सिपाहियों को बराबर यही आसरा होता था कि बहुत सी लूट हमे मिलेगी। मकाली साहिब ने उन चढाइयों को जिन्हें वे दूर २ देशो पर करते थे यो बर्णन किया है।

उन पहाडो से जो पच्छिम के घाट कह-लाते है ऐसा क्रूर सन्तान निकला कि जिस के साम्हने हिन्द के सब महाराजा कांपते थे और जिन को केवल अंगरेज दबा सकते थे। औरंगजेब बादशाह के दिनों मे ये लोग अपने पहाड़िस्तान से उतरके पहिले डकैती करने लगे और उस के मरने पर समस्त हिन्द मरहठो सेना का नाम सुनके थरथराता था। बहुत राज्य उन से उलट दिये गये बहुत से नगर लूटे गये। उन का अधिकार दक्षिण में समुद्र से समुद्र लों फैल गया। उन की सेना के सर्दार पूना ग्वालियर गुजरात बिरा और तंजोर में राज्य करते थे। फिर राजा बनकर भी अपने लूट मार करने के दस्तूरे को छोड नहीं देते थे। पुरखों की रीति पर चलना उन का धर्म्म था। पुरखे डाकू हुए पुत्र को ऐसा होना पड़ा। जितने देश उन की सीमो के समीप थे सो बहुत सताये गये जब उन के डंको का बजना सुन्ने मे आता तब किसान लोग अपने पैसों को कमर में बांध धान की गठरी कांधे पर डाल पत्नी बालक संग ले जंगल पहाड मे भाग छिप जाते थे। बहुत राजाओ ने बन्दोबस्त किया कि यदि तुम खेत की कटनी को लूट न लोगे तो हम हर साल महसूल दिया करेंगे। वह बेचारा जो हिन्द का बादशाह कहलाता था अपना अपमान न जानकर डाकुओं को ऐसा महसूल दिया करता था। एक मरहठे सर्दार ने दिल्ली के ऐसे समीप अपनी छावनी लगाई कि नगरवासी छावनी की आग देख सकते थे। दूसरा हर साल अनेक घुड़चढ़ों के सहित बंगाल के गावों को लूटा करता था। अंगरेजों का आना इस दुर्दशा से हिन्द को बचाने का कारण हुआ।

सन ईसवी १८१७ में बाजीराव ने जो मर-हठों में महाराजा समझा जाता था पूना पर चढ़ाई किई पर वहां हराया गया। पीछे वह अंगरेजों के बश में आया और उन्हों ने उसे रहने के लिये बिठूर नाम एक गांव कानपुर के समीप दे दिया और सालियाना पिन्शन आठ लाख रुपिया कर दिया। उस का लेपालक पुत्र वही नाना साहिब था जिस ने कानपुर के साहिब लोगों को घात किया जैसा ऊपर बर्णन हो चुका है।

बम्बई की रेलवे।



रेलवे का ओर घाट पर चढना।

बंबई की विशेष रेलवे ग्रेट इण्डियन पेनिनसुलार नाम से प्रसिद्ध है। नगर से ३४ मील दूर वह दो भागों में बांटी जाती है जिन में से उत्तरवाली कलकत्ते को ओर दक्षिणवाली मन्दराज को जाती है। दोनों ऐसे स्थानों में जहां घाटी के पहाड २००० फुट ऊंचे हैं उन पर चढ जाती है। वहां सडक को देखकर यात्री भय खाता है क्योंकि ऊपर पहाड की चटाने झूम रही है और नीचे ऐसे निचान हैं जिन में गिरने का डर होता है।

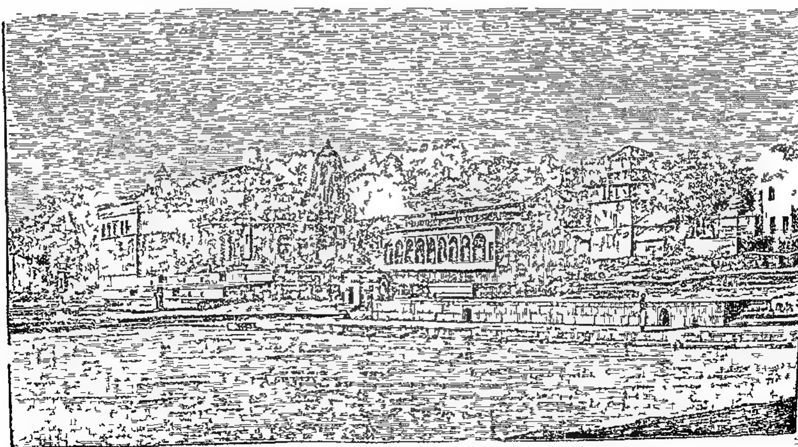
पूना जो ११९ मील बम्बई से दक्षिण पूरब ओर है सो दक्षिण की बडी छावनी है और लार्ड साहिब भी कभी २ वहां रहा करते है। वह मुता नदी के तट पर बसा और समुद्र से १८५० फुट ऊंचा है। इस ऊंचाई के कारण से वहां का पवन अच्छा है। विशेष वस्तु जो वहां बनती सो कपडा और मिट्टी के बर्त्तन और पीतल तांबे लोहे की चीजें हैं।

इतिहास में पूना की पहिली चर्चा यह मिलती है कि सन ईसवी १६०४ में अहमद नगर के सुलतान ने यह बस्ती मलोजी राजा को जो शिवाजी का दादा था दान कर दिई। सन १८१८ मे जब पेशवा साहिब दूर किया गया तब पूना अंगरेजों की एक बडी छावनी बनाया गया। अब वह प्रेसीडेन्सी मे दूसरी बस्ती है क्योंकि उस मे १६०००० निवासी है।

अहमदनगर सीना नदी के मैदान में १३० मील बम्बई से पूर्व ओर को है। सन ई० १४९४ मे बहमनी बादशाहों के एक सर्दार अहमद निजाम शाह नाम ने इस नगर को

नेव डाली परन्तु कहते है कि प्राचीनकाल से बिजनौर नाम एक हिन्दुओं की बस्ती इस जगह पर थी। आजकल नगर मिट्टी की भीत से घिरा हुआ है और कहते है कि सन १५६२ में यह भीत उठाई गई। वहां का जो राज्य था सो सन १६३६ मे शाहजहा बादशाह से उलट दिया गया परन्तु उस सर्दार ने जो वहा मुगल बादशाहों की ओर से अधिकार रखता था उस ने बेईमानी करके सन १०५९ मे नगर को पेशवा साहिब के हाथ में सोंप दिया। सन १८०३ मे वेलस्ली साहिब ने अगरेजी सेना लेकर नगर पर चढाई किई और दो दिन की लडाई के पीछे नगर उस के वश मे आया। थोडे दिन पीछे अगरेजो ने उसे पेशवा को दे दिया पर सन १८१८ मे वह फिर अगरेजो के हाथ मे आया। वहा निवासी ४0,000 है।

नासिक नाम नगर जो हिन्दुओ का तीर्थ स्थान है सो गोदावरी नदी की दोनो ओर उस स्थान पर जो समुद्र से ३0 मील दूर है बना है। यात्रियो को वहां खींच लाने के लिये ब्राह्मणो ने बहुत अद्भुत कहानियां इस स्थान के विषय बनाई है। कहते है कि राम ने उस की पवित्रता का वर्णन गौतम ऋषि से किया। अज्ञानी लोग यह मानते है कि गोदावरी और गगा एकही सोते से निकलती है परन्तु गोदावरी सैकड़ो कोस जमीन के नीचे छिपी हुई बहती और तब निकलती है सो उस के जल मे नहाना सब से बडे पापो को धोता है। जैसे गगा तीर बारहवे २ साल मे कुम्भ मेला होता है वैसाही गोदावरी तीर बारहवे २ वर्ष मे एक पुष्कर नाम बड़ा मेला होता है और उस समय के नहाने पर लोग बडा भरोसा रखते है।



नासिक नगर और गोदावरी नदी।

ब्राह्मण लोग कहते हैं कि गोदावरी से बढ़कर नर्मदा अर्थात सुखदाता नाम एक और नदी है जो पश्चिम ओर कम्बाई सागर में जा बही है। वे कहते हैं कि यह रुद्र देवता के पसीने से हुई है। यहां के ब्राह्मण लोग गंगा की अपेक्षा इस नदी का अधिक गुण गाते हैं कि गंगा के एक दिन स्नान करने से सकल पाप छूट जाता है पर नर्मदा के केवल देखने ही से सकल पाप मिट जाता है। फिर एक बात यह भी है कि मृतक की लोथ केवल गंगा की उत्तर ओर भस्म हो सकती है परन्तु नर्मदा के दोनों तीरों पर भस्म हो सकती है सो नर्मदा श्रेष्ठ ठहरती है।

हिन्दुस्तान के बीच के देश।

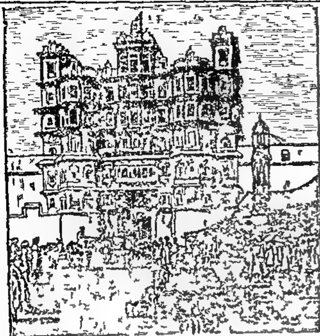
हिन्द के बीच में एक देश सेन्ट्रल इण्डिया नाम से प्रसिद्ध है। उस में ८९,००० वर्ग मील जमीन है अर्थात उत्तर पश्चिम प्राविन्सेस से कुछ बड़ा है और एजण्ट साहिब जो इन्दौर में रहता है उस पर अधिकार रखता है। उस में ७१ राजा हैं जिन की रक्षा सर्कार करती है और निवासी एक करोड़ है। उन में जो सब से बड़े राज्य हैं सो ये हैं अर्थात पूरब में रीवां और बुंदेलखण्ड उत्तर में सिन्धिया अर्थात ग्वालियर दक्षिण में इन्दौर और भूपाल। इन में दो तीन का कुछ वर्णन यहां लिखा जाता है। सिन्धिया का राज्य इन सब में बलवान है। उस की जमीन चम्बल और नर्मदा नदियों के बीच में है और उस में पचीस लाख निवासी हैं। उत्तर के भाग में ऐसे स्थान हैं जो पत्थरीले और बालूमय हैं और जहां गर्मी अधिक होती है पर दक्षिण भाग अधिक ठंढा और फलदायक है।

महाराज राणोजी पहिले पेशवा का जूती-बर्दार था उस से सिन्धिया का राज्य स्थिर किया गया। वह सन ई० १७५० में मर गया। बढ़ते २ यह राज्य हिन्द के बीच में बहुत फैल गया परन्तु जब सर्कारी सेना ने बार २ मरहठी सेनाओं पर विजय किया तब वह फिर घटाया गया। ग्वालियर और लश्कर नाम पुराने और नये नगर हैं और उन के समीप एक पहाड़ी पर एक बहुत दृढ़ गढ़ बना है।

पिछला महाराजा पुरानी लीकों पर पक्का चलनेहारा था। वह राज्यकार्य्य से निश्चिन्त रहता और अपने सेवकों को तंग करके धन बटोरा करता था। वह अपनी सेना से बहुत प्रसन्न रहता और उसे पाला करता था तौभी जब वह मर गया तब उस के भवन में साढ़े पांच कोटि रुपये पाये गये। उस का मरना इस प्रकार से हुआ कि जब वह रोगी था तब किसी ज्योतिषी ने उसे बताया कि यदि आप अमुक नदी में नहाओगे तो अच्छे होगे परन्तु इस के विरुद्ध जब महाराजा ने वहां स्नान किया तो उस का रोग बढ़ा और वह शीघ्र मर गया।

इन्दौर के राज्य का वर्णन।

इस राज्य के अलग २ भाग नर्मदा नदी की दोनों ओर पाये जाते हैं। राज्य में ८४०० वर्ग मील जमीन और दस लाख निवासी हैं। उस में अफीम बहुत उत्पन्न होती है। होलकर नाम घराना एक किसान के वंश से था जो



इन्दौर का भवन ।

सन १७९३ में जन्मा और लडते २ एक बडा और प्रसिद्ध मरहठा सर्दार बन गया । उस घराने में से एक प्रधान ने बहुत से डाकुओं को एकट्ठा करके यमुना तीर के गांवों को लूटा और सताया जब लों कि लार्ड लेक साहिब ने उसे हराके भगा न दिया । पिछला महाराजा होलकर बडा लोभी था । उस ने प्रजा पर बडा महसूल लगाया और वणिज व्योपार के करने से रुपये कमाने चाहे । महाराजा की सेवा में दो एक प्रसिद्ध मन्त्री हो चुके हैं जिन्हों ने राज्यकार्य्य को सुधारने का बडा यत्न किया परन्तु उन का अर्थ भली भांति सिद्ध न हुआ ।

सेन्ट्रल प्राविन्सेस का वर्णन ।

सेन्ट्रल प्राविन्सेस उस देश का नाम है जो निजाम के राज्य और छोटे नागपुर के बीच में है । वह कितने देशी राज्यों से घिरा हुआ है । उस में ८४,००० वर्ग मील जमीन और एक करोड निवासी हैं जिन में से बीस लाख गोंड आदि जंगली सन्तान हैं । ये जंगली लोग वहां के आदि निवासी हैं । उन में गोंड जो पहाडी लोग हैं औरों पर प्रबल हुए और उन से देश का नाम गोंडवाना हुआ । उन की भाषा जो कभी लिखी न गई थी तामिल तेलगू आदि भाषाओं से कुछ मिलती थी । यह देश फलदायक है और बहुत सी रुई और गेहूं और धान वहां उत्पन्न होते हैं वहां का मुख्य नगर नागपुर है ।

निजाम के राज्य का वर्णन ।

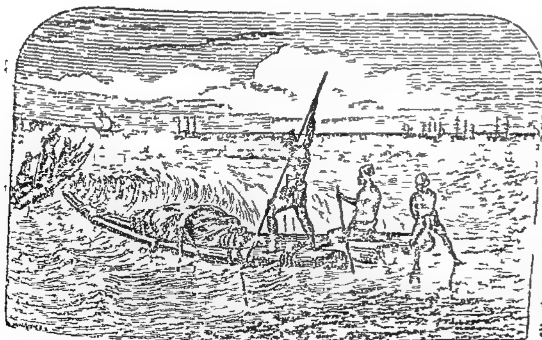
सब से बडा देशी राज्य जिस का सर्कार सहायक है सो हैदराबाद वा निजाम का कहलाता है । वह इतना बडा है जितना सेन्ट्रल प्राविन्सेस है और उस में एक करोड पंद्रह लाख निवासी हैं । उस की सीमा यह है उत्तर पूरब और सेन्ट्रल प्राविन्सेस दक्षिण में मंदराज प्रेसिडेन्सी और पश्चिम में बंबई प्रेसिडेन्सी । निवासी दो प्रकार के हैं अर्थात पूरब में तेलगू लोग और पश्चिम में मरहठा लोग । राज्य की उत्पत्ति यह है कि वही सूबेदार जो मोगल बादशाहों से दक्षिण में अधिकारी स्थापन किया गया और निजाम अर्थात राज्यकार्य्य निपटानेहारा नाम दिया गया था उस ने औरंगजेब के मरने पर अपने को स्वाधीन किया । इस देश में प्रजा की बहुधा बुरी दशा हुई परन्तु सर सालारजङ्ग जो बडा ज्ञानी मन्त्री था उस ने कुछ दिन लों अच्छा इन्तिजाम किया । जिस का लाभ अब लों कुछ प्रगट है हैदराबाद नाम मुख्य नगर कृष्णा नदी की एक शाखा के तट पर एक बडी बस्ती बनी है ।

मन्दराज प्रेसिडेन्सी का वर्णन ।

मन्दराज के दो भाग है अर्थात हिन्द के प्राय'द्वीप का जो दक्षिण है और बगाल सागर का तट जो एक लबी जमीन है। उस की तीन ओर समुद्र सीमा है। वह बम्बई प्रेसिडेन्सी से कुछ बडा है क्योंकि उस में १,३४,000 वर्ग मील जमीन है। उस के दक्षिण पश्चिम मे कोचीन और त्रावनकोर नाम दो बडे देशी राज्य है। दक्षिण का ऊचा मैदान कुछ मन्दराज में गिना जाता है पर बहुधा उस की जमीन घाट के पहाडो और समुद्र के बीच मे है। पूर्वी तीर में मैदान अधिक है पर और भागो में पहाडो की तीन पांति अर्थात पूर्वी घाट पश्चिमी घाट और नीलगिरि पाई जाती है। उस मे तीन बडी नदिया है अर्थात गोदावरी और कृष्णा और कावेरी जो बगाल के सागर मे जा गिरती है। मन्दराज मे और विशेषकर पूर्वी तीर पर गर्मी अधिक होती है परन्तु न इतनी गर्मी न इतनी ठण्ड पाई जाती जितनी इलाहाबाद में होती है। देश के उस भाग में जो घाट के ऊपर है पानी कम बरसता है परन्तु पश्चिमी भाग में बहुत पानी गिरता है।

मन्दराज प्रेसिडेन्सी में निवासी ३,६0,00,000 है जो बहुधा हिन्दू है। सोलह आदमी मे एक मुसलमान है और हिन्द के और भागो की अपेक्षा ईसाई लोग वहा अधिक है। देश मे वही भाषा बोली जाती है जो द्राविडी वा दक्षिणी कहलाती अर्थात दक्षिण पूरब में तामिल उत्तर पूरब मे तेलगू उत्तर पश्चिम में कनारा और दक्षिण पश्चिम मे मलायलीम बोली जाती है।

मन्दराज नगर का वर्णन ।



मन्दराज के कोल का काठामहाम।

मन्दराज जो मुख्य नगर और दक्षिण हिन्दुस्तान की सब से बडी बस्ती है सो बगाल सागर के तट पर बना है। प्रगट नहीं कि मन्दराज नाम कहा से आया है। उस का देशी नाम चेन्नापट्टन है क्योंकि वही चेन्नापा जिस ने उस की नेव डाली सो वहा के राजा का भाई था। सन ई0 १६३९ में चन्द्रगिरि के राजा ने देय साहिब को वही जमीन दान कर दिई जहा अब नगर बना है। जब वहा गढ बनवाया गया तब निवासी

वहां अधिक बसने लगे। उन के रहने का स्थान काली बस्ती कहलाता था और सन १६६० में उस की रक्षा के लिये मिट्टी की भीत उठाई गई। गढ कुछ दृढ था क्योंकि १७४१ मे मरहठा लोगो ने उसे घेर लिया पर उसे ले न सके। दो साल पीछे गढ बढाया और और भी दृढ किया गया तौभी १७४६ मे फ्रांसीसियों की सेना ने उसे ले लिया। दो साल के पीछे वह फेर अंगरेजो के हाथ में आ गया। सन १७५८ मे फ्रांसीसी सेना ने उसे फिर घेर लिया पर अंगरेजी युद्ध के जहाजो के आने से उन्हे भागना पड़ा। सन १७८० मे गढ ऐसा बन गया जैसा आज तक है और जार्ज नाम उसे दिया गया क्योंकि उस समय अंगरेजो के बादशाह का यही नाम था।

जब यात्री जहाज पर सवार हो नगर की ओर दृष्टि करता है तो बस्ती की जमीन ऐसी नीची है कि केवल बड़ी सर्कारी गृह महाजनो के दफतर आदि जो समुद्र तट पर है दिखाई देते है। और सब उन के पीछे छिपा है। काली बस्ती वह स्थान है जहा अधिक बणिज व्योपार किया जाता है। वह तीन मील लंबी कूम नदी की उत्तर को फैली हुई है और उस मे अगणित घर छोटे और निकम्मे बने है। काली बस्ती के साम्हने वह कोल है जहां जहाजवाले उतरते है। पूर्वकाल में यहा कोल नही था और जहाजों को तट से दूर लंगर डालना पडता था और यात्री ऐसी नौकाओ मे उतरते थे जिन की तख़्तियां डोरियो से बधी रहती थी ऐसा न हो कि टक्कर खाके टूट जाये। वहा के मछुवे लोग एक अद्भुत प्रकार की नौका रखते थे जिस को काठामडान कहते है। इस मे जैसा इस चित्र में दिखाई देता है दो तीन भारी लकड़िया एक सं रस्सियो से बधी रहती है और इन पर दो तीन आदमी बैठ सकते है।

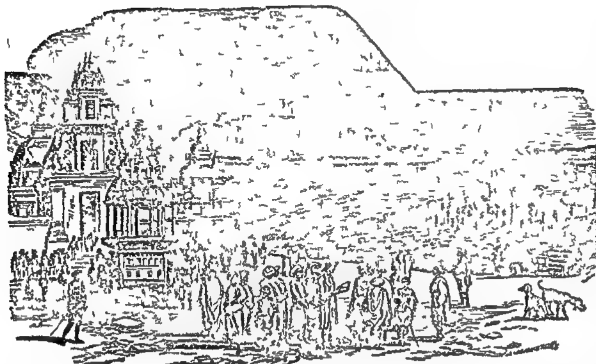
काली बस्ती की दक्षिण ओर समुद्र तीर पर एक खुला मैदान दो मील लबा है जिस मे गढ़ और लार्ड साहिब की कोठी और कितनी बडी हवेलिया है। इस के दक्षिण ओर चिपलोकेन है जहा नवाब साहिब का भवन है। उस के समीप पोर्टुगाली लोगों ने सन १५०४ मे थोमा नाम एक गढ को बनवाया। यह १७४९ में अंगरेजो के वश मे आया।

इन सब स्थानो को जोडकर मन्द्राज बड़ी जमीन मे अर्थात २० वर्ग मील जमीन में फैला हुआ है पर इस बीच मे २३ अलग गाव और कितने खेत और बारियां है। वह सड़क जिस मे अधिक आना जाना है मिण्ट रोड सड़क कहलाती है कितनी जगहो मे अच्छे अंगरेजी घर बडे २ हातो मे बने हुए है। कूम नदी नगर के बीच में बहती है पर बरसात को छोड वह बहुत सूख जाती है। मन्द्राज मे बहुधा गर्मी रहती है पर समुद्र से अच्छी हवा बहती है। कोल अच्छा नही है और बहुत आंधियां वहा आती है जो जहाजों को बहुत हानि करती है। सन १७४६ में जब फ्रांसीसी युद्ध के जहाज वहा लंगर डाले हुए थे तब ऐसी आंधी चली कि उन मे से पांच बडे जहाज डूब गये और १२०० नाविक लोग नाश हुए। फिर सन १८७२ में ऐसी आंधी बही कि बर्षां नौ अंगरेजी जहाज धरती पर फेंके गये।

मन्द्राज में ४,५०,००० निवासी हैं अर्थात हिन्द के बडे नगरो में यह तीसरा है। वहा कोई विशेष कारीगरी वा व्योपार प्रसिद्ध नहीं है। और लोग मन्द्राजबासियो को राजिमस्त

अर्थात ज्ञानहीन कहते है और लोग कहते हैं कि यदि वहा के लोग अज्ञानी न होते तो वे लोग जो थोआसफी नाम कपटी मत को चलाने चाहते थे सो मन्दराज में अपने काम को क्यो कर सकते। इस के विरुद्ध यह कहना चाहिये कि मन्दराज का क्रिष्टियन कालिज जिस के प्रिन्सिपल डाकृर मिलर साहिब है हिन्द के सब से प्रसिद्ध कालिजो में है और कि मन्दराज मे ऐसे बडे बडे विद्यावान जैसा दीवान बहादुर रघुनाथ राय साहिब पाये जाते है जो देश का लाभ और उन्नति बहुत ढूढा करते है।

तेलगू लोगो का वर्णन।



बेजवादा कृष्णा नदी पर।

तेलगू उस भाषा का नाम है जो मन्दराज के उत्तर और कोचिकाकोल जो जहा लोग उडिया बोलते और हिन्द देश के भीतर की ओर लो बोली जाती है। वह तामिल की अपेक्षा मृदुवाणी कहलाती है और उस मे बहुत सी पोथियां लिखी गई है। १,००,००,००० आदमी इस भाषा को बोला करते है। पूर्वकाल मे उस का नाम तैलग कहा जाता था और सस्कृत के बोलनेहारे उसे अन्ध्रभाषा कहते थे। कहते है कि विक्रमादित्य उज्जैन का राजा जिस का सवत् सन ई० के ५६ वरस पहिले से है अन्ध्र लोगों में से था। इस देश का प्राचीन वृत्तान्त कम प्रगट है। उस समय में वारंगल उस का मुख्य नगर था। सन ई० १३०९ में मुसलमानो ने उसे जीत लिया पर पीछे वह फिर स्वाधीन हो गया। सन १५१२ और १५४३ के बीच मे यहा की जमीन गालकान्दा के राज्य में जोडी गई। सन १७६५ में वह भाग जो समुद्र तीर थे सो अंगरेजो के हाथ में आये जब कि उन्हो ने निजाम को जीत लिया।

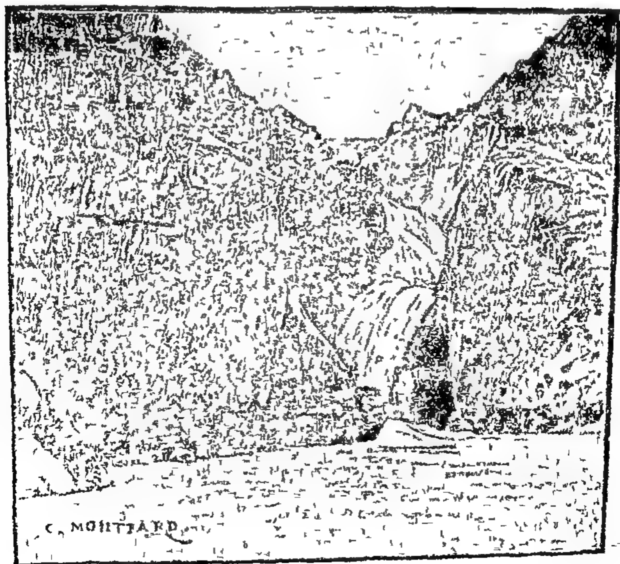
पूर्वकाल में दो बडी नदियो अर्थात गोदावरी और कृष्णा के द्वारा से बहुत सा जल निर्लाभ बंगाल सागर में डाला जाता था परन्तु अब बडे २ बाध बांधे गये है जिन से पानी रोका जाता और नहरो में पहुंचाया जाता है। इस उपाय से १७,००,००० बीघा जमीन इन नदियो से सींची जाती है और हर साल अन्न की बढती इस सींचने से एक

कोटि रुपयों से कम की न होगी । इस चित्र में हम देखते हैं कि बेजवादा नगर के पास कृष्णा नदी का जल एक बांध के ऊपर वह रहा है।

इस देश में सागर तीर पर कितनी अच्छी बस्ती पाई जाती है । जैसा मन्दराज से २०० मील उत्तर पूरब ओर को मसूलपत्तम नाम नगर है जो कृष्णा नदी के एक मुहाने के समीप बना है । उस के कोल में बहुत सी देशी नौकाएं आती जाती है । यह वह स्थान है जहां अंगरेज पूरब तीर पर पहिले अर्थात सन १६२० में बसने लगे और मन्दराज में वे सन १६३९ में रहने लगे । गोदावरी नदी के उत्तर वाले मुहाने के समीप कोनादा नाम एक कोल पाया जाता है ।

गोदावरी की उत्तर ओर विजिगापट्टम नाम एक जमीन है जहां कितने बड़े २ जमींदार पाये जाते है । उस में विजियान ग्राम का महाराजा सब से धनी है । विजिगापट्टम नगर सागर तीर बना है और वहां नाना प्रकार के गहने और सुन्दर वस्तु बनती है ।

तामिल लोगों का वर्णन ।



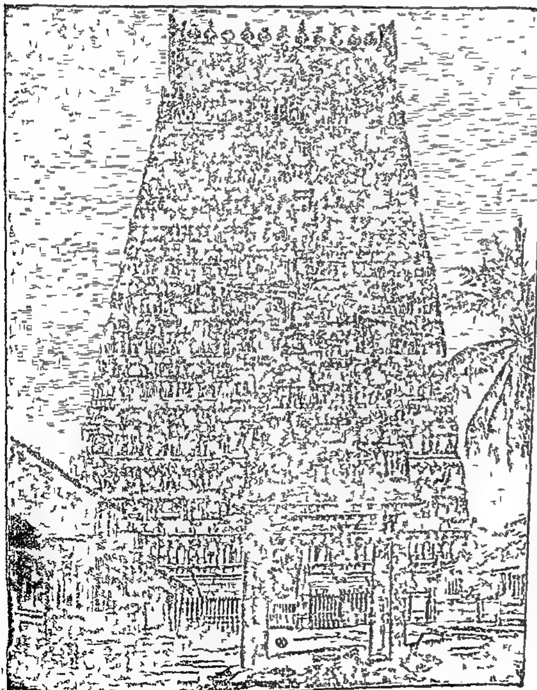
पानी का झरना कावरी नदी पर ।

यह बड़ा मैदान जो कर्नाटक नाम से प्रसिद्ध है तामिल लोगों का विशेष निवास

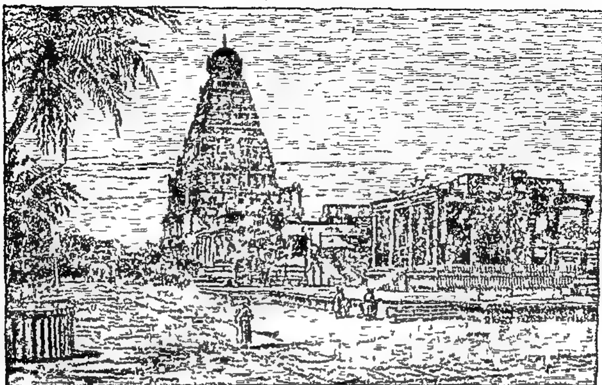
है । पुलीकाट जो मन्द्राज से २० मील उत्तर है वहा से लेके चिवानद्रम जो सागर तीर है यह मैदान फैला हुआ है । उस की पच्छिमी सीमा घाट के पहाड है । लंका के उत्तरवाले भाग में भी लोग तामिल भाषा बोलते है । वह १,३०,००,००० आदमियो की भाषा है ।

इन लोगों में दो प्राचीन राज्य विख्यात थे अर्थात चोला का राज्य उत्तर में जिस का मुख्य नगर काञ्जीवराम था और दक्षिण में पाड्य का राज्य जिस का मुख्य नगर मादुरा था । काञ्जीवराम जिस को हिन्दू लोग काञ्चीपुर कहते है ४६ मील मन्द्राज से दक्षिण पच्छिम ओर है । वह हिन्द देश के सात तीर्थों मे एक गिना जाता है वरन लोग उसे दक्षिण की काशी कहते है । सातवी सदी मे बौद्ध-मत यहा बहुत प्रबल हुआ । एक सौ बरस पीछे जैन मत यहा बहुत फैल गया और आज लो जैनी कही २ पाये जाते है । तब से ब्राह्मण लोगों ने अपना धर्म्म यहा फिर स्थिर किया है । दो भारी मन्दिर जो अब है सो सन १५०९ में कृष्ण राजा से बनवाये गये । जब विजयनगर का राज्य सन १६४४ में उलट दिया गया तब गोलकान्दा के राजा यहा अधिकारी थे उस समय मुसलमानो ने उसे वश में कर लिया और अर्काट का नवाब यहा राज्य करने लगा ।

तनजोर जो मदराश



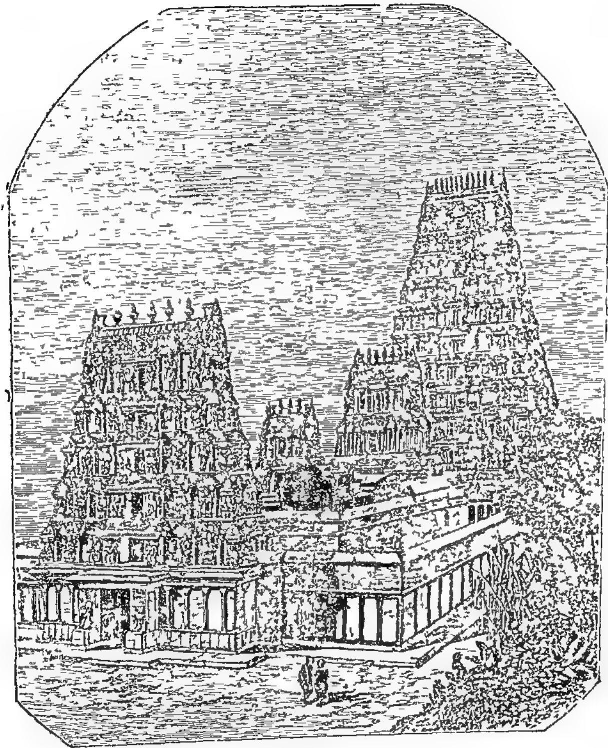
दक्खिन का एक मन्दिर ।



शिव का मन्दिर—तनजोर मे।

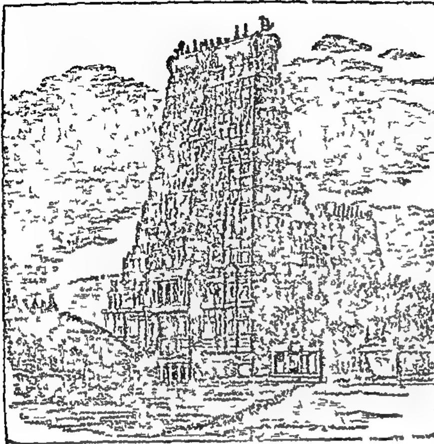
से २१० मील दक्षिण पश्चिम ओर है और कावेरी नदी के मुहानो के बीच में बना है जो हिन्द के दक्षिण की सब से फलदायक जमीन है। यह चोलराज्य का पिछला मुख्य नगर था और पीछे एक नायक जो विजयनगर से भेजा गया यहां अध्यक्ष हुआ। सन १६७८ में वेनकाजी ने जो शिवाजी का भाई था उसे ले लिया और तनजोर के राजा लोग उस के वंश से थे। सन १७७९ में राजा साहिब ने नगर और आसपास की थोड़ी सी जमीन को रखके और सब जमीन सर्कार के हाथ मे सोंप दिई और वह सन १८५५ मे अंगरेजों के हाथ मे आई क्योंकि राजा बिन पुत्र के मर गया। तनजोर मे एक प्रसिद्ध बड़ा शिवालय है जिस में पत्थर की बड़ी भारी नन्दी की मूर्त्ति है। देश के और मन्दिरों की और चर्चा आगे मिलेगी।

त्रिचिनापल्ली एक और नगर है जो तनजोर से ३० मील दूर कावेरी नदी के ऊपर बसा है। वह मन्दराज प्रेसिडेन्सी का दूसरा नगर और बड़ी छावनी है। वह शक्ल अर्थात बोड़ी और गहने बनाने के लिये प्रसिद्ध है। इतिहास मे उस का नाम बार बार आता है क्योंकि कितने वैरी उसे घेर चुके है। गढ के बीच में त्रिचिनापल्ली नाम चटान है जो मैदान के बीच मे से २७३ फुट की ऊंचाई तक पहुंची है। ऊपर चढने के लिये चटान मे सीढ़ी कटी हुई है। और ऊपर एक शिवाला और बिलकुल चोटी पर एक छोटा सा गणेश का मन्दिर बना है। हर साल चटान के ऊपर मेला होता है और बड़ी भीड़ चढ जाती है। सन १८४९ में भाड़ भय खाके भाग गई और २५० आदमी दबके मर गये। इस नगर के समीप कावेरी नदी के बीच मे एक टापू है जिस मे एक विख्यात विष्णु का मन्दिर है जिस के बराबर हिन्द में कहीं बड़ा मन्दिर नहीं है। टापू का नाम श्रीरंग है।



दक्खिन का एक मन्दिर।

मादुरा नाम एक नगर है जो मन्द्राज से ३४४ मील दूर दक्षिण पच्छिम ओर वैगई नदी के तट पर बसा है। यह हिन्द के प्राचीन और विख्यात नगरों में एक है। प्रगट है कि मसीह ५०० वर्ष पहिले पाड्य लोग मादुरा में [illegible] करते थे और उन का राज्य ग्यारहवीं [illegible] के अन्त लों बना रहा। सब से पिछला वही सुन्दर पाड्य वा गुणपाड्य



मादुरा के मन्दिर का गोपाराम।

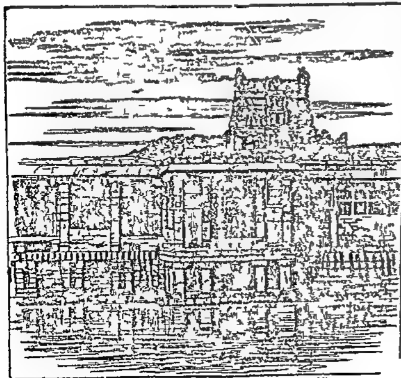
था जिस ने जैन मत को देश से निकाल दिया और चोल के राज्य को जो पड़ोस था जीत लिया परन्तु पीछे किसी सेना ने उत्तर से आकर उस के अधिकार को उलट दिया।

जब विजय नगर का हिन्दू महाराजा प्रबल हुआ तब मादुरा उस के वश में आ गया। सोलहवीं सदी में उस ने विश्वनाथ को मादुरा का अध्यक्ष बनाया। उस के वंश से नायक नाम राजाओं का घराना निकला और उस ने ७२ प्रधानों को जागीर इस हेतु पर दिई कि लड़ाई के समय में उन से सहायता पावे। ये लोग पालिगार वा पलाय करन नाम से कहलाते थे और उन में से कितने घराने आज लों अपनी जमीन रखते है। मादुरा के राजाओं में तिरुमल नाम एक विख्यात था जो सन १६२३ से लेके १६५७ तक राज्य करता था उस ने मादु नगर को बहुत सुन्दर २ गृहों से वि षित किया परन्तु उस के मरने राज्य टुकड़ा २ होने लगा। सन १७ में मादुरा चन्दा साहिब के हाथ में आ और १८०१ में कर्नाटक के नवाब ने अंगरेजों के हाथ मे दे दिया।

मादुरा की पाठशाला प्राचीनका मे प्रसिद्ध थी और लोग उस के विष अद्भुत कहानियां कहा करते थे ए कहानी यह थी कि शिव ने पाठशा को एक हीरे का बना हुआ बैठक दि जिस का यह गुण था कि अपने बढ़ाके योग्य शिक्षकों के लिये जग देता था पर जब कोई कपटी शिक्ष बैठा चाहता था तब आप से आप व समिटकर उसे ढकेल देता था। पाठशा के समाप्त होने की यह कहानी कही जाती कि तिरुवल्लुवर जो अजाती लोगों का एक पंड और अति उत्तम काव्यरचक अर्थात दक्षि का तुलसीदास था जब वह उस पाठशाले शिक्षक बनने चाहता था तब जो ब्राह्मण शिक्षक थे सो बहुत क्रोधित हुए और कहते थे क्या वह कुजाती हमारे संग बैठेगा। इतने मे तिरुवल्लुवर की पुस्तक उस बैठक मे रक्खी गई और वह झट इतना सिकुड़ गया कि सब ब्राह्मण शिक्षक गिराये गये इस अपमान से वे सब यहा लों लज्जित हुए कि समीप के ताल मे डूबके मर गये तब पाठशाले का अन्त हुआ। मादुरा में दो विशेष गृह ये है अर्थात शिव का महा मन्दिर और तिरुमल नायक का बनाया हुआ भवन।

मादुरा की दक्षिण पूरब ओर रामेश्वर नाम एक छोटा टापू है जो हिन्दुओं का एक

त्रिचिनापल्ली की चटान।

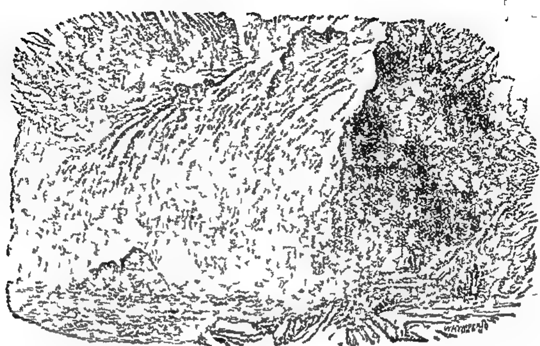


ताल का मन्दिर—मादुरा।

30

तीर्थस्थान है। वहां एक प्राचीन मन्दिर है और लोग कहते हैं कि राम ने आप उस की नेव डाली। वही स्थान है जहां हिन्दू लोग बताते हैं कि हनुमान ने पत्थर और चटान और पहाड़ डाल डालकर लंका में पहुंचने के लिये पुल बनाया। परन्तु सत्य पूछो तो पत्थरों की सन्तों में बालू का उठाया हुआ बांध है पर पुल तो नहीं है।

मन्द्राज का दक्षिण भाग तिन्नेवेल्ली नाम से प्रसिद्ध है जहां लोग प्राचीनकाल में भूत प्रेतों को

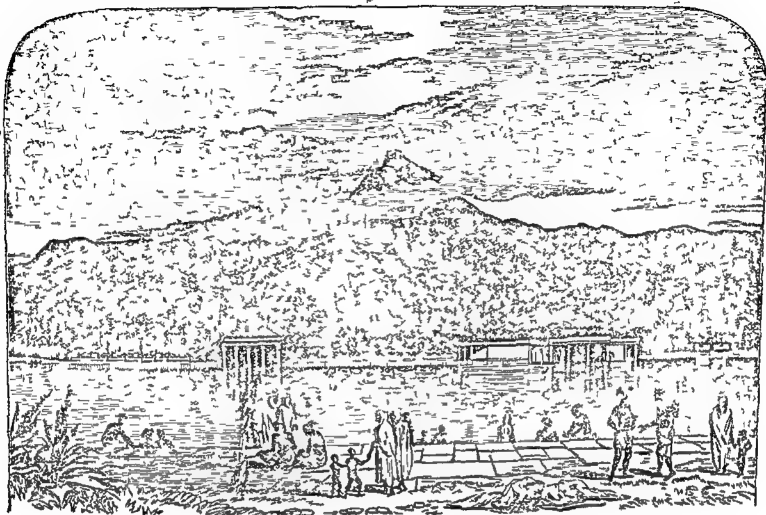


पापनाशन झरना—तिन्नीवेल्ली देश।

अधिक पूजते थे परन्तु आजकल मसीही धर्म्म उन लोगों मे फैल गया है। वहा पच्छिमी घाट मे पहाड बहुत देखने मे आते है। इस चित्र मे हम देखते है कि पापनाशन नाम एक नदी घाट के ऊपर से गिरती है और हिन्दू लोग कहते है कि जो कोई इस झरने के जल मे स्नान करे सो अपने पापो को धोवेगा। कामोरिन अर्थात राजकुमारी नाम बालू का एक अन्तरीप है जिस की नोक पर एक काली चटान है सो हिन्द का अन्तस्थान है।

दक्षिण हिन्द के बडे मन्दिर।

उत्तर हिन्दुस्तान के मन्दिरो की अपेक्षा दक्षिण के मन्दिर बहुत बडे है। बहुधा वे चैाकोण बने है और दोनो ओर बडे ऊंचे पत्थर के फाटक हैं पर वह बीचवाली कोठरी जिस मे मूर्त्ति धरी रहती सो छोटी और निकम्मी रहती है। श्रीरंग के मन्दिर में सा[illegible] आगन एक दूसरे से घिरे हुए है। उस [illegible] जो भीतर की कोठरी के समीप है व[illegible] गृह है जो हजार खंभो का बैठका नाम [illegible] विख्यात है। यह खंभे १२ फुट ऊंचे है और एक दूसरे से दस २ फुट दूर है। हर एक एकही पत्थर का बना हुआ और थोडा बहुत चित्रकारी से विभूषित है। इस के बाहर चार आंगन है जो मन्दिर के सेवको और ब्राह्मणो के लिये है और लोग कहते है कि इन मे 10,000 लोग बसते है। सब से बाहर का आगन एक धर्म्मशाला और बाजार है जहा यात्री लोग टिकते और भोजन पाते है। बाहर की भीत आध मील से अधिक लंबी है। फाटक की चैाखट 40 फुट ऊंची एक २ पत्थर की बनी है और वह पत्थर जिन से छत पटी हुई हैं २४ फुट लंबे है। बडे फाटकों के ऊपर जो बुर्ज है सो कभी समाप्त न हुए।



स्वीथली पुष्प का ताल—तिन्नावेल्ली मे।

देखने मे दक्षिण के कितने मन्दिर अच्छे है पर बहुतो मे एक कुरीति है जिस से चाहिये कि पण्डे लोग लज्जित हो अर्थात मन्दिर की सेवकाई मे वेश्या लोग रहती है जो देवदासी कहलाती और यात्रियो से कुकर्म्म करती है। ये बचपन से इस कुचाल को सीखती और नाना प्रकार की जाती से आती है। यह बुरा दस्तूर है कि कभी २ माता पिता किसी बालक के उत्पन्न होने से पहिले यह सकल्प करते है कि यदि लड़की उत्पन्न हो तो हम उसे मन्दिर मे देवदासी होने के लिये भेज देंगे और इस महापाप के करने से लोग माता पिता की निन्दा नहीं करते वरन समझते है कि उन्हों ने धर्म्मकार्य्य किया है। देखिये कि मूर्त्तिपूजा से आदमी कैसे जड़ मूर्ख बन जाते है। सन ई० १८८१ की लोकगिन्ती से यह प्रगट हुआ कि मन्दराज प्रेसिडेन्सी के मन्दिरो के पास ११५०३ ऐसी देवदासिया पाई गई। कुछ आश्चर्य्य नहीं कि लोग मन्दराज को अधकार का देश नाम देते हैं। सोचिये कि जब लोग इस रीति से महापाप को पुण्य समझते और कुकर्म्म को धर्म्मसेवा बताते है और कुचाल से अपने मन्दिरो को भी भ्रष्ट करते है और इस बुराई को देखके पण्डित और ज्ञानी लोग चुप रहते अथवा इन कुरीतो की स्तुति



महाराजा का तौला जाना ।

साहिब आप थोडी देर के लिये कहार बनकर कहारो के सग ब्राह्मणों की पालकी को ले चलता है तब उस जल को जिस मे ब्राह्मण ने पांव धोया है आप पी लेता है। महाराजा जाति का शूद्र है परन्तु सोने की गाय के पेट में पैठके निकलता तब द्विज बनता है। उस मूर्त्ति की तौल इतनी रहती है जितनी कि महाराजा की होती है और पीछे वह मूर्त्ति ब्राह्मणों को दिई जाती है। चित्र में हम देखते है कि मूर्त्ति के बनाने के लिये सोना तौला जाता और दूसरे पलडे मे महाराजा बैठा है। द्विज बनने के पीछे महाराजा अपने घराने के लोगों के संग भोजन नही खाने पाता वरन जब ब्राह्मण लोग खाना खाते तब उन्हे देख सकता और अपना भोजन उन के सन्मुख खाने पाता है। त्रावनकोर में जाति का बडा विचार किया जाता है। आज्ञा है कि पुलायन अर्थात नीच लोग जो है सो ब्राह्मण से ९६ कदम दूर रहे जो ताड़ी के बेचनेहारे है सो ३६ कदम दूर रहे वरन नायर लोग भी जो शूद्रों मे उत्तम समझे जाते है सो ब्राह्मण को छूने न पावे। परन्तु आजकल यह व्यवस्था कम मानी जाती है। त्रिवान्द्रम में जो मुख्य नगर है एक बडा कालिज पाया जाता है।

प्राचीन और नवीन हिन्दुस्तान की दशा ।

ज्ञानी लोग जानते है कि प्राचीन हिन्दुओ की अपेक्षा आजकल के हिन्दवासियो की अच्छी दशा है परन्तु साधारण लोग इस

उन्नति को नहीं जानते है। और देशो में भी यह दस्तूर पाया जाता है कि लोग पूर्व-काल को सोने का युग अर्थात सुख का समय और आज के दिन को कलियुग अर्थात पाप का राज्य बताते है। एक कारण यह है कि अब के दुखो को भली भांति जानते है परन्तु प्राचीन दुखो को जो बढकर थे कुछ नहीं बूझते हैं। वैसाही बूढो का दस्तूर है कि यह कहा करते है कि हमारी जवानी में बिश्राम बहुत अधिक था पर अब बिपत्ति बहुत है। इस प्रकार के बचन को सुलेमान महाराजा ने बर्जित किया कि यह न कहना कि प्राचीनकाल अच्छा था क्योंकि ऐसी समझ अज्ञानियों की समझ है।



लार्ड लांसडौन।

हिन्दवासी इस बात में इस कारण अधिक धोखा खाते है कि पूर्वकाल की दशा को बिलकुल नहीं जानते है। एक संस्कृत के शिक्षक ने कहा है कि पूर्वकाल के हिन्दू लोग इतिहास का नाम तक नहीं जानते थे। वे काव्य की रचना को चाहते थे और कथा कहानियो को जैसे रामायण महाभारत विष्णु पुराण आदि है बहुत सुनते थे परन्तु यह बूझना कि यह बातें कहा तक सत्य और कहा तक झूठ है अथवा यह पूछना कि उन दिनो की सच्ची दशा कैसी थी ऐसी बात किसी के मन में न आई। सो प्राचीन दशा को ऐसी समझते है जैसी कि काव्यरचको की मनमता से गाठी गई है।

यहा दो चार लाभो का वर्णन होगा जो सर्कार अगरेज के यत्नो से हिन्द को प्राप्त हुए है।

१—पहिला लाभ यह है कि अब राजा राजा से लडने नहीं पाते है जैसा पूर्वकाल मे लडा करते थे। जैसा कि लार्ड डफरिन साहिब ने अजमेर मे कहा कि सर्कार अगरेज के आने से पहिले हिन्द की दशा लडने की दशा थी थोडे साल हुए जिन में हिन्द की जमीन अपने निवासियो के रुधिर से कहीं सींची न गई। बरन ऋगवेद के पढने से जाना जाता है कि प्राचीनकाल मे भी यह लडना झगडना होता रहा। उस में प्रगट है कि आर्य्य लोग सदा दस्यु लोगो से युद्ध करते रहे और केवल यह नहीं बरन एक आर्य्य प्रधान दूसरे से लडता था। उन में ईर्षा और बैर और द्वेष बहुत रहता था और सब अपनी अपनी बडाई चाहते थे सो झगडा करने के बहुत कारण थे। फिर सैकडो वर्ष लो आर्य्य लोग उत्तर से आकर दक्षिण की ओर बढते जाते थे और आदि निवासियो को अपने बश मे करते थे।

सत्य है कि उन दिनो का ठीक इतिहास नहीं मिलता है परन्तु उन प्राचीन कहानियो से जो अब लो है प्रगट है कि उन दिनो में हिन्द में बडी गड़बडी होती रही जैसा एक

कहानी में यह है कि परशुराम ने एक्कीस बार क्षत्री लोगों को नाश किया और उस ने उन के रुधिर को बटोरकर पांच बडे तालों को भर दिया । फिर महाभारत की पुस्तक बडी भारी लडाइयों से भरी है कि जिन से दोनों वैरी की सेनाएं नाश हुईं । यह भी जाना जाता है कि पूर्वकाल में देश छोटे २ राज्य में बांटा गया था जो सदा आपस में लडते झगडते थे । फिर एक ही राज्य में एक घराना गद्दी से दूर किया जाता और दूसरा बिठाया जाता था ।

फिर सोचिये कि बाहर से हिन्द देश पर कितनी चढाइयां किई गईं और उन में कितने लाखों बेचारे घात किये गये । जब महमूद गजनवी बार २ सेना सहित हिन्दुस्तान में आता था तब देश की कैसी दुर्दशा रही । जब तैमूरलंग और नादिरशाह और अफगानी प्रधान बार २ उत्तर से धावा करते थे तब हिन्द देश कैसा दुःखित हुआ ।

फिर बाहर के वैरियों को छोड भीतर भी ऐसे दुष्ट पाये गये जिन के झगड़ों से देश की बड़ी हानि हुई जैसा कि एक बार जब गुलबर्गा का सुलतान मोहम्मदशाह विजयनगर के महाराजा से युद्ध करने लगा तब उस ने कुरान पर किरिया खाई कि जब लों एक लाख काफिरों को बध न करूं तब लों तलवार को काठी में न रक्खूंगा । और मोहम्मदी इतिहासरचक इस बात पर जय जयकार करते हैं कि उस युद्ध के समाप्त होने से पहिले पांच लाख काफिर मुसलमानों के हाथ से मारे गये और सैकडों वर्ष तक कर्नाटक उजाड और सुनसान पडा रहा । फिर ऊपर वर्णन हुआ कि मरहठा लोगों के प्रबल होने से देश की कैसी दुर्दशा हुई ।

इस के विरुद्ध आजकल के सुखचैन को देखिये । जब से सर्कार अंगरेज यहां प्रबल हुई तब से किसी बाहर के वैरी ने हिन्द में प्रवेश नहीं किया न कोई राजा राजा से लडने पाता है । सन १८५७ के बलवे को छोड देशवासी चैन से रहे हैं । पंजाब काबुल बर्मा आदि में अंगरेजों का कुछ झगडा हुआ है परन्तु ऐसा नहीं कि जिस से हिन्दवासियों पर विपत्ति पडे । हम चैन की रोटी खाते हैं और वह सर्कार की सेना जिस से यह सुख बचाया जाता है कुछ बहुत बडी नहीं है । यदि उस का समस्त व्यय जैसा सन ई० १८८३ में होता था सो सब हिन्दवासियों में बांटा जाता तो हर एक को मासिक केवल एक आना दो पाई देना पडता मानो हर एक चौकीदारी के लिये इतना देता है ।

२—दूसरा फल यह है कि डकैती ठगाई चोरी आदि बहुत रोकी जाती है और देशों में चोर पाये जाते हैं परन्तु हिन्दुस्तान में एक अद्भुत बात यह है कि जैसा योद्धाओं की जाति और व्योपारियों की जाति है इसी रीति से सो जाति ऐसी है जिन के लोग जन्म से चोरी ठगाई को अपना उद्योग समझते हैं । ये लोग पूजा करके अपने काम को निकलते थे और जब किसी को लूटते मारते तब कहते कि हमारी देवी की आशीष हम पर हुई हमारी देवी हमारे काम से प्रसन्न है । जब लूट मार करने में नरहत्या हो जाती थी तो वे निश्चिन्त रहते थे बरन वे पीछे से इन पापों का ऐसा वर्णन करते थे जैसा कोई शिकारी वर्णन करता है कि मैं ने कितने वनपशुओं को मारा है । इन जाति के चोरों के उपरान्त और भी बहुत से लोग थे जो चोरी डकैती करते थे । इन लोगों के डर के मारे

यह दस्तूर हो गया था कि जिस किसी के पास सोना चादी होता तो वह गाडके जमीन में छिपा देता था। पर इस से भी धन न बचता था क्योंकि डाकू लोग मालिक को अत्यन्त दु:ख देके उस से पूछते थे कि तू ने अपने धन को कहा गाड दिया है।

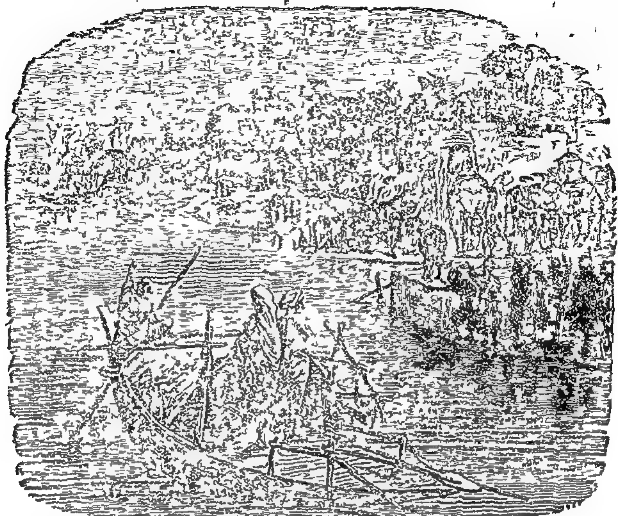


ठगों का चित्र।

यह बात सत्य है कि कोई लोग चोरी को बिलकुल नहीं रोक सकते है। कभी २ दुष्ट लोग बडी दुष्टता करते है। पर सर्कार ने ऐसा इन्तिजाम किया है कि चोरी डकैती अब हिन्द देश में बहुत कम है वरन और भी कम होती जाती है। सन १८६० की अपेक्षा सन १८८० में बन्दीगृह के कैदी एक चौथाई कम हो गये और निवासियो की गिन्ती बहुत बढ गई। फिर पोलिस का व्यय बहुत अधिक नहीं होता है। सन १८८२ मे पोलिस की गिन्ती १,३०,३०० थी जिस का व्यय साल में २,३०,८१,४३३ रुपिया होता है अर्थात हर एक हिन्दवासी को दो पाई मासिक इस प्रकार

और देश मे तैयार न
हिन्द के किसान बहु
है परन्तु इस का का
कितने लोग कहते है कि
होता सो विलायत के
कारण से कि किसान
है परन्तु कारण यह
खेतो पर कम बरसत
पर नहीं बरसता है
कि इस विपत्ति से ब
अच्छा उपाय यह है कि
जाये और कि बहुत न
उन से जल को नहरो
इधर उधर खेतो में पहुं
मील नहरो के और
हिन्दुस्तान में बन चुके
अपेक्षा अब कुछ और त
यों हर साल करोडो
उत्पन्न होता है और ज
तब लाखो आदमियो के

४—चौथा लाभ यह है
सहज से भ्रमण कर
इतनी पक्की सडके औ
और इतने अग्निबोट च
की यात्रा सहज हो गई है
की अमलदारी में जब कोई
चाहता था तो बहुधा माल
में वा टट्टू पर सवार हो
यदि वह न मिले तो पैदल
जहा सडके नहीं थीं तह
वा ऊटो पर लादके मेजते



यात्रा ।

नहीं था और यों लाखों आदमी भूख से मर जाते थे । अब सर्कार से १८,००० मील रेलवे के और १,४०,००० मील सडकों के बन चुके हैं और हर साल और भी बनते जाते हैं और हर साल ११,००,००,००० आदमी रेल गाडी में सवार होकर यात्रा करते हैं अर्थात इतनी रेल की टिकट हर साल बिकती है । सागर तीर के सब कोठों मे अग्निबोट चलते हैं और यात्री बंबई से सोलह रोज में इङ्गलिस्तान में पहुंच सक्ता है । वहीं २ नदियों में जैसी गंगा यमुना इण्डस आदि पर पुल बांधे गये हैं और पूर्वकाल की अपेक्षा यात्री को बडा विस्राम मिलता है ।

५—पांचवां लाभ यह है कि हिन्दवासी बहुत सोना चांदी को बटोरा करते हैं । ज्ञानवान कहते हैं कि पिछले सौ वर्ष के बीच में चार सौ करोड रुपयों का सोना चांदी विलायत से आकर हिन्दुस्तान में एकट्ठा किया गया है । इस मे से एक बडे भाग को लोग गहना बनाकर अपने घरों में रखते हैं । अब कई वर्ष से यह दस्तूर हो गया है कि समस्त सोने को जो संसार भर की खानों से निकाला जाता है चौथाई और समस्त चांदी की तिहाई हिन्दुस्तान में आके रहती है ।

६—छठवां लाभ यह है कि आजकल लोगों को भला चंगा रखने के लिये बहुत उपाय किये जाते हैं जैसा यह कि कितने बडे नगरों के वासियों को अब नल का पानी पिलाया जाता और इस से हैजा का डर कम रहता है फिर कुनैन जो तप रोग की सब से अच्छी

औषध है अब सस्ती बिकती है और सर्कार उस वृक्ष को जिस से यह औषध प्राप्त होती बहुत लगवाती है फिर टीका लगाने से अगणित लोग शीतला रोग से बचाये जाते है और नगर बस्ती में हर कहीं अस्पताल और औषधालय खुल गये है वरन स्त्रियो की सहायता के लिये अस्पताल अब बहुत है । इन उपायों से कितनो के प्राण बचाये जाते है।



डाकू व व्यापारी ।

७—सातवा लाभ यह है कि अब बहुत से स्कूल पाठशाले कालिज आदि खोले गये है । पूर्वकाल में लोगों का पढाना राजकार्य्य समझा न जाता था परन्तु सर्कार अंगरेज इस को लाभदायक कार्य्य समझती है और इतने स्कूल कालिज आदि खोले गये है कि सन १८९० मे इन में छत्तीस लाख लडके लडकिया पढाये जाते थे ।

८—आठवा लाभ यह है कि प्रजा के विश्राम के लिये अब अधिक चिन्ता किई जाती है। पूर्वकाल में सर्कारी सेवक कोतवाल थानेदार आदि लोगों को मासिक कम दिया जाता था और लोगों को तग करके वे अधिक कमाते थे । उन मे से बहुत अन्याय से लिया करते थे । आजकल ऐसे लोग अधिक पढाये जाते है और अधिक मासिक मिलता है सो अन्याय कम किया जाता है । हां कभी २ अन्याय किया जाता है जिस को सर्कार रोक नही सकती पर बहुत करके न्याय से रक्षा करने में बडी उन्नति है ।

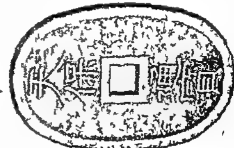
हण्टर साहिब ने कहा है कि यदि कोई हिन्दू जो सौ वर्ष पहिले मर गया फिर जीवता हो सकता और आजकल हिन्द की सैर कर सकता तो कैसा आश्चर्य्यित होता । जब इस बात को देखता कि सैकडो वर्ग मील जमीन जो उन दिनो में जङ्गल और वनपशुओं से भरी हुई थी अब अच्छे खेतो और बारियो से लहलहाती है और जहां बडे २ दलदल थे जिन से ऐसी बुरी हवा निकलती थी कि जिस से बहुतो को तप रोग हो जाता था अब सुखाये गये और मनुष्य के काम मे लाये गये है और बडी पहाड की श्रेणिया जो भीत की नाईं एक देश को दूसरे से अलगाती थी अब सडकों और रेल के द्वारा से मिलाई गई है और लोग सहज से पार जा सकते है और बडी २ नदिया जो उन दिनो में यात्रियो को रोकती थी और कभी २ बाढ के द्वारा बहुत जमीन को बिगाडती थीं सो अब पुल के बांधे जाने से बटोहियो को नही रोकती और नहरो के द्वारा से उन का जल खेतो में पहुंचाया जाता है । पर एक और बात इन से बढके उस को अद्भुत देख पडती अर्थात यह कि प्रजा आजकल कैसे चैन से रहती है । उन दिनो में प्रधान से ले किसान लो हर एक मनुष्य हथियार लिये फिरता था परन्तु आजकल कठिनता से कोई तलवार वा बन्दूक देखने में आती है । जब देशी राज्यों मे

जहां उन दिनों मे राजा राजा से लडा करता आजकल क्या देखेगा कि वे आपस मे सुख से लेन देन करते और सडके और रेलवे और डाक और तार मानो प्रेम की डोरियो से उन्हे एक मे जोड देते है। फिर वह देखेगा कि न केवल बहुत सी प्राचीन बाते बदल गई बरन बहुत सी नई बातें प्रचलित हो गई है। सब बडे नगरो मे नये प्रकार के बडे २ गृहो को देखेगा न वह बता सकेगा कि यह किस अर्थ से बने है क्योकि पूर्वकाल मे कहो ऐसे गृह हिन्दुस्तान मे दिखाई न देते थे। यदि पूछे कि किस राजा ने उस सुन्दर बारादरी को अपने बिस्राम के लिये बनाया है तो उसे यह उत्तर दिया जायगा कि वह गृह महाशयो के सुख के लिये नही बरन दुःखियो के बिस्राम के लिये बना है क्योकि वह अस्पताल है जहां कङ्गाल और भिखारी भी रोगी होकर जा सकता है। यदि कोई पूछे कि वह ऊचा २ मन्दिर किस देवी के नाम पर बना है तो यह उत्तर दिया जायगा कि वह किसी देवी के लिये नही बरन नगर के लडको के पढाने के लिये कालिज बना है। जहां गढ और कोट पूर्वकाल मे बने थे तहां आजकल कचहरी पाई जाती है। ऐसा बदल बदल देखके उस काल के हिन्दू का मन क्याही घबरा जाता।

हिन्दवासियो की दरिद्रता का क्या कारण है।

आजकल कितने हिन्दू सर्कार अंगरेज की निन्दा यह कहके करते है कि हिन्द के निवासियो की बडी दरिद्रता हो गई बरन बढती भी जाती है और इस का यह कारण बताते कि साहिब लोगों को बडे २ मासिक दिये जाते है और इस कारण से हिन्द की उपज बिलायत भेजी जाती है सो देश धनहीन होता जाता है। परन्तु इस बात के बहुत से प्रमाण हो सकते है कि हिन्द धनहीन नहीं बरन धनवान होता जाता है और इस धन की बढती उन साहिबों के द्वारा से होती है जो प्रजा को सुखचैन में रखते है और उन्हे लडाइयो के कष्टो और लुटेरो के धावो से बचाते है। सत्य है कि लोग बहुत करके धनहीन है परन्तु स्मरण करो कि आरम्भ से उन की यह दुर्दशा होती आई है और केवल आजकल उन को थोडी सी छुट्टी होने लगी है। न हिन्दुओ के राजाओ मे न मोगल पठान के बादशाहो में कोई ऐसा था जो उन्हे इतना सुख दे जैसा वे अब पाते है।

इस का एक प्रमाण यह है कि पूर्वकाल मे लोग बहुधा ऐसे कङ्गाल थे कि वे पैसों से नहीं बरन कौडियों से अपना लेनदेन करते थे। लाखो रुपयो की कौडिया हर साल देश मे लाई जाती और लोगो के काम मे आती थी। आजकल लोगो की इतनी उन्नति हुई कि कौडी अवश्य नही बरन पैसा से बहुधा काम चलता है।



चीन का काश।

चीन देश के निवासियो की भी बडी दरिद्रता है और गाव २ में काश नाम एक पीतल की वस्तु जिस में छेद रहता जिस के द्वारा वह पिरोई जाती है पैसे के काम में आती है। बडे २ नगरो में डालर अर्थात दो रुपिया

का सिक्का चलता है परन्तु दिहात में जाकर डालर की सन्ती काश को काम मे लाना पडता है और ये ऐसे सस्ते है कि दो चार डालर के काश एक मजूर का बोझ होता है अर्थात १000 वा १२00 एक डालर की सन्ती मिलते है। वे कैसे कङ्गाल लोग है जिन के पैसे ऐसे है।

सत्य है कि यदि राजकार्य्य अगरेजो के हाथ में नहीं वरन बगालियो के हाथ में छोडा जाता तो मासिक कुछ कम देना पडता परन्तु सब ज्ञानवान जानते है कि उन से राजकार्य्य ठीक न चल सकेगा और कि देश की फिर वैसी दुर्दशा हो जाती जैसी उन गडबडी के दिनो में थी। और जो अगरेजी पलटन न हो तो हिन्द देश को रूस लोगो के उपद्रवी राज्य से कौन बचा सकेगा और जो विपत्ति भी न पड़े तौभी पहिले की नाईं हिन्दू मुसलमान देश के अधिकार के लिये लडने लगते। क्या ऐसे झगडो के बीच में प्रजा अधिक धन कमा सकेगी। इस बडे बचाव का व्यय बहुत थोडा होता है क्योंकि यदि यह व्यय समस्त हिन्दवासियो में बाटा जाता तो केवल दो रुपया साल हर एक को देना पडता। उन देशो में जहा शिष्टाचार फैला हुआ है ऐसा कोई नहीं है जहा इतना थोडा महसूल वालियाना लगता है। फ्रान्स देश के निवासियो मे से एक एक को इस का चौबीस गुना अर्थात ४८ रुपया साल महसूल देना पडता है। इटाली देश के लोगो को १३ गुना अर्थात २६ रुपया इङ्गलिस्तान के लोगो को १२ गुना अर्थात २४ रुपया और रूस के लोगो को ६ गुना अर्थात १२ रुपया साल महसूल देना पडता है।

फिर सोचना चाहिये कि जो रुपये इङ्गलिस्तान मे यहा से भेजे जाते है सो दो बातो के कारण से भेजे जाते अर्थात उन रुपयो के सूद के लिये जो यहा से उधार लिये जाते और उन सेवको के मासिक के लिये जो हिन्द देश की रखवाली के लिये परिश्रम करते है। इस पिछले व्यय के विषय मे यह विचार करना उचित है कि यदि समस्त यूरपवाले चाहे साहिब हो चाहे सिपाही हो हिन्द को छोडके चले जाये तो एक २ हिन्दवासी का महसूल केवल एक आना मास घट जाता और इस थोडे बचाव का यह फल होता कि देश मे वही लडाइया फिर हो जाती जो पूर्वकाल मे थी।

जाति के बन्धनो के कारण से और काला पानी के डर से हिन्दू लोग परदेश की यात्रा करने से रुके रहते है और इस लिये और सन्तानो के समान वे परदेश का व्योपार करके धनवान नही हो जाते है। फिर जाति के कारण से हिन्दू लोग नये २ उद्योग कम निकालते और बहुत करके वही उद्योग करते जो उन के पुरखो के थे और इस लिये धन कम कमाया जाता था परन्तु आजकल लोग इन बेडियो को हानिकारक समझके तोड फेकने लगे है सो आसरा है कि बीस एक वर्ष में देश को बडा लाभ होगा।

राजा सर माधवराव ने जो बहुत वर्ष तक दो बडे देशी राज्यो का मन्त्री था हिन्दवासियो की दरिद्रता के विषय यो कहा कि जितना अधिक सोच विचार करता और हिन्द देश की दशा को जानता हू उतना अधिक यह बात प्रत्यक्ष हो जाती कि सकल जगत में ऐसा देश नही है कि जिस के निवासी सर्कार से इतना कम कष्ट पाते और इतना बहुत दु ख अपनी करनी से प्राप्त करते जैसा कि मेरे हिन्दू भाई उठाते है और लप

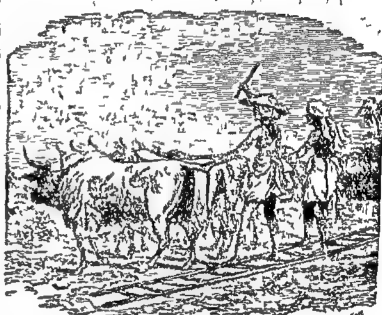
वे आप अपने दु खो को बढाते तो यदि की चाहे तो उन्हे घटा भी सकते है । हण्टर साहिब से बढकर कोई आदमी हिन्दुस्तान की ठीक दशा नही जानता है और उस की साक्षी यह है कि हिन्दुस्तान की दरिद्रता के उपाय हिन्दवासियो के हाथो में है अर्थात उन की दरिद्रता के कारण ऐसे है जिन को वे अपनी शक्ति से मिटा सकते है ।

देश की भलाई के लिये सर्कारी उपाय ।

हम यह समझते है कि इस पिछले सो वर्ष के बीच में देश की भलाई के लिये सर्कार अंगरेज से इतना किया गया है जितना देशी राज्यो के जमाने में हजार वर्ष के बीच में किया गया था और यह उन्नति अभी समाप्त नहीं हुई । सर्कार हिन्द के लाभ के लिये और भी बहुत से उपाय निकालेगी परन्तु स्मरण करो कि यदि प्रजा सर्कार को वैरी और उपद्रवी समझे और हर एक नई बात और नये दस्तूर को चाहे वह कितना ही लाभदायक हो शक्ति भर रोके और समस्त उन्नति से लडती रहे तो सर्कार लाचार होगी। वे लोग जो सर्कार में और प्रजा में वैर और संदेह और द्वेष उपजाते है स्वदेश के मित्र नहीं है । स्वदेशमित्र उन ही को कहना चाहिये जो हर बात मे अपने लोगों की उन्नति चाहते है ।

वे उपाय जो हिन्दवासी अपने देश की उन्नति के लिये कर सकते है ।

१—पहिला उपाय यह है कि जो हिन्दू विद्यार्थी है उन्हे बारिष्टर वकील आदि होना न चाहिये बरन किसी प्रकार की कारीगरी वा काश्तकारी करने मे उद्योग करना चाहिये अर्थात खानेहारे नहीं बरन उत्पन्न करनेहारे हो जाये हा थोडे ऐसे लोग अवश्य चाहिये जो सर्कारी नोकर और वकील आदि हो परन्तु यह सोचे कि ये लोग बहुत करके देश के धन को नही बढाते बरन केवल उसे व्यय करते है सो जब उन की गिन्ती बढ जाती तब देश धनहीन बन जाता है ।



किसान ।

२—दूसरा उपाय यह है कि लोग अनर्थक व्यय विवाहो और श्राद्धों के लिये न किया करें । जब लो इस रीति अपने रुपयो को निर्लाभ बातों मे उडाते रहे तब लों देश की दरिद्रता किसी रीति से न जायगी ।

३—तीसरा उपाय यह है कि देश के निवासियो को पूर्व दृष्टि करना अर्थात आगे की चिन्ता करना उचित है । बहुत लोग बालको के समान है । जो कुछ हाथ लगे आज ही खा पी जाते और नहीं सोचते कि कल उस का और भी प्रयोजन होगा । ये यह नहीं सोचते कि वह दिन आता कि जिस

मे रुपये अवश्य होंगे न कुछ बचा रखते सो जब वह दिन आता तब बनिये के पास जाना और बड़ा सूद देना पड़ता है सो करोड़ों रुपये निष्प्रयोजन बनिये और महाजन लोगों के हाथ में दिये जाते है ।

४—चौथा उपाय यह है कि अगणित सोनार जो है सो लोहार वा बढ़ई हो जाये । पिछली लोकगिन्ती में हिन्द देश में ४,०१,५८२ सोनार पाये गये और केवल ३,८४,९०८ लोहार पाये गये । यदि एक २ सोनार घट बढ़के लेखे से छः रुपया मास कमाता हो तो साल में २८९ लाख रुपया उन्हीं को दिया जाता है । इतने सोने चांदी के गहने किस अर्थ से बनाये जाते है ।

५—पांचवां उपाय यह है चाहिये कि लोग उस सोना चांदी को जो अब घर में छिपा रखते है किसी रीति से काम मे लाये जिस्ते उस के सूद से लाभ उठावे । ज्ञानवान कहते है कि हिन्दवासियों के घरों में दो सौ करोड़ के गहने रक्खे हुए है । यदि सालियाना १२ रुपया सैकड़े के सूद पर इतना धन दिया जाता तो जमीन के महसूल की अपेक्षा जो सर्कार को दिया जाता अधिक प्राप्त होता । बहुत लोग जो रुपयों को उधार देते सो सूद के लिये साल में १२ वा २४ रुपया सैकड़ा प्राप्त करते है परन्तु गहनों का सूद पर देना कठिन है सो विलायती लोग जो गहनो से मोहित नहीं है इस सूद को प्राप्त करते है । एक देशी समाचारपत्र में यह लिखा है कि इस सदी में इतना सोना चांदी हिन्दुस्तान में आ चुका है जो ४,४२,८३,९९,२७० रुपये के बराबर था और यह हिसाब ठीक होगा क्योंकि छः वर्ष में अर्थात सन १८८१ से लेके १८८६ तक ६१ करोड़ अर्थात सोना २२ करोड़ ५७ लाख रुपये का और चांदी ३८ करोड़ १७ लाख रुपये की हिन्दुस्तान मे आई । इस धन का सूद जो हिन्दवासियों को मिलता तो उन को क्या ही बड़ा लाभ होता ।



हिन्दू स्त्रियों के गहने ।

६—छठवां लाभ यह है कि हिन्दू लोग विवाह करने में सावधानी करे । उन का बचपन में विवाह करना विशेषकर एक भूल से सबन्ध रखता है । भूल यह है कि वह जिस का पुत्र न हो जो पिता का श्राद्ध करे सो पुत्त नाम नरक में डाला जायगा । यह बात असत्य है वह जो धर्म्मी है चाहे बिन पुत्र मरे मुक्ति पावेगा और वह जो अधर्म्मी है चाहे उस के दस पुत्र हों सो अपने पापों

का फल भोगेगा । बच्चों का विवाह करना एक कुरीति है जो और देशों मे बहुत कम पाई जाती है और देशवाले यह बिचार करते है कि जब लों लडका स्याना न हो और अपने घराने की रोटी कमा न सके तब लों बिवाह करना उचित नही है । और जब लों लड़का लडकी स्याने न हों और ऐसे भारी कार्य्य के कर्त्तव्य को न समझ सकें तब लों बिवाह करना धर्म्म नही है । फिर जलदी बिवाह करने से और इस की चिन्ता न करने से कि ये लोग बालक को पाल सकेंगे वा नही लोगों की गिन्ती अधिक बढ जाती है और लोग अवश्य करके दरिद्र हो जाते है ।

७—सातवां उपाय यह है कि जब लोग अपने स्थान मे जीविका नही पा सकते तो कही चलकर काम ढूढना चाहिये । और देशो मे लोग ऐसी चतुराई करते है कि जब एक देश मे रोटी न मिले तो दूसरे देश को जाते है पर बेचारे हिन्दू अपने देश में पडे २ भूखों मरना उचित समझते है । जब एक ही वर्ग मील जमीन मे ५०० वा ८०० आदमी बसते है तो जमीन इतनो के लिये रोटी उत्पन्न नहीं कर सक्ती तो यदि बहुत लोग परदेश चले जायें जहां अधिक रोटी हो तो उन के लिये जो जाते और उन के लिये जो पीछे रह जाते है बहुत लाभ होता है । हा ब्राह्मण लोग ऐसा न हो कि लोग हमारे बश से छूटे सभो को जो विलायत को जाते स्थापित बता-येगे तौभी लोगों को सोचना चाहिये कि किस बात से हमारा लाभ हो सकता है और यदि कोई कहे कि मैं हिन्द देश के बाहर न जाऊंगा तो भला हिन्द के भीतर भी कितने स्थान है जहां आदमी कम है उन्हो को ढूढो और काम मे लाओ ।

८—आठवां उपाय यह है कि जब जाति की जजीरे तुम्हे किसी लाभदायक काम से रोकती है तो उन जजीरों को उतार फेको । कितने काम ऐसे है कि जिन से जीविका भली भांति मिल सकती है परन्तु लोग उन्हें नीच ठहराके उन से अलग रहते है । परन्तु सोचो कि पाप को छोड कौन बात नीच है ।



भूदेव पूजा ।

९—नवा उपाय यह है कि हिन्दवासी अपनी बुद्धि और समझ को काम में लावें। बहुत करके लोग यह नहीं पूछते है कि कौन बात अच्छी है वरन यह पूछते है कि दस्तूर क्या है। वे लोकरीति से जो कितनी बुरी क्यों न हो प्रसन्न होते है। क्या हर बात मे पुरखो की लीक पर चलना धर्म्म है। यदि है तो ईश्वर ने वृथा हम को चैतन्य बनाया है। जब कि लोग समझ बूझके काम नहीं करते वरन ज्योतिषियो से पूछके करते और शुभ अशुभ समयों का विचार करते और कौवा छिपकलियों गदहो से लक्षण बूझके अगुवाई पाते है तो उन की दुर्दशा अवश्य होगी। ईश्वर ने हमारे हिन्दू भाइयो को अच्छी समझ बुद्धि दिई है तौभी इस को काम मे न लाकर ये शगुन ढूढते और ज्योतिषियो को बुलाते और अपने बहुत कामो को बिगाड देते है। इस हेतु से जो और सन्तान ज्ञान से चलते सो उन से आगे बढ जाते है।

१०—दसवां उपाय यह है कि भिखारियो का आदर न करना। और देशो में भी भिखमगे है परन्तु इस लिये कम है कि लोग भीख मागना अपमान की बात समझते है पर यहा कठिन बात तो यह है कि जब कोई मोटा ताजा आलसी जन ऐसा सुस्त और सुखभोगी हो जाता कि उद्योग करने से थक जाता तब योग बैराग करने लगता और लोग कहते है कि साधू जी आये है उन को खिलाना चाहिये। ये हुडार देश की कमाई को खाते है। न केवल यह पर जो धन सुस्ती से प्राप्त होता सो बहुत करके कुचालो मे जाता है। ये बैरागी लोग कुकर्म्म में प्रसिद्ध है और भाग धतूरा आदि के पीनेहारे उन में बहुत है। जो लूले लगडे अन्धे है और परिश्रम नही कर सकते उन को कुछ देना उचित है परन्तु भले चगो का सेत ही खिलाना अच्छा नही है। सन १८८१ की लोकगिन्ती मे बारह लाख से अधिक बैरागी और भिखारी हिन्द देश में पाये गये और परिश्रमी लोगो को उन्हें पालना पडता है। क्या आश्चर्य्य है कि लोग बहुधा धनहीन रहते है।

११—ग्यारहवां उपाय यह है कि लोग भांग धतूरा अफीम मद्य आदि को न पिया करें। ठण्ड देशो की विशेष कुरीति यह है कि वहा के लोग बहुत रम वैन ब्राण्डी आदि को पिया करते है और इस से बहुत घराने बिगड जाते है। यदि यह कुरीति गर्म देशो मे भी फैल जाय तो बडे शोक की बात है और डर है कि यह कुरीति हिन्दुस्तान मे फैली जाती है। सन १८०४ में आबकारी का महसूल अढाई करोड रुपया था और १८८५ में चार करोड था सो बहुत बढती हुई और जो कुछ इन वस्तुन के लिये दिया जाता सो लाभ के लिये नहीं वरन हानि के लिये दिया जाता है।

१२—बारहवां उपाय यह है कि हर कोई यह सोचे कि मै अपने लाभ के लिये क्या कर सकता हू औरो के भरोसे से नही वरन अपने परिश्रम से कमाई प्राप्त होती है। बहुत लोग जब अपनी सुस्ती और निश्चिन्तता से दु खी हो जाते तब कहते है कि मेरी किस्मत बुरी थी वा यह विपत्ति मेरे कर्म्म मे लिखी थी सो वे उस विपत्ति से छूटने के लिये कुछ भी यत्न नही करते है। यह बडी मूर्खता है। और लोग अपने दु खों का दोष सर्कार पर लगाते है परन्तु हमारी समझ में जब प्रजा आप परिश्रम न करेगी और चतुराई से न चलेगी और कुरीतो को न त्यागेगी तो किसी रीति से सर्कार से सुखी न हो सकेगी।

समस्त हिन्दुओं को एक ही जाति के बताया। इस के मत के प्रचारनेहारे दूर २ स्थान लों चले गये। यहां लों कि सैकड़ों वर्ष लों काशी में यह मत स्थापन हुआ और प्रियादासी अर्थात अशोका बादशाह ने जो इस मत को मानता था अपना राज्य बहुत फैलाया और वह मत लङ्का नैपाल ब्रह्मा सियाम चीन जापान आदि देशों मे पहुंचाया गया। पीछे को ब्राह्मणों का मत फिर प्रबल होने लगा बरन यहां लों बढ़ गया कि बौद्धमत देश से निकाला गया केवल जैनमत जो उस से निकला है सो हिन्द के पच्छिम भागों मे प्रचलित रह गया है।

नये हिन्दूधर्मों का स्थापित होना।

धीरे २ हिन्दू लोग वेद की शिक्षाओं को छोड़के ऐसी लीक पर चलने लगे जिस में आज तक चलते हैं। धीरे २ वेद के देवताओं की पूजा जाती रही और नये देवताओं के नाम साधारण लोगों में सुनाये गये। ज्ञानवान कहते हैं कि शिव की पूजा का आरंभ हिन्दुओं मे कुछ २४ सौ वर्ष बीते से हुआ। सन ई० ६00 मे वैष्णव लोग हिन्द देश मे बहुत होने लगे तौभी दिहातवाले अपने गांव की देवी देवतों को बहुत पूजते थे। जब ब्राह्मणों ने देखा कि इन की पूजा मिटती नहीं तब उन्हों ने इन दिहाती देवताओं को शिव विष्णु आदि के अवतार और रूप बताकर उन को मानो अपनाया और इस से आजकल की पूजा मे बड़ा गड़बड़ है क्योंकि कोई मानता और और कोई मानता और और दोनों कहते हैं कि हमारी बात पक्की है। राम और कृष्ण जो पहिले राजा और शूरवीर माने जाते थे धीरे २ देवते और विष्णु के अवतार माने गये और उत्तरी हिन्दुस्तान मे उन ही के नाम अधिक मने जाते हैं।

पुराणों मे जो धर्म्म वर्णित है सो वेद के वर्णित धर्म्म से कितनी बातों मे भिन्न है और ज्ञानवान कहते हैं कि उन की रचना वेदों की अपेक्षा बहुत नई है अर्थात उन मे जो


मूर्त्ती का बनाना।

सब से प्राचीन है आठवीं ई० सदी में और उन में जो सब से नये है सो चार सौ वर्ष बीते रचे गये। आजकल उत्तर हिन्दुस्तान के वासी अधिक करके विष्णु और उस के अवतारों को पूजते और मन्द्राजवाले अधिक शिव को पूजते और बङ्गालवासी दुर्गा को पूजते है।



मूर्तों की बिक्री।

मुहम्मदियों के धर्म्म का हिन्द में फैलना।

महमूद गजनवी जो सन ई० १००० के लगभग राज्य करता था पहिला मुसलमान था जो हिन्द में प्रबल हुआ। अरबवालों की कितनी चढाइयां इस से पहिले हुई पर उन का वश न चला। पर महमूद के पीछे मुसलमानों ने धीरे २ समस्त देश को अपने वश में कर लिया। उन में बहुत थे जो अपने धर्म्म के फैलाने में तीव्र थे। औरङ्गजेब बादशाह ने कितने हिन्दुओं का बर्जोरी से खतना करवाया। उस ने काशी के विशेष मन्दिर को तुडवाके उस के पत्थरों को लेके उस बडी मसजिद को बनवाया जो आज लों है। फिर उन के राज्य में मुसलमानों को नाना प्रकार का लाभ होता था जिन की लालसा से बहुत से हिन्दू उस धर्म्म को ग्रहण करने लगे। बङ्गाल के पूर्व भागों में और सिंध नदी के समीप मुसलमान बहुत मिलते है पर मन्द्राज की ओर और दक्षिण में थोडे है।

मसीही धर्म्म का हिन्द देश मे आना।

पहिली मसीही सदियों मे मिस्र देश का सिकन्दरिया नगर सकल जगत मे विख्यात था जहां बणिज व्योपार अधिक होता था । मार्क मेरित जो मसीह का एक शिष्य था कई साल लों वहां रहा और उस के बहुत चेले हुए । ज्ञानवान कहते है कि कितने हिन्दू व्योपारी उन दिनो मे मोतियों और कौशाम्बर के कापडो को बेचने के लिये मिस्र मे जाया करते थे और प्रगट है कि उन्हो ने वहां इस बात का सुसमाचार पाया कि यीशु मुक्तिदाता संसार मे अवतार लेके आया है । दूसरी सदी मे सिकन्दरिया नगर के बिशप के पास यह बिन्ती भेजी गई कि हमारे पास उपदेशक भेजिये जो यीशु तारणहार का सन्देश देवे । इस बिन्ती के अनुसार पन्तनुस नाम एक मसीही पंडित हिन्द मे भेजा गया। प्रगट नहीं कि उस से पहिले कोई पादरी हिन्द मे आया वा नही। थूमा मेरित का दक्षिण मे आना बर्णित है पर जाना नही जाता कि यह बात ठीक है वा नही । चौथी सदी मे सुरिया देश से कितने मसीह के चेले आये और मलाबार मे बसे और उन के वंश के लोग अब तक वहा पाये जाते है ।

जेव्यर नाम एक प्रसिद्ध रोमनकाथलिक पादरी था जो सन ई० १५४२ मे गोआ में आके उस मत को प्रचारने लगा और बहुत से हिन्दू उस के चेले होने लगे । आजकल हिन्द में पद्रह लाख रोमनकाथलिक मसीही है ।

पहिले प्राटेस्टण्ट मसीही पादरी जो हिन्द में आये सो सन ई० १७०६ में मन्दराज देश के त्रावनकोर में आके रहने लगे । बङ्गाल में पादरी केरी साहिब सन १८०० में श्रीरामपुर मे उपदेश देने लगा । पादरी लोग पश्चिम हिन्दुस्तान मे सन १८१३ मे काम करने लगे । लड़कों का पढ़ाना विशेषकर उस समय से



हिन्द की स्त्रियां ।

हुआ जब डफ साहिब ने सन १८३० में हाई स्कूल कलकत्ता में खोला । उस समय से मसीही पादरी समस्त हिन्दुस्तान मे फैलने लगे और अब अंगरेजी और अमेरिकन और जर्मन पादरी साहिब लोग सब बडे नगरो में पाये जाते है । प्राटेस्टण्ट देशी मसीही लोग आजकल हिन्द मे बहुत है । लोकगिन्ती मे उन की बढती इस रीति से लिखी गई है ।

सन ई० १८५१ मे उन की गिन्ती थी ...			९१०९२
,,	१८६१	,, ,,	... १३८७३१
,,	१८७१	,, ,,	... २२४२५८
,,	१८८१	,, ,,	.. ४१७३७२

सब प्रकार के मसीहियों की गिन्ती को जोडकर हिन्दुस्तान में २० लाख मसीह के चेले है और उन की गिन्ती शीघ्र बढ़ती जाती

है। न केवल यह वरन उन के यत्नों से हिन्द में ज्ञान बढ़ता जाता है यहां लों कि बहुत से हिन्दू अपना पूजापाठ नेमधर्म्म से अप्रसन्न हो उसे सुधारने का यत्न करते हैं और इस से इस देश में ब्रह्मो आदि समाज उत्पन्न हुए जैसा इस पुस्तक के प्रारंभ में वर्णित हुआ।

एक बड़े सोचने की बात यह है कि केवल वही शिष्टाचार जो मसीही धर्म्म से सबन्ध रखता है सो स्थिर बना रहता और बढ़ता जाता है। पूर्वकाल में मिस्र देश में अद्भुत प्रकार का शिष्टाचार था। वे और लोगों से अधिक ज्ञान और विद्या रखते थे परन्तु मिस्री सत्य धर्म्म को न जानते थे और उन का देश निकम्मा हो गया। ऐसे दिन थे जिन में बाबुल और निनवा और टूर और फारस देशों का ऐश्वर्य्य और महिमा दूर दूर देशों में सुनाया जाता था आज कोई नहीं पूछता कि ये कौन और कैसे हैं। यूनान शिष्टाचार में यहां लों बढ़ा कि आज लों ज्ञानी लोग उस का वृत्तान्त पढ़कर आश्चर्य्य करते हैं परन्तु वे लोग उस ऊंचाई से गिराये गये। रूम देश कैसरों के दिनों में अपने को जगत का स्वामी समझता था जिस का साम्हना कोई नहीं कर सकता था परन्तु जंगली सन्तानों ने उस अद्भुत राज्य को पावों तले रौंदा। वेद के दिनों में पण्डित लोग भारी २ बातों का बिचार करते थे और बहुत प्रकार के ज्ञान में बढ़ते जाते थे परन्तु पीछे उस ज्ञान पर अन्धकार छा गया। मुसलमान लोग अगले दिनों में ज्ञान और विद्या पर अधिक मन लगाते थे और अरबिस्तान और हिसानिया में उन का शिष्टाचार प्रसिद्ध हुआ परन्तु पीछे वह शिष्टाचार घटने लगा यहां लों कि अब जितने महम्मदी राज्य हैं अरबिस्तान तुर्किस्तान काबुल बलूचिस्तान फारस अफरीका तातारिस्तान सभों पर बड़ा अन्धकार छा गया है और कोई विद्यार्थी एक को किसी प्रकार की विद्या के प्राप्त करने के लिये न ढूंढ़ेगा। ऐसे दिन थे जिन में बौद्धमत न केवल हिन्द में स्थिर था परन्तु उस के उपदेशक दूर २ देशों में जाकर उस धर्म्म को प्रचारते थे बरन कितने देशों में वह मत प्रबल हुआ। अब सैकड़ों वर्ष से जितने देश इस मत को मानते थे जैसा नैपाल ब्रह्मा सियाम आदि शिष्टाचार पाने में रुक गये और जब लों मसीही धर्म्म उन में प्रबल न होवे तब लों उन की दुर्दशा रहेगी। तीन हजार वर्ष हुए चीन देश में शिष्टाचार भली भांति होता था पर सत्य धर्म्म का ज्ञान उस के साथ नहीं मिला था सो अब चीन बहुत देशों के पीछे रहा जाता है।

निदान संसार भर में जहां कहीं हम देखते उसी देश में जहां मसीही धर्म्म फैलता जाता है लोग आगे बढ़ते जाते हैं। मसीही धर्म्म सूर्य्य के समान है। जब सूर्य्य उदय होता तब आदमी अपने काम पर निकलता है। जब सूर्य्य डूब गया तब लोग सोचते हैं कि अब अंधियारा हुआ अब सो जाना चाहिये। वह नई २ कलें कि जिन से संसार का काम सहल किया जाता है और जिन से दूर २ स्थान मानो समीप किये जाते हैं जैसा रेलवे और अग्निबोट और तार और भाफ की कल और सिलाई की कल और फोटोग्राफ ये सब मसीही लोगों के बीच में चलाये गये। मूर्त्तिपूजकों में इतना ज्ञान नहीं है कि इतनी लाभदायक वस्तु बनावे। जो जड़ वस्तुन की पूजा करते हैं सो जड़बुद्धि हो जाते हैं।

अच्छा राज्य उसी को कहना चाहिये कि जिस मे प्रजा का बिश्राम और देश की भलाई सोची जाती है और जहा इस बात की चिन्ता किई जाती कि सब अच्छी बातो मे राजा प्रजा की बढती होवे । मसीही देशो को छोड़ ऐसे अच्छे राज्य जगत में कहां पाओगे । मसीही अध्यक्ष को छोड कौन अध्यक्ष प्रजा की भलाई की चिन्ता रात दिन किया करता है । और न केवल सांसारिक बातो में बरन आत्मिक बातो मे भी मसीही देशो मे उन्नति होती है। उस से परमेश्वर की आराधना ठीक किई जाती परमेश्वर का वचन आदर से सुना जाता है । उस में पाप काटने और मन शुद्ध करने और परलोक बनाने का अच्छा उपाय किया जाता क्योकि उस मे प्रेम अवतार का सन्देश मिलता जो जग के मुक्तिदाता होने के लिये आया है और जब कि कोई मनुष्य भीतर की और बाहर की बुराई से लड़ने चाहता है तो केवल इस धर्म्म से पूरी सहायता प्राप्त कर सकता है । सत्य है कि उन मे जो नाम के मसीही हैं बहुत से दुष्ट जन पाये जाते है परन्तु इस का कारण यह है कि वे नाममात्र इस धर्म्म को मानते है । जो वे मसीह के सत्य चेले होते तो भलाई के मार्ग में वे उस के पीछे हो लेते वह जो मसीह की शिक्षा बिरुद्ध चलता है सो मसीही नही है । ग्लाडस्टोन साहिब ने ठीक कहा है कि मैं इतिहास में देखता हू कि अब पंद्रह सौ बर्ष से मसीही देश सारी भलाई में और देशो की अगुवाई कर रहे और हर प्रकार के लाभ की बातों को काम में ला रहे हैं ।

हिन्द देश का आनेवाला धर्म्म ।

ज्ञानवान बताते है कि न केवल हिन्द देश के आर्य लोग बरन यूरप देशो के निवासी बहुधा उन आर्य लोगो के वंश है जो हजारो वर्ष बीते एसिया के बीच में रहते थे । जब हिन्द के आर्य्य वहा से निकलकर दक्षिण की ओर चलने लगे और जब यूरपवाले वहां से निकलकर पच्छिम की ओर बढने लगे, तो अपने स्वर्गीय पिता परमेश्वर को भूलने लगे । पहिले वे द्यौः अर्थात पितर कहके भजते थे पर दोनों पीछे को उस को बिसराके आन देवताओ को भजने लगे । हिन्दुओ में तेंतीस कोटि देवते प्रसिद्ध हुए और रूमी यूनानी आदि यूरप के सन्तानो मे देवपूजा बहुत बढ गई यहां लो कि उन के अथेनी नाम एक नगर में यह कहावत प्रचलित थी कि हमारे नगर में देवता पाना सहज और आदमी पाना कठिन है । फिर यूरपवालो के देवते ऐसे कामी क्रोधी लोभी थे जैसा हिन्दुस्तान मे पूजे जाते थे और वे आपस में झगडते मारते कुकर्म्म करते जैसा यहां के देवताओ ने भी किया ।

पहिला मसीही पादरी जो यूरप में भेजा गया सो एसिया से भेजा गया और उस का नाम पावल था । वह बस्ती २ मे उपदेश देता हुआ फिरता था । जब अथेनी नगर में पहुचा जो उन दिनों में ज्ञान और बिद्या में बहुत प्रसिद्ध था तब अपने पहिले उपदेश में उन से यह कहता था कि हे अथेनियो मै आप लोगो को सर्वथा बडे देवपूजक देखता हू क्योकि जब मै फिरते हुए आप लोगो की पूज्य बस्तुओ को देखता था तब एक ऐसी बेदी भी पाई जिस पर यह लिखा हुआ था कि

अनजाने ईश्वर को । सो जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसी की कथा मैं आप लोगों को सुनाता हूं । ईश्वर जिस ने जगत और सब कुछ जो उस में है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में वास नहीं करता है और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखने से मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है क्योंकि वह आप ही सभों को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है । उस ने एक ही लोहू से मनुष्यों के सब जातिगण सारी पृथिवी पर बसने को बनाये हैं और ठहराये हुए समयों को इस लिये बांधा है कि वे परमेश्वर को ढूंढें क्या जाने उसे टटोलके पावें और तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं है क्योंकि हम उसी से जीते और फिरते और होते हैं जैसा आप लोगों के यहां के कितने कवियों ने भी कहा है कि हम तो उस के वंश हैं । सो जो हम ईश्वर के वंश हैं तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के अर्थात् मनुष्य की कारीगरी और कल्पना की गढ़ी हुई वस्तुन के समान है हमें उचित नहीं है । इस लिये ईश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अभी सर्वत्र सब मनुष्यों को पश्चात्ताप करने की आज्ञा देता है क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने नियुक्त किया है धर्म्म से जगत का न्याय करेगा और उस ने उस मनुष्य को मृतकों में से उठाके सभों को निश्चय कराया है ।

फिर सोचने की बात यह है कि जैसा उन दिनों में ईश्वर ने यूरप को मसीहीधर्म्म फैलने के लिये आगे से तैयार किया वैसाही आजकल हिन्द देश को उस धर्म्म के फैलने के लिये तैयार करता है । उस समय रूमी राज्य उन सब देशों में जो रूमसागर के समीप थे स्थिर किया गया जिस का फल यह हुआ कि दूर २ देशों तक अच्छी सड़कें बनाई गईं और बटोहियों के लिये अच्छा इन्तिज़ाम किया गया सो मसीही उपदेशक सहज से इधर उधर यात्रा कर सकते और सत्य धर्म्म को प्रचार कर सकते थे फिर बहुत देशों में यूनानी भाषा फैलाई गई और उपदेशकों को नई २ भाषा सीखना न पड़ा ।

आजकल परमेश्वर सत्य धर्म्म के फैलने के लिये वैसी तैयारी हिन्ददेश में करता है । पूर्वकाल में जब राजा राजा से लड़ता था और जब डकैत और ठग लोग बटोहियों को लूट मार करते थे तब हिन्दुस्तान में भ्रमण करना जोखिम की बात थी । अब बटोही कुशल से पेशावर से लेके मन्द्राज तक जा सकता और कोई उसे दुःख नहीं दे सकता । वरन उस के विश्राम के लिये पक्की सड़क पुल रेलगाड़ी अग्निबोट आदि बहुत सी वस्तें अब मिलतीं जो पूर्वकाल में कहीं पाई न जाती थीं । फिर हिन्द के सब नगरों में अंगरेजी भाषा पढ़ाई जाती अंगरेजी पुस्तकें छापी जाती अंगरेजी विद्या सिखाई जाती है सो नाना प्रकार से उपदेशक का काम सहल किया जाता है । यह ईश्वर का काम है और वह अपने अर्थ को समय पर सिद्ध करेगा ।

जैसा यूरपनिवासी अपनी देवपूजा त्यागके ईश्वर की ओर फिर गये हैं वैसे हिन्दवासी भी कोई दिन करेंगे । जैसा जुपिटर और देआना और थार और ओसिरिस के मन्दिर सूनसान पड़े हैं और कोई उन का नाम नहीं लेता ऐसा ही राम और कृष्ण और दुर्गा

और शिव के मन्दिर खाली पड जायेंगे और कोई उन की पूजा न करेगा। हिन्दू भी समझ लेंगे कि देवी देवते स्वप्न समान है और कि ईश्वर मूर्त्तिपूजा से क्रोधित है। वे समझ लेंगे कि जाति का घमंड जिस से देश का बिगाड है एक झूठी मनमता है और सकल मनुष्य भाई है क्योंकि ईश्वर ने एक ही लोहू से सब सन्तानों को सृजा है सो काले और गोरे उत्तम जन और अधम जन एक ही माता पिता के वंश है।

एक ही ईश्वर सत्य है उस के सन्मुख कोई दूसरा नही है। एक ही धर्म्म सत्य है और सब कल्पित है। एक ही पापी लोगो का तारणहार है जिस पर बिश्वास करने से मुक्ति मिलती है। ईश्वर के धर्म्मी लोगों के लिये एक ही स्वर्गधाम है और सब जो उसे प्यार करते और उस की आज्ञाओ पर चलते सो सदा लो आनन्द करेंगे। हम सब पक्षपात को त्यागके उस मुक्तिदाता को ग्रहण करके ईश्वर के भक्त हो जाये।

प्रार्थना।

हे ईश्वर जिस ने एक ही लोहू से मनुष्यों के सब सन्तानों को पृथिवी पर बसने को बनाया है और जिस ने अपने प्रिय पुत्र प्रभु यीशु मसीह को प्रेम के सुसमाचार सब लोगों मे सुनाने को भेजा है यह आशीष दे कि हिन्द के सब निवासी तुझ को ढूढे और तुझ को दयालु और कृपाल पावे सब उस मुक्ति के उपाय को ग्रहण करे जिसे तू ने अनुग्रह करके किया है और हे स्वर्गीय पिता उस दिन को जल्दी भेज जिस का बचन तू ने दिया है जिस मे यीशु मुक्तिदाता के पुण्य प्रताप से धर्म्मात्मा का दान सकल संसार को दिया जायगा। हम मुक्तिदाता के नाम से मांगते है। आमीन।

हिन्द का वृत्तान्त

जैसा सन् १८८१ की लोकगिन्ती मे लिखा है ।

सर्कारी अमल्दारी की जमीन और निवासी की गिन्ती ।

नाम	वर्गमील	निवासी
अजमेर	२,७११	४,६०,७२२
आसाम	४६,३४१	४८,८१,४२६
बङ्गाल	१,५०,५८८	६,६६,९१,४५६
बेरार	१७,७११	२६,७२,६७३
बंबई	१,२४,१९२	१,६४,८९,२७४
ब्रह्मा (निचला भाग)	८७,२२०	३७,३६,७७१
सन्ट्रल प्राविन्सेस	८४,४४५	९८,३८,७९१
कुर्ग	१,५८३	१,७८,३०२
मन्दराज	१,३९,९००	३,०८,६८,५०४
उत्तर पच्छिम और अवध	१,०६,१११	४,४१,०७,८६९
पंजाब	१,०६,६३२	१,८८,५०,४३७
कुल और छोटे भागो को जोड़कर	८,६८,३१४	१९,८७,९०,८५३

बड़े देशी राज्यों की ज़मीन और निवासी की गिन्ती ।

नाम	वर्गमील	निवासी
बड़ोदा	८,५७०	२१,८५,००५
भोपाल	६,८७४	९,५४,९०१
भरतपुर	१,९७४	६,४५,५४०

नाम	वर्गमील	निवासी
काश्मीर	७९,७८४	१५,३७,०००
कोचीन	१,३६१	६,००,२७८
ग्वालियर	२९,०६७	३१,१५,८५७
हैदराबाद	८१,८०७	९८,४५,५९४
इन्दौर	८,४०२	१०,५४,२३७
जयपुर . .	१४,४६५	२५,३४,३४७
जोधपुर	३७,०००	१७,५०,४०३
कोल्हापुर	२,८१६	८,००,१८९
मैसूर	२४,७२३	४१,८६,१८८
उदयपुर . ..	१२,६७०	१४,९४,२२०
पटियाला	५,८८७	१४,६७,४३३
रीवा .. .	११,३२४	१५,१२,५९५
त्रावनकोर . . .	६,७३०	२४,०१,१५८
अलवर	३,०२४	६,८२,९२६
कुल और छोटे राज्यों को जोडकर	५,०९,७३०	५,५१,९१,७४२
कुल देशी और सर्कारी जोडकर	१३,७८,०४४	२५,३९,८२,५९५

हिन्द के विशेष धर्म्मों के माननेहारे।

हिन्दू .. .	१८,७९,३७,४३८	प्राचीनकालवाले	६४,२६,५११
मुसलमान ..	५,०१,२१,५९४	बौद्ध	३४,१८,८९५
मसीही ..	१८,६२,६२६	पारसी . .	८५,३९७
सिख ..	१८,५३,४२६	यहूदी . .	१२,००९
जैन .. .	१२,२१,८५५	और धर्म्मवाले	९,५२,०३९
		कुल .	२५,३८,९१,८२१

हिन्द देश की भाषाओं के बोलनेहारों की गिन्ती।

हिन्दी और उर्दू .	८,४३,७७,९४५	बर्मी . ..	२१,११,४६९
बंगाली .. .	३,८९,६५,४२८	सिन्धी . .	३७,१८,९६१
तेलगू . .	१,७०,००,०००	आसामी .	१३,६१,०५९
मरहठी .. .	१,७०,४४,३६४	कोल .	११,४०,४८९
मलाबी .. .	१,५७,५४,०५३	सन्ताली .	११,३०,५०९
तामिल . .	१,३०,६८,२०९	गोण्डी	१०,७९,५६५
गुजराती .. .	९६,२०,६९८	पश्तो .. .	९,१५,०१४
कनारी . .	८३,३७,०२७	केरिन .	५,५३,८४८
उड़िया . .	६१,१९,११२	तुलू ..	४,४६,०११
मलायलिम ..	४८,४८,४९०	कछारी . .	३,८८,६७६
		पहाड़ी	२,०२,९२०

विशेष वस्तुन का हिसाब जो सन १८८५ मे हिन्द मे लाई गईं।

नाम	रुपये	नाम	रुपये
रुई के बने हुए कपड़े	२१,१९,७४,१४०	कौशाम्बर के कपड़े	१,३४,२७,८९०
रुई का बना हुआ सूत	३,३६,०४,२००	कोयला . ..	१,२६,०२,१३०
चांदी .	९,११,००,२५०	ऊन की बनी हुई वस्तें .. .	१,२३,४३,४००
सोना .	४,७७,८१,७२०	नाना प्रकार के तेल	१,२२,९४,९६०
चीनी मिश्री आदि	२,१४,०८,३८०	मदिरा	१,२१,७९,२१०
तांबा	२,०७,००,१८०	भोजन . ..	१,१०,२३,२१०
लोहा .	२,०१,४९,०९०	हथियार	८४,४५,५२०
रेलवे की वस्तु .	१,५९,२६,२००	पुस्तकें और कागज	६६,३४,०१०
नाना प्रकार के कल	१,४८,४१,२४०		
		कुल (कितनी और वस्तुन को जोड़कर)	६०,०२,८१,५८०

विशेष वस्तुन का हिसाब जो सन १८८५ में हिन्द से परदेश में भेजी गई।

नाम	रुपये	नाम	रुपये
रुई	१३,२९,५१,२४०	रुई के कपड़े	२,०८,००,१८०
अफीम ..	१०,८८,२६,०६०	छालटी . ..	१,५४,३८,७००
बीज .. .	१०,७५,२८,५४०	काफी	१,२८,०९,७००
चावल और दाल ..	७,१९,२३,२६०	ऊन	९९,३८,६९०
गेहूं .. .	६,३१,६०,१८०	चीनी मीस्री आदि	७९,१३,६३०
चमड़े .. .	४,९३,६५,१००	लाख . ..	५९,९९,८२०
जूट .. .	४,६६,१३,६८०	लकड़ी	५८,७०,११०
चाय .. .	४,१३,७३,५१०	नाना प्रकार के तेल	५३,४०,४६०
नील	४,०६,८९,०००	कोश्राम्बर	५०,९३,२२०
रुई का सूत .. .	२,५०,६६,१००		
		कुल (कितनी और वस्तुन को जोड़कर)	८५,०८,०८,५८०

विशेष कामों के करनेहारों का हिसाब।

पुरुषों की गिन्ती	हिसाब	पुरुषों की गिन्ती	हिसाब
किसान ..	५,१०,८९,०२१	विलानेहारे	०,०८,६९९
इधर उधर के काम करनेहारे	४,८७,९४,१९५	राज ईंट बनानेहारे आदि	६,६०,२८६
मजूर	०२,४८,४९०	गाड़ीवान वा कहार	६,३५,४८२
रुई के काम करनेहारे	२६,०७,५०९	मोह्हिस और मोलवी	६,०१,१६४
लेन देन करनेहारे ..	८,८६,१४८	कुम्हार	५,६९,१२८
घर बनानेहारे .	८,०८,०१२	नौकर चाकर	२१,४९,६०९
गायों के अधिकारी	०,९१,३०९	वस्त्र बनानेहारे ..	२०,८२,१९१
गड़रिया आदि ..	०,५४,५१२	पसारी आदि .. .	१४,४५,९१६

पुरुषो की गिन्ती	हिसाब	पुरुषो की गिन्ती	हिसाब
बनिया महाजन ..	९,८३,५६९	मल्लाह .	३,२२,६८८
गोंद लाख बटोरनेहारे	४,८९,६१८	सेना . .	३,११,०७०
सोनार .	४,५९,१५७	चमार आदि .	२,६३,०५६
लोहार .	४,५४,५५५	गाने बजानेहारे	१,८०,६९६
बांस बेत के बनानेहारे	४,०३,३५७	शिक्षक .	१,६६,३५६

स्त्रियो की गिन्ती।

घर वालिया	८,६१,३५,६१७	बस्त्र के काम मे	७,३३,०८९
काश्तकारी करने वालिया	१,८८,६३,७२६	चाकरी के काम मे	६,५१,९६६
मजूरिन .	५२,४४,२०१	मास के काम मे	४,४९,२०५
रुई के काम में	२८,७७,८०६	मिट्टी पत्थर के काम में	३,५४,०२१
कुंजडिन ..	१७,१९,५६३	बास बेत के काम में	२,७७,३०५
गोंद लाह के काम मे	२,७३,१६९	बिधवा	२,१0,00,000
कुम्हारिन . .	२,५९,८३९		

हिन्द के बड़े नगरो के निवासी।

जैसे सन १८८१ ओर सन १८९१ की लोकगिन्ती मे पाये गये।

नाम	१८८१ मे	१८९१ मे
आगरा .	१,६0,२0३	१,६८,०१0
अहमदाबाद . .	१,२७,६२१	१,४५,९९0
इलाहाबाद	१,४८,५४७	१,०६,८00
अमृतसर . .	१,५१,८९६	१,३६,५00
बगलोर . .	१,५५,८५७	१,०९,६00
बरैली . .	१,१३,४१७	१,२१,८00

नाम	१८८१ में	१८९१ में
बडोदा	१,०१,८१८	१,१६,४६०
बनारस	१,९९,७००	२,२२,५२०
भागलपुर	६८,२३८	६८,७८०
बबई	७,७३,१९६	८,०४,४७०
कलकत्ता	७,६६,२८९	८,४०,१३०
कानपुर	१,५१,४४४	१,८२,३१०
ढाका	७९,०७६	८३,७६०
दिल्ली	१,७३,३९३	१,९३,५८०
गया	७६,४१५	७९,९८०
हबडा	१,०५,२०६	१,२९,८००
हैदराबाद	३,५४,९६२	३,१२,३९०
इन्दौर	७५,४०१	९२,१७०
जयपुर	१,४२,५७८	१,५८,८९०
जब्बलपुर	७५,७०५	८४,५६०
लाहौर	१,४९,३६९	१,७६,७२०
ग्वालियर	८८,०६६	८५,०४०
लखनऊ	२,६१,३०३	२,७३,०९०
मन्दराज	४,०५,८४८	४,४९,९५०
मादुरा	७३,८०७	८७,४२०
मेरठ	९९,५६५	१,१८,७६०
मुल्तान	६८,६७४	७४,५१०
नागपुर	९८,२९९	१,१७,९१०
पटना	१,७०,६५४	१,६७,५१०
पेशावर	७९,९८२	८३,९३०
पूना	१,२९,७५१	१,६०,४६०
रामपुर	७४,२५०	७३,५३०
रंगून	१,३४,१७६	१,८१,२१०
शाहजहांपुर	७४,८३०	७७,६९०
सूरत	१,०९,८४४	१,०८,०००
त्रिचिनापल्ली	८४,४४९	९६,७३०
अम्बाला	६७,४६३	७९,२७०